॥ श्रीः ॥

माधवनल कामकंदला

(नाटक)

शालिग्रामवैश्यकृत

दोहा ॥

करुणाहास्यशृँगाररस, वीणागानसँगीत ।
परमरम्यभाषाभणित, चातुरमाधुररीत ॥
छंद चौपई सोरठा, पद पद फूले कंज ।
रसिकवृंदसरसरसरस, पाठकमधुकरमंज॥

जिसको

(श्रीकृष्णदासात्मज)

गंगाविष्णु खेमराजने

निज 'श्रीवेंकटेश्वर' छापाखानेमें

छपाकर प्रसिद्धकरा

मुंबई.

मार्च सन् १८८९ ई०

भूमिका.

हेमित्रो! एक समयमें मैं पुष्पवाटिकामें मनोहर २ पुष्पोंकी शोभा देख चित्त को प्रसन्न कर रहाथा. कि देखो ईश्वरने अपनी इच्छानुकूल कैसे २ सुन्दर और सुगंधित कुसुम पृथ्वीतल पर उत्पन्न कियेहैं. जिनकी कांति देख २ चित्तको भ्रांति होतीहै. उसी अवसरमें मेरे एक मित्र इसी रमणीक स्थान-पर आन सुशोभित हुये वह मुझसे कहनेलगे "हेप्रियवर आपके मोरध्वज नाटककी रचनाको देख मुझे अति आनंद प्राप्त हुआ अब किसी ऐसे नवीन नाटककी रचनाकरो जिसमें करुणा शृङ्गार और वीर रस तीनों झलकते-हों" उनका वाक्य श्रवणकर मैंने प्रत्युत्तर दिया कि ऐसेही होगा. यह कह एक पुस्तक उनको श्रवण कराई जो तीनों रस करकै व्याप्तथी बस सुनते ही फडक गये और कहा "यह तीनों रसकी अद्वितीय है इसकाही नाटक रचो" मित्र तौ यह कह चले गये और मैंनेभी शोचा कि चतुर मासके दिन हैं विशेष कार्य्य भी नहीं यह मनमें ठान [**माधवानलकामकंदलाना-टक**] का आरम्भकर दिया और कुछ समय उपरान्त उसको सम्पूर्ण किया.

• प्रियपाठक गण इसमें [**जयन्ती**] अप्सरा बहु [**नल**] का बिला-पकलाप और [**बिक्रम**] के कटककी शूरता बहु दृढता और राजा [**कामसेन**] की सभामें शृङ्गार और [**कामकंदला**] की चतुराई देखने योग्यहै.

मुझको विश्वास है कि पाठकगण अवश्य मेरे श्रमको सुफलकर मुझे चिरबाधित करैंगे.

यह पुस्तक [**गंगाविष्णु,खेमराज**] वैश्यकुलभूषणको समर्पितहै जि-न्होंने इसनाटकको अपने स्वकीय [**वेंकटेश्वर यंत्रालयमें**] छापकर प्रसिद्ध किया.

जहां कहीं अशुद्धि रहगई होगी मुझको विश्वास है कि पाठक गण क्ष-माकरैंगे.

आपकाशुभचिन्तक
शालिग्राम वैश्य
महल्ला दीनदारपुरा
मुरादाबाद

नाटकपात्र पुरुष अरु स्त्री

नान्दी	नान्दी	नाटककेआरंभमेंशुभवचनकहनेवाला
सूत्र०	सूत्रधार	नाटकका अधिष्ठाता
नट	नट	नाटक रचनेवाला
नटी०	नटी	नाटकपतिकी स्त्री
गोवि०	गोविन्दचन्द्र	पुष्पावतीनगरीकाराजा
शं०पु०	शंकरदास	राजागोविन्दचन्द्रकापुरोहित
माधो०	माधवनल	नायक शंकरदासकापुत्र
रा०का०	कामसैन	कामावतीनगरीकाराजा
मंत्री	मंत्री	राजाकाप्रधान
दूत	दूत	राजाकाद्वारपाल
काम०	कामकन्दला	नायका कामकौमुदीकी पुत्री
म०मो०	मदनमोहनी	कामकन्दलाकी सहेली
म०मं०	मनोजमंजरी	दूसरीसहेली
कु०कु०	कुसुमकुमारी	तीसरी सहेली
कुं०क०	कुन्दकली	चौथी सहेली
प्रे०प०	प्रेमपताका	पांचवीं सहेली
स०स०	सबसखी	कामकन्दलाकीसबसखीं.
शुक	शुक	मैनावनकापक्षीमनोहरबोलीबोलनेवाला
शारि०	शारिका	मैनासुन्दरपक्षीबोलनेमेंपरमचतुर
रा०वि०	वीरविक्रमादित्य	उज्जैननगरकाराजा
माली	माली	राजाकेउपवनकासींचनेवाला
पुजा०	पुजारी	शिवजीकापूजनेवाला
बसी०	बसीठ	सुधिपहुंचानेवाला दूत
भा०ज्ञा०	भानमती ज्ञानमती	राजाविक्रमकीदूतिका
मंत्री	मंत्री	राजाविक्रमादित्यकाप्रधान
शू०वी	शूरवीर	वज्रनाभादिराजाकेसावंत
सै०प०	सैनापति	राजाविक्रमकेसैनापति
दूत	श्रीपति	राजाविक्रमकादूत
विदू०	विदूषक	राजाविक्रमकाभाट

कवीं०	कवींद्र	राजाविक्रमकाकडखेल
ग्राम०	ग्रामवासी	ग्रांवोंकेरहनेवालेमनुष्य
वैद्य	वैद्य	राजाविक्रमनेवैद्यकावेषकिया
वैता०	वैतालअगियाकोयला. राजाविक्रमकेदोनोंवीर	
स०शू०	सबशूर	राजाविक्रमकेयोद्धा
मद०दि	मदनादित्य	राजाकामसैनकापुत्र
रण०	रणधीरसिंह	राजाकामसैनकापौत्र
शू०वी०	दन्तवज्रादि	राजाकामसैनकेमल्ल
सै०प०	सैनापति	राजाकामसैनकेसैनापति
देवी	देवी	जगत्मातादुर्गाभवानी
शिव०	शिवजीमहाराज	महादेव कैलाशेश्वर
पार०	पार्वती	शिवजीकीभार्या
वीर०	वीरभद्र	महादेवजीका गण

श्रीगणेशायनमः

माधवनल कामकंदला नाटक

सोरठा

जयजयकृपानिधानज्ञानखानमंगलकरण॥
देहुमोहिंवरदानमाधवनलनाटकरचौं॥१॥

कवित्त

सिद्धिकेसदनगजवदनविशालतनदरशाकेकुरतहीहरतहैंकलेशाको अरुणपरागकोललाटमेंतिलकसोहैबुद्धिकेनिधानरूपतेजज्योंदिनेशाको मंगलकरणभवहरणशारणगयेउदितमभावजाकोविदितसुरेशाको जेतेशुभकाजतामेंपूजियेप्रथमताहिऐसोजगवंदनसुनंदनमहेशाको

सूत्रधार आताहै

सूत्रधार०- हे भ्राता देखतौ कैसे कैसे यशस्वी तेजस्वी धर्मार्थीपरमार्थी भाग्यवान गुणनिधान दाता पुरुष आज समाज में विद्यमानहैं जो मुँहमाँगे दान केदेनहारे हरिश्चंद्र विक्रम करणके समान हैं इन सज्जनोको कोई नवीन नाटक रसीलारंगीला विरह रसभरा अत्यंत चटकीला दिखाना चाहिये जो उस्से इनके चित्तको प्रमोद होगा तौ हम लोगोको ऐसा पारतोषिक प्राप्ति होगा किजिसको हमारीसात शाख बैठी खाया करें.

नट०—आकर धन्य धन्य भाई तेरी बुद्धिको ऐसे दाता पुरुष कहां मिलैंगे परंतु यह तौ कहो कौनसा नाटक ऐसा उक्त गुणोका विचारा है वर्णन तौ सबकुछ किया परंतु नाम अबतक न लिया वियोगके चाहनेसेभी कोई नवीन अभिनयका नाम समझ सक्ता है.

सूत्रधार—आज इस सज्जन समाजमें लाला शालिग्राम कृत माधवनल कामकंदला नाटक करनेका विचार है क्योंकि आजकल वियोगही सबके मनको आनंददायक है अरु नवीन रचनाके सुझेको सब सज्जनोंके चित्तको अवश्य परमोत्साह होता है.

नट०—अहाहाहा! यह नाटक तौ ऐसा अद्भुत रचूंगा कि एकबार तौ सबके नेत्रोंसे जलधारा नीलधाराकी भांति बहा देनी अरु सब सभा चित्रपटी सम बना देनी जो सदा स्वप्नमेंभी नाटकही नाटक पुकारा करैं जो आज्ञा हो तो अभिनयारंभ किया जाय

सूत्रधार—यह चटपटी वार्ता भला तुम अकेलेही नटीके यह नाटक कैसे रच सक्ते हो तुमतौ माधवनल बनगये परंतु कामकंदला किसे बनाओगे भ्रातजो मेरा कहा मानो तौ प्रथम अपनी नटीसे सन्मति करो विना स्त्रीके कोई काम सिद्ध नहीं हो सक्ता.

नट०—अहाहाहा यह बात तौ आपने मेरे अंतरकी विचारकी कही क्या आप ज्योतिष विद्याभी जानते हैं मेरे लोचन चकोर प्यारीका चंद्रानन देखनेको अत्यंत भटक रहे थे सत्य है एक हाथसे ताली नहीं बजती एक पगसे कोई नहीं चल सक्ता इसी भांति सुनयनीके विना संयोग संसारका

कोई कार्य सिद्ध नहीं होसक्ता नेपथ्यकी ओर निहारकर हे प्राणप्यारी
हे प्राणप्यारी शीघ्रसिधारो यह समय विलंब करनेका नहीहै.

नटी०– हे प्राणवल्लभ दासी उपस्थित है. क्या आज्ञा है.

नट०– आज इस राज समाजमें माधवनल कामकंदला नाटक करनेका विचार है इसकारण तुम अपनी पूर्ण प्रीतिकी रीति हृदयमें धारण कर साक्षात कामकन्दला बन सबका मन ऐसा मोहितकर जो सबके नेत्रोंमें चित्रकी नाई आठोपहर सन्मुख दिखाई दियेकरै.

नटी०– हे प्राणनाथ दया कीजे कामकन्दलाके नामसे मेरा हृदय कांपता है उसके वियोगको देख वियोगभी योग साध शिरमें छारडालता फिरताहै उसकी विरह विथा सुनसुन शून्य हुई जातीहूं अरु जब मैं साक्षात् हीबनगई तो फिर क्या ठिकाना है यह विरहानल नजानिये किधरको चलपडे आप कृपा करकै इसनाटकको नौ शांतिही रखिये. कल्ह नाहीं मुझे आपका दर्शन नहींहुवा चारही पहरमें मेराचित्त ऐसा व्याकुल हो गयाकि हृदय अबतक धकधक करता है बरसोंका वियोग अरु मदनका रोग किस्से झिलसकैगा अरुवैसे मैं आपकी दासीहूं किसी भांति आपकी आज्ञा उल्लंघननहीं करसक्ती परंतु यहदुःखमुझसे नदेखा जायगा हेकंत यह बसंत ऋतु अरु यह विरहानलका प्रकाश.

कवित्त

जबतेहमारे प्राणप्यारे हैं पधारेउत धीर नहीं धारेजात पीराहियेमेंजगैं शीतलशरीर भयो नीरकालिंद्रीकेतीर बलबीरबिननीर दृगतेडगें केशरीसमान भयो विरह पैरै हैभानयोगज्ञानयेमपन्थपृथतवहीभगे चोलीकोकि-

लानकीकैरहैंशूलहूलहमैं प्यारेये कदंबनके फूलगोलीसे
लगें ॥१॥

हे प्रीतम इससमय कुछरंगही और दृष्ट आताहै.

कवित्त

औरे भाँति कुंजनमेंगुंजरत भौंर भीर औरडौरझौ
रनमें बौरनकेव्वैगये कहैपदमाकरसो औरेभाँ
तिगलियानछलियाछबीलेछलऔरछबिछ्वैगये
औरभाँतिविहंगसमाजमें अवाजहोतऐसा ऋतु
राजकेन आजदिनद्वैगये औरैरस औरेरीति औ
रैराग औरे रंग औरे तन औरैमन औरे वन ह्वैगये ॥२॥

नट०— हे पंकज लोचनी! क्यों वृथा भयकरके अभिनयका समय संकोच करे देती है इससोचको त्याग अनुरागसहित कामकंदलाका वेष धारण कर विना वियोगके संयोगमें रस नहीं प्राप्तिहोता जैसे ऊषाके वियोगमें चित्ररेखाने संयोग कराय उसका मनोरथ पूर्ण किया ऐसेही जबमाधवनलवीर विक्रमादित्यसे मिलगया फिर कामकन्दलाके मनोरथ सिद्ध होनेमें क्या सन्देह है.

सूत्रधार०— देखो इस कुसुमोद्यानसे कैसी कोकिलाकी धुनि मनभावनी सुहावनी सुनाई आती है.

मोर कैसा मनोहर शोरकर रहे हैं.

पपीहा पियापिया अलगही पुकाररहा है.

दादुरका दुरदुरशब्द सुन हृदय मेंदरारसी होती है.

झींगरझीं झींझींझीं अपनीही धुनिअलापरहे हैं.

कोयलकी कूक कलेजेके टूकटूककरे डालती है.

नट०— इस शब्दमें नूपुर किंकिणादिझांझनकी झनकार भी मि

लरही है इस्से थेकिसी कोकिल कण्ठी कीरसीली मधुरवा-
णी ज्ञात होती है अरु जिसको आपने मोर समझा है वह
बांसुरी जान पडती है अरु जिसको आप पपीहा कहते हैं
वह मंजीरोंका शब्द है अरु जिसको आप झींगर की झह
रान जानते हैं वह सारंगी है अरु जिसको आप दादुर वर्ण
न करते हैं वह मृदंगकी ताल है अरु जिसको आप को
यल वतलाते हैं वह वीणा मालूम होता है ऐसा जान प-
डता है कियह कामकन्दला है सखियों समेत पुष्पोद्यान
से नेपथ्यकी ओर होकर गाती बजाती चली आती है.
हे प्राणपति मैंतो कामकन्दलाका वेष धारण कर सखि
यों सहित आगई अरु आप अबतक बातेंही बनारहे हैं
झटपट माधवनल बन किसीको राजा किसीको मंत्री ब-
नाय नाटकरचायदो विलंब क्यों करते हो.

सूत्रधार०- तुम अपना अपना वेष धारणकरो अरुहम अप-
ने ताल तम्बूरसे निश्चिंत होय सब जाते हैं.

दोहा

कवि०- सुंदर शुण्ड स्वरूप शुभ शमन सकल सन्देह
शिवशक्ति सुरशेष शशि सेवत सहित सनेह

कवित्त

आनँदके सदन एकरदन मदन कदन तनय मोहे
लेत मनको छबि गजबदन विशालकी सेंदुरको
तिलक भाललालल लाल नेत्रसोहैं जोहैं सोमोहैं क
ण्ठ शोभा मणिमालकी दीननके सहायक सुर
नायक सबलायक हो पूरण वरदायक पीरमेट

न कलिकालकी माधवनल नाटककेरचिवे को शालिग्रामबारवार विनयकरतगिरिजा केलालकी ॥१॥

प्रथम अंक

(स्थान कामावती नगरी राजाकामसैनका नृत्यभवन)

राजाकी सभामें नृत्यहोरहाहे कामकन्दला नाचरही है.

द्वार०- महाराज कुछ निवेदन है.

राजा०-कहो.

द्वार०- महाराज एक परदेशी ब्राह्मण द्वारपर आयाहे.

राजा०-सो क्या कहताहे.

द्वार०- वह नृत्यतालका विचार करकै आपकी सब सभाको मूर्ख बनाता है.

राजा०- क्यों.

द्वार०- यह कहताहै कि बारह मृदंगियोंमें एक मृदंगीके द-
हने हाथका अंगूठा मोमका है.

दोहा

सातचारके मध्यहै उठिकिनदेखहु जाय॥
तालनपूरीपरतहै मातरकहतलजाय॥१॥
कवितरागसुरतालसब शुद्ध अशुद्ध जु होय॥
सूरखमनसमतासकल विरलाबूझे कोय॥२॥

राजा०- मृदंगीको हमारे पास लाओ.

द्वार०- (जो आज्ञा) सातचारके बीचवाले मृदंगीको राजा
के सन्मुख लाताहै अरु राजा उस्का अंगूठा देखता
है अरु सबसभा चकित हो जातीहै.

राजा०- अच्छा उस ब्राह्मणको अभी हमारे सन्मुख लाओ.

द्वार०- (जो आज्ञा) (बाहरजाकर) महाराज पधारिये आ
पको राजाने बुलाया है (ब्राह्मण सभामें जाताहै)

राजा०- (ब्राह्मणको देखकर) प्रणाम करताहूं.

माधो०- आशीर्वाद.

राजा०- महाराज आसनपर विराजो (माधवनल बैठताहै)

माधो०- बैठताहै अरु मनमें यह कहता है कि हे परमेश्वर
यह कैसा प्रकाश है.

कवित्त

खडीखण्डतीसरे रंगीली रंगमहलोंमें जाकी
छबिदेखवास छबिहूको बंदहै कालिदास
बीचनिदरीचिनिकै झलकनि छबिकीमरी
चिनिकीझलक नमंदहै चिनदेखिभगमें

हा धौंयहघरमेंहैरगमगेजगमगेजोतिनकीकं
दहै जीगानिकीज्वालहैकिलालनकीमालहैकि
चामीकरचपलाकिरविहैकिचंदहै ॥१॥

सचतौ यहहैकि यह शचीहै नरंभाहै रतिहै नअचंभाहै
परंतु रतिपतिका फंदहै इसफंदसे मेरे मनका निकलना
महा कठिणहै.

राजा०– आप बडे योग्य अरु गुणवानहौ इसकारण यह स्व
र्णका रत्नजटित मुक्तमाल स्वर्णमयी कुंडल सुंदर सुंदर
वस्त्र अरु यह अमूल्य रत्न लीजिये (देताहै)

माधो०– (स्वस्ति पढ लेताहै)

काम०– (आपहीआप) अहाहा यह पुरुष कौन है इंद्रहैया
चंद्रहै कुबेरहै या किन्नरहै देवहै या यक्षहै अरु वीणाको
देखकर नारदका संदेह होता है या यह रतिपतिहै रतिके
वियोगमें योगी बना फिरताहै परंतु यहतौ कामसेभी अ
धिक गुणवान जानपडताहै जो यहगुणी न होता तो यहां
तक कौन इसे आने देता सत्यहै ऊंचनीच कैसाही पुरुष
होय परंतु गुणी होय तौ सबठौर सन्मान पाताहै जोगु
णी पुरुष परदेशमें जाताहै तौ अत्यंत महँगे मूल्य वि
काता है(यथाहीरा पन्नामणिमुक्ता) जैसे पुत्रको माता
पालतीहै तैसे गुणीको गुण पालता है इससभामें आ
ज यह कोई वडाही गुणवान पुरुष आयाहै नहीं तौ इस
निर्गुणी सभामें गुणअवगुण कौन जान सक्ताहै आज
फिर नवीन शृंगारकर इसपुरुषके सन्मुख अपना गुण
प्रगट करूंगी (फिर शृंगार करती है)

माधो०– (कामकंदलाको देखकर आपहीआप) धन्यहै वि

धाताके करतव्यको जिसने संसारमें ऐसीऐसी सुंदर शो भायमान सोहनी मनमोहनी स्त्री रचीहैं कि जिसके देखतेही मन हाथसे निकल गया अब यह फिरशृंगार करके क्या मेरे प्राणलेगी यह स्त्री नहीं है कोई छलावाहै इसकी मांग चंदन भरी ऐसी शोभा देतीहै जैसे काले सर्पके मुखमें दुग्धकीधार मांगके मोती कैसे शोभायमान सुहावने दृष्टि आतेहैं मानो यमुनामें तारोंकी जोति.

दोहा

मांग अग्रमाणिकदिपै अरु मुक्ता गुणसंग
क्षणक्षण जोतिधरैं बहुत मणिप्रगटै सुभुजंग

करणफूल ऐसे शोभा पाते हैं मानो चंद्रमाकी कोरोंमें तारागण कुमकुमका तिलक सँभालते में ऐसी शोभा मालूम होती है मानो मनोजबाण तानरहा है इसके चंचल नयन हृदयको वेधे डालते हैं वेसरके मोती ऐसे चमकरहे हैं जैसे शुधाकरके निकट रोहिणी बिम्बाफलसे अधर कीरकेसी नासिका दामिनिद्युति साहास्य बांसुरीके शब्दसे वचन मनको मोहे लेतेहैं कविलोग कहतेहैं कि कोकिलाकी ध्वनि नीकी होतीहै परंतु इसकी ध्वनि सुनि सब ध्वनि फीकी लगती हैं.

दोहा

प्राण धरण चिंता हरण अबलाबचन अमोल
मुनिजनमन नहिं थिररहैं श्रवणसुनत यह बोल

हरित पीतमणियोंकी माला हृदयपर शोभितहै कुचकंचनयातो सांचेमें ढालेहैं या गंगाकिनारे ईश्वरके द्वारे हैं मोतियोंकी मालहियेमें विराजमानहै दोनों कुचोंके बीचमें ऐ

सी शोभा देरहीहै मानो दोसुमेरोके वीचमें सुरसरीकी धार लहरैं लेरही है उसी सरिताकी धारके इधरउधर दो चक्रवाक रात्रिके समय बैठे हैं अथवा कनक कीलतामें दोश्रीफल लगेहैं.

दोहा

अति कठोर कुच कलशसम मुखश्यामता सुभाय। मनो भस्म करि मयनकी बैठेईशच ढाय॥

अति सुंदर दोनों भुजामानो कंचन की मंजरी हैं कमलनाल उनकी समता कब करसक्ते हैं देखनेमेंतो कंचन कैसी चमक दमक है परंतु स्पर्शसे माखन समतुल्यहै जैसे कंचनके वृक्षमें दोशाखा निकलीहैं उसमें नख कैसे छवि देरहेहैं जैसे कंचनकी वेलिमें विद्रुम जटित हैं.

दोहा

नहिंनागिनि नाहिंनालिनिहै नहिंरोमावलिरेख वेणीकी झाईझलक निर्मल गातविशेख

अत्यंत कोमल उदरपर रोमावलि ऐसी शोभायमानहै मानो कंचनके खंभपर मृगमदकीरेखा खिंचरहीहैं जंघा केलेके खंभके सदृश चिकनाई लिये परम सुंदर हैं इस सुंदरीको विधाताने वडे सावकाशमें रचा होगा इसकी चंचलताको देख चित्त चकित हुआ जाताहै परंतु इसकी चतुराईका चमत्कार देखना अवश्य चाहिये.

राजा॰- महाराज चुप किसलिये हो.

माधो॰- कौतुक देखते हैं.

राजा०- काहेका.

माधो०- सभाका.

राजा०- महाराज अब अभिनय देखियेकि ऐसा आपने आजताईं कभी देखा तौ क्या परंतु सुनाभी न होगा.

माधो०- हां पृथ्वीनाथ सत्यहै (यह कहकर मनमें हँसा) (आपही आप) धन्यहै परमेश्वर तेरी महिमाको इन मूर्खोंको यह अभिमान.

(कामकंदला माधवनलकी ओरदेखकर गातीहै)

राग नट

कहै कोचंद्र वदनकी शोभा
जाको देखत नगर नारिकोसहजहिंतेमनलोभा
मनहुँचंद्रआकाशछांडिकेभूमिलखनको आयो
कै धौंकामबामकेकारणअपनोरूपाछिपायो
भौंहकमानकटाक्षबाणसेअलक भ्रमर घुँघरारे.
देखतखनबेधतहैंमनकोवचनहिंसकनबिचारे

विदू०- धर्मरक्षक यह क्या रागहै.

राजा०- नट.

विदू०- दीनदयाल नटतौ नवदशाघट शिरपरधर झटपट बाँसपर चढजाताहै क्या यहभी अबबाँसपर चढैगी अरु नटसहस्रों कला करता है इसने तौ एककलाभी नहींकी यह कैसा नट उछलहै न कूद है कुश्तीहै न कलाहै इसमें नटका एक लक्षणभी नहीं पाया जाता.

राजा०- नहीं नहीं आप क्या समझे यह नटरागका नामहै

विदू०- तौ कुछ चिंता नहीं अब हमारा सब संदेह जातारहा परंतु रागका नाम नट किसी नटखटने रक्खाहै अच्छा

उसकी मूर्खता उस्के संग हमको क्या प्रयोजन परंतु एक संदेह मेरा और दूर करदीजे.

राजा०- क्या.

विदू०- महाराज आज यह क्या कारण है जो कामकंदला ऐसा सुंदर नाचनाच रहीहै पहिले कभीभी ऐसा नाच नहीं नाची परंतु इसका नाचदेख मेराभी जी चाहता है कि इस पातरके संगमेंभी नाचूं.

राजा०- तुम क्या जानो.

विदू०- आपको सुधि नहीं हमने श्रीकृष्णके साथ बहुत नाच नाचा है.

राजा०- धिक् मूर्ख तू श्रीकृष्णके समयमें कहांथा चल झूंठ न बक.

विदू०- महाराज मैंतो पिछले जन्मकी बातें करताहूं आपने झूंठ कैसे जाना मैं लाखों वर्ष तक घाघरा पहरपहर कर श्रीयदुनाथकेसाथ नाचा अरु छाकखाई हमाराही नाम विशाखा अरु श्रीदामाथा.

राजा०- यह तो कहिये तुम स्त्री हो या पुरुष.

विदू०- दयासागर मैंतो स्त्रीको जानूं न पुरुषको मुझको तो मेरी माता नपुंसक बताया करैथी.

राजा०- (हँसिकर) अब बहुत गप्पाष्टक होचुका अब नृत्य अवलोकन करो.

विदू०- देखो महाराज कामकंदलाके गुण अरु कर्तव्य दो जलके कुंभ भरे शिरपर धरे दोनों हाथोंमें चक्रलिये अंगुलियोंसे फिराती है अरु रागभी गातीहै परंतु अभिमानमें भुनी जातीहै सोमहाराज यह कोई अद्भुत बात नहीं

यह बात तो सब पनिहारी जानतीहैं जो घरघरका पानी भरती हैं मैंने अपने नेत्रोंसे देखाहै कि तीनतीन घडे पानीके भरे शिरपर धरे अरु दो दोनोंकाखों में अरुएक हाथमें फूल समठिलियालिये अरु दूसरे हाथमें रस्सी चक्र सम घुमाती अस्सी अस्सी स्त्रियोंकी धांगकी धांगवे खटकपरस्पर बातैंकरती यह रागिनी गाती चली जाती थीं.

रागिनी

हिलमिलपनियाँ चलोरीननदिया हिलमिल पनियाँ।शिरपर घडाघडे परझारी शीतलजल लेचलो अमनियाँ। किसके मारग कारण तानी नैनशैनकीतीरकमनियां

राजा०-तुमतौ सतयुगके मनुष्यहो तुम्हारी सबबातेंटीक हैं

(कामकंदला नाचतेहुए माधवनलकी ओर देखकर गाती है अरु उससमय एक भँवरस्तनोंपर आनकर बैठताहै).

राग काफी

मेरोचितचकोर भरमायो।धरनपर चंदकहाँते आयो॥ कैकहूँरूसरोहिणीदुखकीताकारणअकुलायो।पीप्यारीकेडंडनकोहितदुर्बलवेषबनायो॥ कैविरहनि कोतापदेखकर दयाचितमेंलायो जिन्हेंजरायोकामनिरदई तिनकोआनजिवायो गगनहुमेंशशिदेतदिखाई धरनिहुमांहिंसुहायो कैकहुंचंद्रदूसरोप्रगटोकैममगर्व घटायो॥इत हूशशिउतहूशशिदरशन भेदपरतनहिंपायो।

इत उतनकत थकित भई अखियाँ सबदुख सुख
विसरायो यहा चितवन यह रूप रसीलो आज मेरे
मन भायो दोऊ ओर चंद्रसे दरसैं मोहि महा भ्रम
छायो

(आपही आप) यह भमर मेरे स्तनोंको कमल जान
कर भेदन करताहै जो हाथसे छूती हूं तो चक्र हाथसे गि
रताहै जो फूंकसे उडाती हूं तो कुंभ कुंभ राशिसे कन्या रा-
शिपर जाता है अरु जो बैठ रहता है तो कुचको डंक मार
मार कर विदीर्ण करे देताहै चित्त अत्यंत व्याकुल होता है क्या
करूं क्या न करूं अब जीमें आताहै यह काम करूं कि स
ब द्वारोंकी वायु रोक कर स्तनोंके द्वारको पवन निकालूं
(तो नाट्य उसी भाँति चला जाता है. अरु भँवर स्तन की
समीर लगनेसे उड जाता है.

माधो०- (इस कलाको निहार चकित हो राजाकी ओर देखक
र आपही आप) राजा तौ मूर्ख ठहरा यह गुण अवगुण
को क्या जानै.

दोहा

कहा सगुण समझे बिना कहा समझ बिन हेत
कहा हेत आलम सुकवि रीझन सर्वस देत

दोनों कुंडल उतार कर इसको दूं या मणिमाल वस्त्र उ
तार दूं क्या दूं जो प्राण भी दूं तो इसके गुणके आगे कुछ
वस्तु नहीं.

(यह विचार सब वस्त्रालंकार जो राजाने दिये थे का-
म कंदला को उतार दिये.)

मदन०- सखी देखो हमारी प्यारी तो आज आपे में नहीं है इ

सके नेत्र बारबार इसपरदेशी हीपर पडते हैं यह नेत्र ऐ सेढीठ हैं लज्जित नहीं होते आपही बसीठ बन मन पराये हाथ में दे देते हैं फिर आपही रोरो कर आँसुवोंकी नदी बहाते हैं.

दोहा

पहिले मन परबस करैं फिर रोवैं दिनरैन
वैरी आग लगायके दौरैं पानी लैन ॥

मनोज०- सखी यह परदेशी भी टकटकी बांधे इसीकी ओर देख रहा है नयन की शायन दे दे कर मन पलटते हैं पहिले तो नेत्र रूपरसपान करते हैं पीछे वियोगी बनाबन बन फिराते हैं यह नेत्र बडे लोभी हैं.

दोहा

समझाये समझैं नहीं पलक देत नहिं चैन
नीर भरे प्यासे रहैं निपट अनोखे नैन १
अनियारे तीखे कुटिल अंकुश से दृगवाण
लागत सीधे आयके पीछे खैंचें प्राण २

हमारी सखीने आजतक किसी पुरुषको दृष्टि भरकर नहीं देखा सो आज देखो वहइसे यहउसे देखदेखके सी मग्न होरहीहै जैसे चंद्रमाको देख चकोर को आनंद होता है.

मदन०- अरी कहे सुनेमें क्या होताहै दोनोंकामन पराये हाथ में है नेत्रोंके मार्गहोकर इसकामन उसके हृदयमें अरु उसकामन इसके हृदयमें प्रवेश होगया नयनसे नयनके मिलनेही मन व्याकुल तन थकित हो जाताहै मानो आज कुसुमायुधने धनुष बान तानदोनोंको बसमें

करलिया.

विदू०- महाराज इसपरदेशीने तौ सर्व सर्वस्व उतारकर पात्र को देदिया हमभी अपना जामा पगडी दुपट्टा दिये देतेहैं इनके अधिक और हमारे पास क्याहै (पगडी दुपट्टा उतारकर देताहै अरुसबसभा हँसतीहै)

राजा०- तुम यह क्या करते हो.

विदू०- कृपासिंधु वेश्याको दानदेताहूं मैं इसपरदेशीसे किसबातमें कमहूं हमने किसी समय हरिश्चंद अरु करण कोनीचादिखायाथा इसबिचारे ब्राह्मणकी क्या सामर्थहै जोहमारी समताकरसके परंतु आजकल वहसमय नरहा फिरभी मराहाथी विठौरे बराबर होताहै क्या इस भिखारीसेभी हमगये.

राजा०- नहीं विदूषकजीनही यह ब्राह्मण आपकीतुल्यता नहीं करसक्ता कहां आप कहां यहदीन ब्राह्मण तुम अपनी ओर देखो परमेश्वरने आपको सब लायक बनायाहै.

विदू०- आपही विचार देखो.

राजा०- (क्रोधकरके) हे ब्राह्मण मैंने दोकोटिका दान तुझको दियासो तैंने मणिरत्न गणिकाको उतार दिये अंतको फिर भिखारीका भिखारी तुझको लज्जा नहीं आती अरे भिक्षुक मेरे आगे दानीबनताहै कौनसीकलापर रीझकर तैंने सर्वस्व वेश्याको उतार दिया.

माधो०- हे राजन् जो मनुष्य समयपर नहीं रीझते सोजीवतही मृत हैं देखिये मृगपशुसदावनमें बसतेहैं जब व्याध बिपिनमें जाकर बीणा बजाताहै तबहरिणहरिणीसे

कहताहै रीझकर पारधीको क्या दीजै हमारेपास देने को क्या है कुरंगिनी बोली प्राणसे अधिक और क्या वस्तुहै सो प्राणदान करदीजै जबबधिकनै धनुष हाथ में लिया मृगने हिया आगे करदिया.

दोहा

धनकुरंगतेनादसुनि रीझनराखतप्राण
धैनकरणबलिविक्रम दियो न ऐसोदान

सोरठा

तूकहाजानैभंद दानमान सन्मानकरि
दियोसर्वसहरिश्चंद्र नीरनीचद्वारे भयौ

जो कोई कोटिदान देयतौभी मृगके दानके समान नहीं तुच्छहीदानका तुझे ऐसा अभिमानहै.

कवित्त

दानी भयेराजाबलिअंगहू न पायदयोदानी
भयेमोरध्वजआराशीशरखायोहै दानीभ
ये करणधरणदानसेदीछायसकलदानीभ
येदशरथजिनप्राणको गमायोहै दानीभये
राजा नृगगायें अनगिन्तदई दानी भयो विक्र
मजगजाकोयश छायोहै ऐरेअभिमानी अ-
ज्ञानी तुहूँदानी बन्योदेकै नेकदान नाहिंआ
पेमें समायोहै .॥१॥

तुमसे तो पशुही भले हैं.

राजा०- अरे उदासी ऐसी कौनसी अद्भुत कला तैंने देखी जो रीझकर सर्वस्व पातरको उतार दिया हमकोभी तो ब-ताजो हमारे मनको धीर्य हो.

माधो०- हे राजन् तुम्हारी सारी सभातौ मूर्खहै ही परंतुमनि पट अनाडी निकले तुम्हारे यहां सवधान बाईस पसेरी हैं परंतुमैं जिसकलापर रीझासो सुनो.

दोहा

नाचततियकुच अग्रपै मधुकर बैठ्यो आय
आलमस्रोतससमीरसों दीनो मधुपउडाय ॥१॥

पंकजकी महिमाको दादुर मच्छ नहीं जानते उसके रसको मधुकरही पहिचानतेहैं तुम ॥अविवेकी गुण अवगुणको क्या जानो गुणका पहिचान्ना महा कठिण है गुण अमूल्यरत्नहै इसके आगे धन कुछ वस्तु नहीं जिस स्थानमें गुणी पुरुष जासक्तेहैं धनी कभी नहीं जा सक्ता गुणीको गुणीही पहिचानतेहैं धनास्थिर नहीं रहता गुण शरीरके संगहै.

कवित्त

करणको सोनो दियो को उधो दिखावे आयगु
णिनके गुणकी कीरतिनिकेतहैं भोजदीने हा
थी घोरे ओरसे विलायगये गुणिनके गुणप्र
सिद्ध आजलौंसेतहैं जिनकी बडाईकेग्रंथगु
णीगायगयेतेनर अमर अजरजगमें यशले
तहैं जैतो कुछगुणीदेतराजनकोराजीव्हैक
बते तोकोउराजागुणिनकोदेतहैं. ॥१॥

कलापर रीझकर गुणीजन प्राणकालोभ नहीं करते

राजा०- (क्रोधकरके) हे ढीठ चुप नहीं रहता मैं इककीनांईदर टर करेही जाताहै अभी खड्ग मारूं तो खण्डखण्ड होजा य परंतु ब्रह्महत्यासे डरताहूं.

माधो०- तूतो मेरे खंड खंड क्या करैगा परंतु खंड खंडमें तेरा अपयश होगाकि ब्राह्मणको मारा सबलोग हत्यारा कहैंगे अरु स्वर्गसे पतित होगा इसमें माता पिता का-बडा नाम उछलेगा यह काम अवश्य करने योग्य है तैंने यह इतिहास नहीं सुना इंद्रने एक समय ब्रह्मह-त्या करीथी चारयुग घोर नरक भोगना पडाथा जो मनुष्य ब्रह्महत्या करतेहैं संसारमें चाण्डालके घर जन्म लेतेहैं जो कोटि तीर्थ यज्ञ करै तोभी ब्रह्महत्या न-हीं छूटती तथाच मनुः-

श्लोक

अवगूर्य्यत्वब्दशतं सहस्रमभिहत्यच जिघां सया ब्राह्मणस्य नरकम्प्रतिपद्यते १ शोणितं यावतः पांशुसंगृह्णातिमहीतले तावत्यब्दस हस्राणितत्कर्ता नरकेवसेत २ अवगूर्य्यचरे त्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रन्निपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रो कुर्वीनविप्रस्योत्पाद्यशोणितम् ३ इयंविशुद्धि रुदिताप्रमाप्याकामतोद्विजम् कामतोब्राह्मण वधेनिष्कृतिर्नविधीयते ॥४॥

राजा०- अरे कोई इस दुष्टको यहांसे निकालता नहीं है शठ मेरे नेत्रोंके आगेसे हट जा अरु मेरे नगरसे अभी निकल जा जिसके घरमें तुझको पाऊंगा कुटंब सहित जीता गडवा कर तीरोंसे छिदवा दूंगा.

मंत्री०- आप चतुर होकर किसके मुंह लगतेहैं यह तो मूर्ख है इसी कारण मारामारा फिरता है.

सो० चातुरनरनिशिदिनदुखी मूरखके घरराज

घटीबढीजानै नहीं पेट भरनसे काज ॥१॥

आप जानबूझकर वृथा क्रोधकरतेहैं इनलोगोंकी क्या सारा आजकहीं कलकहीं.

विदू०-हमारे नरेंद्रके नगरमें ऐसे मूरखका क्या काम जो यह मूरख है तो कानपकडकरअभी इसदेशसे निकालदो अरु कहदो अरे पाखंडी तैंने राजाके सन्मुख सर्वस्व वेश्याकोदे दिया जो पापकी मूलहै तूकैसा ब्राह्मणहै इसदोषसे तूदेशसे निकाला जाता है.

माधो०-राजन् तेरे नगरमें कौन रहताहै मैंतो ऐसे देशको दूरसेही नमस्कार करताहूं मैं उनराजाओंके नगरमें रहताहूं जो नित्य प्रतिमेरेचरण धो धो पीतेहैं धनका क्या तनकाभीलोभ नहीं करते हे राजा तेराभी कुछदोष नहीं यहसब मेरेकर्मका अरु कलियुगका प्रतापहै हे मूरख.

श्लोक

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं गजभुजंगमयो
रपिवन्धनं मतिमतांचाविलोक्यदरिद्रतां वि
धिरहो बलवानितिमेमतिः १

राग भैरव

तेरीमतिकितखोईगई धरणियहकाहूकीनभई
सगरदलीप भगीरथनृगकीकीरतजक्तेछई
सागरखोदधरणि परक्षणमेंगंगवहायदई। १
दुर्योधनरावणसे योधाकंचनकोटमई क्षणमें
छारभईहोरीसीएकएकईंटदई २ विश्वामित्र
महाप्रतापीविरचीसृष्टिनई मेरीमेरीकरतमर
गयेकाहूसंगनलई ३ परशुरामनेक्षितिक्षत्रि

नतेजीतीयारकई धरणिजहांकीनहां थिराज
नकहंगईलईदई ४

कवित्त

सभामाहिं वैठगप्पाष्टक अलापनलगेहमारी
वसाईहै दिल्ली औजगादरी लोगकहैं मोरध्य
जहरिश्चंद्रदानी भयेयतावोतोहमैं ऐसीनेकना
भीक्या करी चारवेद षटशास्त्र अष्टादश पुरा
णपढे जानी है हमारी सब फारसी औ नागरी
गुणिनकी बूझगईरीझ भई भाटनकी कलिके
धनीलगेकरनकरनकी बराबरी १

विदू०- महाराज अवसंध्यासमय हुआ संध्या वंदनको चलिये कि
स मूर्खके मुँह लगते हो.

चलो सभा विसर्जन करो (उठकर मंदिरमेंगये मंत्री अरु
सेनापति सकल सभासद अपने अपने स्थानोंको जातेहैं
अरु यवनिका गिरती है)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक प्रथमो अंक
समाप्तम् ॥१॥

दूसरा गर्भांक

स्थान सभाका दालान

(कामकंदला सखियों समेत बैठीहै माधवनल उसकी ओर निहार रहा है.)

माधो०-(आपही आप) यह सब कर्मके दोषहैं इसमें और किसीका दोष नहीं.

दोहा

दक्षिणदिशियदि ध्रुवउदय तसीअग्निसिराय
पश्चिम भानुउदयकरै तउनकर्मगतिजाय १

भले वाबुरे जिसके कर्ममें विधाताने जोअंक अंकितकि येहैं चाहैं कोटियत्न करोराव होवारंक विना भुक्ते किसी भांति

छुट नहीं सक्ता चाहे समुद्रका जल थाह होय गंगाका पश्चिमको प्रवाह होय चाहे शिलाके पंरवज में पाहन पर पंकज उत्पन्न होय जो इतनी विपरीति होय तौभी कर्म गति नहीं मिटती अवश्यमेव भोक्तव्यं.

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म्म शुभाशुभम्

श्लोक

ब्रह्मायेन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मांड भांडोदरे
विष्णुर्येन दशावतार गहने क्षिप्तो महासंकटे
रुद्रोयेन कपालपाणि पुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्य्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे

कर्मसेही रामचंद्रनें देश छोड वनमें जाय मूल फल खाये कर्महीसे पांडव वनको सिधाये कर्महीसे हरिश्चंद्रने नीच घर नीर भरा कर्महीसे विष्णुने बलिका सर्वस्व हरा.

दोहा

सोई कर्म मनुष्यका कोटि करावै वेष
सो कधि आलमना मिटै कठिन कर्म की रेख

(भगट) सो आज इस नगरमें ऐसा कौन है जो मुझको एक रैन शैन करनेको स्थान दे हाय जिसने प्रीतम प्यारीसे छुटाया उसीने यह दुख दिखाया है ईश्वर धन्य है तेरी गतिको

काम०- (आपही आप) इसके बचन सुनकर अब मुझसे रहा नहीं जाता इस्से चलकर कुछ कहूं (भगट) हे विद्याधर क्यों सोच करतेहो तुम मेरे गुणको जानतेहो अरु में कुछ तुमारा गुण पहिचानतीहूं भंवरही कमलके गुणको जानताहै भला कच्छ मच्छ उसके गुणको क्या जानैं अंधा नाच कूद कुछ नहीं जानता रूप कुरूप एकही कर मानताहै बहिरेके

आगे जो कोई शंख बजावैहै वह जानताहै कि यह कोई अमृ
तफल खारहाहै हे प्रीतमप्यारे सोच संकोच त्याग नकरो इस
राजाकी क्या शंका करतेहो मैं सब प्रकार आपकी सेवा क
रूंगी यहदासीतो आपके चरणोंके चरणोदककीप्यासीहै
आपचलकर मेरा घर पवित्र कीजै अरु कुछ प्रेमकथा सुना
कर मेरे हृदयकी विरहानल वुझाइये.

दोहा

तुवमधुकरमैंकमलनी आयवासरसलेय
मैंसीपीतूस्वातिजल ओसबूंदभरिदेय ॥१॥

माधो०-(नेत्रोंमें जल भरकर) हे प्रिये इसजगत्‌में नेह स्थिर नहीं
रहता जो स्थिर रहैतो नेहकीजै नहींतो स्नेह करना वृथाहै
स्नेहके उपरांतका वियोग सन्निपातके रोगसे भी कठिण रोग
है राति दिनरोमरोममें शोक होता है इस्से नेहकरना अ-
च्छा नहीं. नेह तो खांडेकी धारहै दोनों ओरसे पैनी कौन छू
सके.

दोहा

मिलत नयननहिं रहिसकैं जानैनेहपतंग
छूटे बिरहवियोगते जियतजु होमें अंग ॥१॥

सोरठा

हे प्रियविपतिवियोग अधिकअप्सरामुहिंदियो
कहा जानै सबलोग जोमेरे मनमें बसै ॥१॥

काम०- हे प्यारे कौनसी अप्सराने किस प्रकार तुमको दुःखदिया
उसका वृतान्त तोकहो.

माधो०- सुनप्यारीजयंती नाम एक अप्सरा इंद्रके यहां अभिनय
करनेवाली अत्यंतही रूपवान गुण निधानथी जिसकी शो-

भा वर्णन नहींहोसक्ती सोयौवनकी सरसाईसे इंद्रका ति रस्कार करनेलगी एकदिन जवराजा इंद्रने उसको बुला या तौ नाटक में नहीं आई यहसुन इंद्रने कोपकर शाप दियाकि जापत्थरकी हो मृत्युलोकमें रहु शापका वृतांत जान भयमान कंपायमान हो इंद्रके निकट जाय चरणों परगिर निवेदन करने लगीकि हे सुरराज शापोद्धार कृपा कर कहिये तवइंद्रने कहाकि पुष्पावती नगरीके विषय शंकरदास नाम ब्राह्मणके गृह माधवनल नाम पुत्र होगा द्वादश वर्ष उपरांत जव वह विवाहके हेतवनमें तेरा कर गहैगा तवतू निजशरीरपाय यहाँ आवैगी यहसुनजयं ती शिलाहो पृथ्वीपर पछाड खायगिरी.

काम०-हे प्यारे फिर क्या हुवा.

माधो०-हे सुंदरी जवमैं सात वर्षका हुवा तो मेरे पिताने पाठशा लामें पढानेको भेज दिया पांच वर्षमें षडंग सहित वेदा ध्ययन कर सम्पूर्ण शास्त्रका पारगामी हुवा एकदिनगु रूने पुष्पलेनेके कारण मुझे पुष्पोद्यानको भेजा अरुव हुत बालक मेरे संगकरदिये सुमनवाटिकामें जातेही ब डे जोरशोरसे महाघोरकाली पीली आंधी आई चारो ओर अंधेरा होगया सववालक संगके मार्ग भूलकर व नमें ढूंढते फिरे सूर्य्य भगवान अस्ताचलको प्राप्तहुए सं ध्या हो गई चंद्रमा उदयहुवा आंधीथमगई तव एक सुं दर मूर्ति पाषाणकी एक वृक्षकी जडमें दृष्टिपडी.

दोहा

नयन नासिका उरजमुख वाहु जंघपद ऐन
कामिनिउनिहारीलखी शिला सुंदरीनैन

सब संगके लडके मुझसे कहने लगे हे मित्र यह स्त्री तो तुम्हारे योग्य है तेरे रूपपर रीझ यह कामिनि कैसी चित्र सी हो रही है लज्जित हो मुखसे कुछ कह नहीं सक्ती इस कारण इसके संग अपना विवाह करले ऐसे कह सुन स ब लडके मुझे चलकर उस मनमोहनीके निकट लेगये मैंने कहा अरे मूर्खो तुम किस प्रपंचमें फस गये तुम्हारी बुद्धि नष्ट होगई भला इस पत्थरकी स्त्रीके संग मेरे फेरे कैसे फेरे जा यगे परंतु मेरी बात किसीने एक न सुनी दशमें एककी क्या चलै जैसे उनके मनमें आया वैसे वेद मंत्र पढ मेरा गं धर्व विवाह किया अरु आशीर्वाद दिया कि इन दोनोंकी प्रीति करतार जन्म जन्मांतर बनाये रक्खे फिर स्वस्ति व चन पढ उसका हाथ मेरे हाथमें देनेलगे मेरे करका स्प र्श करतेही वह बाला बिजलीकी भांति चमक आकाशको च ली गई मेरी आंखोंके आगे चका चोंधीसी आगई मैं दे खनेका देखता रहगया.

काम०- फिर क्या हुवा जबसे वह सुंदरी मिली वा नहीं.

माधो०- हे चंद्र मुखी जब वह चंद्र मुखी इंद्र लोकमें गई सुरेशने देखकर यथावत आदर सन्मान सहित सावधानकर पूंछा अरु कहा अब सब सोचसंकोच त्याग पिछली प्रीति निरं तर उसी भांति समझ आनंदसे रहाकर जयंती हाथजोड बोली महाराज क्या रहूं क्या न रहूं बडे आश्चर्यकी बात है मनुष्यका हाथ लगतेही मैं शिलासे अप्सरा होगई क्या दे वताओंसे भी मनुष्य पवित्र हैं इंद्रने कहा जिस्के करके स्प र्शसे तू अप्सरा होगई वह मनुष्य नहीं है वह शिवका पुत्र है जयंतीने बूझा वह शिवकासुत कैसे है कृपाकर वह इति

हास मुझे सुनाओ इंद्रने कहा जयंती सुन एक समय कै
लास पर्वतपर शिवजीने द्वादश वर्षकी समाधि सम्पूर्ण
कर फिर वनविहारहेत गंगानटपर आये तहां सुंदर व
नकी शोभा देख उसी स्थानपर आसन लगादिया जब
दिन व्यतीत हुवा अरु आधीरात हुई ठंडीठंडी सुगंधस
नी पवनके लगनेसे शिवके नेत्रोंमें निद्रा आगई स्वप्न
में ऋतुराजकी शोभा देखने लगे भागीरथीकी निर्मल
धार धूमधामसे लहरै लेतीचली जातीहै किनारे परकाम
देवकी सैना अस्त्रशस्त्र लिये धनुषबाण संधाने खडी
है फाग होरहाहै अबीर गुलालसे बादल लाललाल दृष्टि
आतेहैं केशरिया रंगकी पिचकारी छूट रहीहैं नृत्य हो र
हाहै गानेका शब्द कानोंमें सुनाई चला आताहै.

दोहा

चंद्रउदयलखिकै मदन काननलौं धनुतानि
जीत्योजगसब पंचशर त्याग सकल कुलकानि
तजोगर्व अब चंद्रतुम भूलोमति मनमाहिं
क्रोधहंसनि भ्रूवंकछबि तुममें स्वपनेहु नाहिं

कोकिला कुहूकरहीहै कलित ललित वाणी बोलरही
है आम्रके वृक्ष मौरके भारसे नीचेको झुकरहेहैं पपीहा
वियोगियोंका हृदय विदीर्ण करनेको पिया पिया पुकार
रहाहै सरोवरोंमें रंगरंगके सुंदर सुंदर कमल खिल रहे
हैं त्रिविधिवयारिके संग पुष्पोंकी सनी सुगंधकी लपटैंकी
लपटैं चली आतीहैं तहां एक सुंदर मंदिर अति विशाल
शोभा दे रहाहै अप्सरा गान कर रहीहैं यंत्री बाजे बजारहे
हैं अरु एक चौकीपर कामदेव कृष्णचंद्रकीउनिहार सु

खमें गुलाल मले केशरिया वस्त्र पहरे पुष्पायुध लिये बै ठाहै शंकरका भयंकर तेजदेख पंचशर घबराकर भा गाहाय मारडाला हाय मारडाला यह कहताहुवा दौडाच ला जाताथा क्योंकि वहतो पहिलेका दग्धा हुवाथा झट पट मधुकर का रूप बनाय एक नल शरके छिद्र में प्रवे शकिया हायहायका शब्द सुन शिवजीके नेत्र खुलग येदेखैं तो वहां बागहै न तडागहै न कामहै न धामहै शि वने समझाकि यह सब कामका कौतुक था महाक्रोधवा न होलगे इधर उधरढूंडने नलशरके पत्र कंपते देख शि वजी उसी जगह खडे होगये तबतो मारने जानाकि अ ब मुझे मारा ऐसा समझ छिद्रांतरसे मदन शिवजीकी स्तुति करने लगा.

श्लोक

नमोरुद्रायशर्वायमहाग्रासायविष्णुवे
नमउग्रायभीमायनमो क्रोधायमन्यवे ॥१॥
नमो भवायशर्वायशंकरायशिवायते
कालकालाय कालायमहाकालायमृत्यवे ॥२॥
वीरायवीर भद्रायक्षयद्वीराय शूलिने
महादेवाय महतेपशूनां पतये नमः ॥३॥
एकायनील कंठाय श्रीकंठायपिनाकिने
नमोनंतायसूक्ष्मायनमस्ते मृत्युमन्यवे ॥४॥
पराय परमेशायपरात्पर तरायते
परात्परायविश्वायनमस्तेविश्वमूर्तये ॥५॥
नमोविष्णुकलत्रायविष्णुक्षेत्राय भानवे
कैवर्तायकिरातायमहाव्याधायशाश्वते ॥६॥

भैरवायशरण्याय महाभैरवरूपिणे
नमोनृसिंह संहर्त्रे पुरारयेनमोनमः ॥ ७ ॥
महापाशौधसंहर्त्रे विष्णुमायांतकारिणे
त्र्यम्बकाय अक्षरायशिपिविष्टायमीढुषे ॥ ८ ॥
मृत्युंजयाय शर्वायसर्वज्ञायमखारये
मखेशायवरेण्याय नमस्ते वह्निरूपिणे ॥ ९ ॥
महाघ्राणाय जिह्वाय प्राणपान प्रवर्त्तिने
नमश्चंद्राग्निसूर्याय मुक्तिवैचित्र्यहेतवे ॥ १० ॥
वरदायावताराय सर्वकारणहेतवे
कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्तये ॥ ११ ॥
अमोघाय त्रिनेत्राय लकुलीशायशंभुवे
भिषक्तमायमुण्डाय दंडिने योगरूपिणे ॥ १२ ॥
मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतयेनमः
अव्यक्ताय विशोकाय स्थिराय स्थिर धन्विने ॥ १३ ॥
स्थाणवे कृत्ति वासायनमः पंचार्थहेतवे
वरदायैकपादायनमश्चंद्रार्द्ध मौलिने ॥ १४ ॥
नमस्ते ध्वर राजाय वयसांपतयेनमः
योगीश्वराय नित्याय सत्याय परमेष्ठिने ॥ १५ ॥
सर्वात्मनेनमस्तुभ्यंनमः सर्वेश्वरायते
एकद्वित्रि चतुष्पंचकृत्वस्तेस्तुनमोनमः ॥ १६ ॥
दशकृत्वस्तुसाहस्रकृत्वस्तेचनमोनमः
नमोपरिमितंकृत्वानंतकृत्त्वोनमोनमः ॥ १७ ॥
नमः शिवाय देवाय ईश्वराय कपर्दिने
नमोनमो नमोभूयः पुनर्भूयोनमोनमः ॥ १८ ॥ इति

कहने वरमांग वरमांग निसंदेह हमारे सन्मुख चला आ अरु जो इच्छा हो सोवर मांग हम तुझसे बहुत प्रसन्न हैं काम देव बोला हे त्रिपुरारि मैं आपको मुख दिखाने योग्य नहीं रहा आपकी क्रोधानलसे मेरा तन श्यामवर्ण होगया अब जो आप मुझपर प्रसन्न हैं तौ यहवर मुझे दीजे अपना सुत सकल संसारमें मुझको प्रसिद्ध कीजे भोलानाथ बोले एवमस्तु उस नलका मुख बंदकर कहा हे नल इसको पुत्रसम एक वर्ष लोंपोषण कर यह कह शंकर तौ कैलाशको चले गये अरु नलद्वारसे एक वर्ष उपरांत परम सुंदर स्वरूपधारी कामदेवने अवतार लिया.

एक दिन शिव पार्वती देशाटन करते करते पुष्पावती नगरीमें आ निकले अरु एक मनोहर मंदिर देख कहने लगे हे गिरिराजनंदिनी इसनगरमें एक शंकरदास नाम ब्राह्मण राजा गोविंद चंद्रका पुरोहित मेरा भक्त पुत्र हेत तपस्या करता है परंतु उसके भाग्यमें निजस्त्रीसे पुत्रकी उत्पत्ति नहीं है पार्वती बोलीं हे दीनदयाल पतितपावन दीन बंधु जैसे होसके वैसे आप उसको निश्चय पुत्र दीजै जो महाराज इसका मनोरथ सुफल न होगा तौ फिर कौन आपकी सेवा करैगा परंतु यह कहैंगे.

दोहा

कहिहैं सबसंसारमें प्रगटाविप्रकी गाथ
शंकर शंकरसेवते कछु फल लगो न हाथ

हे आनंद निधि इसकारण इसका कष्ट निश्चय निर्वारण कीजै जिसपर आप दया दृष्टि करैं उसको संताप अरु प्रारब्धसे क्या काम तृण ते गिरि गिरि ते तृण आपकर

नेमें समर्थ हैं अधमको इंद्र अरु इंद्रको मशक कर सक्ते हो सुख संपत्ति जो जगत्का आनंद है तो प्रभु तुमको कुछ दुर्लभ नहीं यह सच्चा भक्त आपका है इसको दयाकर पुत्रका वर अवश्य देना पडैगा.

यह सुन शिवजीने पहिली कथा सुनाय नल्लमें से बालक कोलाय माधवनल नाम धर पार्वतीसे कहने लगे चलो इस बालकको चलके भक्तको दें ऐसे कह रात्रिके समय उसके स्थानपर जाय महादेवजी अपने भक्तसे कहने लगे.

सोरठा

रेउ ठि शंकरदास लेस पुत्र प्रसिद्ध जग
पूजी तेरी आस सुफल भई शिवसेवतव

शंकरदासने नेत्र खोलकर देखातो शिवजीसन्मुख विद्यमान हैं झट घबडाकर चरणोंपर गिरगया शिवने पीठ ठोक बीर्य दिया यह पुत्र कुल मंडन पाखंड मतिखंडन वेद विद्या निधान पूर्ण प्रतापी होगा अरु माधवनल इस्का नाम रखना यह कह शिवतौ अंतर्द्धान होगये अरु शंकरदासने अपनी पत्नीको जगाय बालक उसकी गोदीमें दे बोला यह भोला नाथका प्रसाद है मुझपर प्रसन्न हो यह सुंदर शिशु मुझको दे गये हैं पुत्रका मुख देख ऐसी मग्न हुई मारे आनंदके रात काटनी भारी पडी दिवाकरका प्रकाश हुवा शंकरदास सब नगरनिवासियोंको बुलाय षटरस भोजन जिमाय अत्यंत पुष्कल दान किया अरु अति आनंद सहित जातिकर्मकर पुत्रका नाम शिवजीका बताया माधवनल रक्खा हे जयंती यह वही माधवनल था जिसने तेरा हाथ पकडा अरु तू पतिव्रता होगई.

अप्सरा यह वृत्तांत सुनासीरके मुखसे सुन परमानंद हो अपने घर आय यह विचार करने लगी.

दोहा

सज्जनद्रोही कृतघ्नी करतजो मिलकर घात
तेनर रविशशि उदयलों घोर नर्कमें जात ॥१॥
मोहिकरी माधोचतुर तीनोंविधिइकसाथ
जन्मांतर पीठनतकों सोसांचो ममनाथ ॥२॥

ऐसे समयमें जिसने मेरा हाथ पकडा भला मैं उसको कैसे छोडदूं यह विचार आधी रातको मेरे पास आई.

काम०- तुमने यहबात कैसे जानी.

माधो०- हे पिकवेनी जब वह मृगनैनी मेरे पास आई तबमैंने उस्से बूझा तब वह अपना सब वृतांत सुनाय कहने लगी किमैं वही आपके चरणोंकी दासीहूं आपमेरे पतिहैं तुमको सुधि नहीं मैं पुष्पावती नगरीके निकट चंपक वनमें मालती की लताके नीचे शिलारूप बनी पडीथी आप सब सखाओं समेत मेरे पास आय सुंदर वेदीरचाय मुझको बनी बनाय गंधर्व विवाह किया जभी मेरा हाथ तुम्हारे हाथमें दियामैं उसी समय इंद्रशापसे मुक्ति हो अपसरावन इंद्र लोकको चली गईथी हे प्राण वल्लभ मैं वही जयंती अप्सराहूं.

हे प्रिये जबतो मेरे मनका सबसंदेह जाता रहा अरु निसंदेह हो कहने लगाकि हे चंद्रानन तेरे कारण मैंने अत्यंत कष्ट सहा मेराही जी जानताहै नित्य उस काननमें जाकर तेरे रूप अरु लावण्यताकी छविकी सुधिकरकर पहरोंलों घुटनोंपर शिर धरधर कर रोताथा अरु बारबार

यह कहताथा हे शशि मुखी मुझे दुखी छोड तू कहां चली गई शीघ्र दर्शन देनहीं तो मैं इसी समय अपने शरीका त्याग न करताहूं.

जयंती बोली कि हे ब्रह्मवंश उजागर अब इस सोच सागरसे निकलिये यह आनंदका समयहे आनंद कीजे क्यों कि यह रात वृथा व्यतीत होतीहे कुछ प्रेम प्रीतिकी बात चीत करो इस सोच संकोचको हरो परमेश्वरने चाहा तो अब नित्य आधीरातको तुम्हारे चरणकमलका दर्शन किया करूंगी इस भांतिरीति प्रीतिसनी बातें कर बिरह पीर हर चरण दाबने लगी उस कोकिलकंठीकी मधुर बाणी सुन मैंने परमानंद हो कंठसे लगाय बिरहकी तप बुझाय मनकी आसा पूरण की इतनेमें उषःकालके लक्षण दृष्टि आये मुक्तमाल शीतल भई दीपशिखा मंद होगई चंद्रमा मलीन तारे द्युतिहीन कुमुदिनी कुंभलायगई कमल खिलने लग चकवीचकवे मिलने लगे चिडियोंकी मधुर धुनि सुनि उससमय प्राणप्यारी बोली हे प्राणनाथ जो तुम आज्ञा दो तो मैं जाऊं कलको फिर उसी समय आ जाऊंगी यह बात सुन मैंने मेरे मनसे कहा कि जा परंतु भूलमति जाना इसी भांति वह प्राणप्यारी नित्य प्रति मेरे पास आती अरु प्रातकाल होतेही चली जाती.

काम०-हे चित चोर फिर क्या हुवासो वर्णन कीजे.

माधो०-हे चंद्रकला एकदिन मैं अरु वह अप्सरा परस्पर वार्तालाप कर रहेथे इस बातकी भनकतनकतनक मेरे पिता के कानमें पडगई तब पिताने समझा कि हमको इस मंदिरमें वास करना उचित नहीं यह विचार आपतो और

ठौरजाबसे अरु उस भवनको ऐसासजाया मानो सुरपुर वना दिया फिरतौ मेरी सवशंका जाती रही.

दोहा

मनमानो मंदिर भयो नयो ऊपजो चैन
नृत्यराग आनंदमें वीतै सारीरैन ॥१॥

इसी रीति प्रीतिमें सवरात विताती अरु प्रातकाल होतेही सुरपुरको चली जाती जव ऐसे आनंद भोगते भोगते दो तीन महीने होगये तव एक दिनमैंने उस प्रेम प्रकाशिनी भोग विलाशिनीसे अपना मनोर्थ प्रगट किया हे प्रिये मुझे इंद्र पुरीके दर्शनकी इच्छा है एकवार किसी प्रकार इंद्रलोकका दर्शन करादे.

यह सुन वह चंद्रकिरण वोली अहो प्राणप्यारे यहवात महा कठिनहै क्योंकि आजतक कोई मनुष्य सुरपुरको जीतेजीनगया अरु जो दुखमय सुखमय तुमको लेभीगई अरु इंद्रको ज्ञात हो गया तौ तुमको तौ जानसे मारडालैगा अरु मुझको इंद्र पुरीसे निकालैगा हे प्यारे यह हठ अच्छीनहीहै.

मैंने कहाकि हे कोकिल कंठी जो तूमुझे इंद्रलोकका दर्शन नकरावैगी तो कलको मुझेजीतानपावैगी मुझे मरने का कुछ संशय नहीं परंतु सुरपुर अवश्य देखूंगा.

सोरठा

सुनि अप्सर यहवैन पतिवृताको वृतगह्यो
दियोलु कंजननैन मंत्रयंत्र मधुकरकियो

मंत्र विद्यासे मुझको मधुकर वनाय कंचुकीमें छिपाय इंद्रके अखाडेमेंलेगई मैंने एक एक मंदिर अपने नेत्रोंसे देखा जिसकी शोभाका वर्णन नहीं होसक्ता जोही जान

ता है.

फिर मुझको प्यारी नृत्य भवनमें लेगई वहांका रंग ढंग देखमैं दंग होगया अरु सुंदर सुंदर सुंदरियां जो अटाओं पर लटा खोले झांक रहीं थीं उनके रूपकी छटा देख चित्तमें आनंदकी घटा उमडती चली आतीथी अरु मनमोर झिंगार झिंगार नाच रहाथा अरु उनके हंसन दसनकी चमक चपलासी चमक चमक रह जातीथी. दांतोंकी बत्तीसी वगपांतिसी दृष्टि आतीथी. भृकुटी इंद्र धनुषसी जनातीथी मांग गंगयमुनसी दरशातीथी उनके नूपुर अरु घुंघुरूओं की घोर गर्जनका शब्द सुनातीथी नेत्रोंके पलकोंकीनो कोंके बाणोंकी वर्षासी वरसातीथी मधुर मधुर वाणी कोकिलासी गीत गातीथी इंद्रका नाट्य भवन क्या मानो वर्षाका चातुर्मासथा उसीसमय प्राणप्यारी सोलह श्रृंगार बनाय बत्तीस आभूषण पहर मेहदी महावर रचाय तांबूल चबाय अतनकेसी कामिनिवन अप्सराओमें ऐसी शोभादेतीथी जैसे तारोंके मध्य कलानिधि

प्यारीने सब सखियों समेत गानेका प्रारंभकिया लगी तानै उडाने दुगन तिगन पंचम मेखैंचकर लेजाती कभी संगीत विद्यादर्शाती कभी ध्रुपद तिल्लाना गाती उस समय कीतान सुनतानसैनकी छातीपर सांप लोटताथा अरु बैजूबावला बावलाहो हाथ मलताथा ऐसासमा बंध रहाथा कि इंद्रकी सभा चित्रसम चुपचाप बैठीथी.

दोहा

लख्योन कबहूँ इंद्र अस कियोन कबहूं नारि
सोसबरसमैंने लख्यो पटपदकी उनिहारि ॥१॥

रातभर यह आनंद रहा जब पहर रात रही तबमें अरु

जयंती अपने घरको चला आया इसी भांति कलोल करते करते दोबर्ष व्यतीत होगये तबतौ मेरे मनमें अत्यंत अभिमान बढा अरु इंद्रका कुछ भय न रहा इतनेमें भोर होनेके लक्षण दिखाई दिये.

कवित

गगनमें ललाई छई मंद भई चंदजोति कंजक
ली बिकसी देख प्यारे नेक ध्यान दे कुमुदिनि
कुंभला नलगी शर्द भई मुक्तमालको किलकी
नीकी धुनि प्यारे सुनि कान दे तमचुर पुकारे है चा
तक कहै पिया पिया चकवी कहै चकवा सो मो-
कोर तिदान दे रबिहू अब उदय भयो चाहत है शा
लिग्राम ऐरे निरदई मोहिं अबतौ घर जान दे १

सोरठा

धिनय करूं कर जोरि बारबार पांयन परौं
प्राणनाथ हठ छोरि जानदेहु मोहिं इंद्रपुर

जो मैं आज न गई तौ कलको सुरेश अपने मनमें संदेह करैगा कि रात्रिके समय यह कहां जाती है जो इंद्रके कानमें किसीने यह बात फूंकदी कि यह मृत्युलोकमें जाती है तौ ऐसा दुंद मचैगा प्राण बचाने भारी पडेंगे फिर मैं कहां अरु तुम कहां अबभी समझो थोडीसी बातका बतंगरा करना अच्छा नहीं वह काम करो जिसमें मेरी तुम्हारी रीतिप्रीति बनी रहै और कोई न सुनै.

जब उस मनमोहनीने अनेक अनेक भांतिके दृष्टांत मुझे सुनाये अरु पहर भर दिन चढगया तबतौ मैंने कहा जा.

वह सुंदरी प्रणामकर सुरपुरको चली गई मैं अपने गुरुकी चटशालामें पढनेको चला गया दिनतो पठनपाठनमें व्यतीत हुआ जब संध्या समयहुई तबउस रूपनिधानका ध्यान आया वह प्रेमरंगराती अब आती होगी इसी सोच संकोचमें आधीरातहोगई.

चौपाई

निशारवसी उरबसीन आई। तबसुखसकल भयो दुखदाई तलफैतनज्यों जलबिनमकरी। क्षणमें सूख भयो तनलकरी ॥

एक एक पल कटना भारी हो गया.

जब वह चित्त चोर न आई तबतो नेत्रोंमें प्राण आनेलगा फिरतो मैंलगाउन्मनकीनांई बकने अरु इधर उधर तकने हे प्रिय तू मुझे अकेली छोड कहां चली गई वेग सुधिले नहीं तो अपना प्राण घात करताहूं हे सुंदरी मैंने ऐसा तेरा क्या अपराध किया जिसके बदले में तैंने मुझको ऐसा कठिन दुख दिया क्या तुझको इंद्रने रोकलिया हाय प्रिया हायप्रिया ऐसे पुकार पुकार डाढे मारमाररो रहाथा.

मेरे रोनेका शब्द सुन शिव पार्वती भ्रमण करते करते कहींसे आगये मुझसे कहा हे पुत्र क्यों रोताहै मैंनेलाज छोडकर जोड शंभुसे सकल वृत्तांत आद्योपांतकह सुनाया तब शंकरने कहा वह अप्सरा भू मंडलमें जन्मलेगी अरु षोडसवर्षोपरांत तुझे मिलैगी जैसे हो सकै वैसे सोलह वर्ष व्यतीतकर यह कह अरु एक त्रिशूल मुझको दे त्रिशूलपाणि अंतर्द्धान हुए.

मैंने महादेवका वाक्य निश्चय जान मनको धीर्य दिया अरु वह दिन व्यतीत किया फिर सोचा जो मैं प्राणघात करता हूं तो संसार मुझको मूर्ख कहेगा कि विरहकी आग झेल न सका अरु जो मरगया तो उस चंद्रकिरण का दर्शन कैसे होगा जो तनमें प्राण है तो एक न एक दिन वह बाला अवश्य मिलेगी यह मनमें ठान उद्यानमें बैठा मैं एक दिन यह गीत गारहाथा.

राग धनाश्री

मिटावै कौन विरहकी पीर
इतउत फिरत गिरत धरणीपर व्याकुल होत शरीर १
निकसत शीतल स्वास रैन दिन मनको होत न धीर
दोउ नयनन सों गंगयमुन सम बहत रहत नित नीर २
विरही जान काम अन्याई मारत तक तक तीर
जो जो विपति परत है मोपर मेरो ही सहत शरीर ३
कासों कहौं किसे दिखराऊं अपना कलेजा चीर
कबलों मोहिं परैगी सहनी ऐसी भारी भीर ४
तेरो ही नाम जपत निशिवासर ज्यों पिंजरामें कीर
शालिग्राम शीघ्र दर्शन दो माफ करो तकसीर ५

मेरे गानेका शब्द सुन नारदमुनि भी भ्रमते भ्रमते कहींसे आगये मेरी दीनदशा देख एक मनमोहन नाम बीणा मुझे मन बहलानेके लिये दे गये अरु यह वर दिया कि यही तेरा सब मनोरथ पूर्ण करैगा यह कह नारदमुनि तो कहीं को सिधार दिये अरु मैं विरह वियोगके समुद्रमें डूबा पडा रहता अरु कभी कुछ न कहता अरु कहता तो यह कहता हाय प्यारी हाय प्यारी कभी बनमें जाय

लता ओंसे बूझता.

चौपाई

हे कदंबजामनकचनारी, तुमकहुं देखी प्राण पियारी. हे पाकरपीपरबर छौंकर कहांगई चितचोर मनोहर. हे अनारकचनाररसाला, गई इतैकोउ चंचलबाला. हे जाती जूही मोतिया तुमकहुं जातलखी मोतिया. हे अशोक सबशोकनशावन, मनलैइतै गई कोउ भावन. शाल तमालबेलसुखसागर, आई यहांको उनवनागर. हे शिंशपदाडिमतरुअरणी, गईकोउतिय चंपकबरणी. हेसेमलपलाश सुखरासी, इत हैगई को उतियचपलासी. हे तुलसी हरिकी सुखदैनी, तुमकहुं लखी प्रियामृगनैनी. हे मृगगणहे सघनसरोवर, तुमहिवता वहुखोजप्रियाकर. मौनकौनकारण तुमसाधी, कैतवजी भविरहदौंदाधी ॥

दोहा

अहोश्रीफलसदाफल सबफलकेदातार
गजगामिनिकामिनिकोऊ आईविपिनमंझार

तुमने कहीं हमारी प्यारी तो नहीं देखी वहदई मारे पहिलेही अपने प्रीतमके बिरह में मौनसाधे खडेथे जबवहभी न बोले तब उनपैजो भौंरा झुंडके झुंड गुंजार रहे थे मैंनेउन से कहा.

कवित्त

ऐरे भौंर श्यामरूप श्यामके संघाती तुम घूमतदिन

रात तुमल तानकी वितानमें मेरी यह बात प्रा
णप्यारीसे कहियेः आय हाय हाय करै तेरो प्या
रो उद्यानमें। खान पान छुटो प्राण जान प्राण
प्यारी बिन तेरे बचाये बचैं प्राणहर आनमें। प्राण
नको दान दियो चाहो तो आओ वेग गुंजगुंज
कहियो प्राणप्यारीके कानमें १

जब उन निर्दई भौंरोंने मेरी बातका ध्यान न किया तौ फि
र वनके पक्षियोंसे बूझने लगा इतने में एक ओरसे पिया
पिया शब्द सुनाई दिया मैंने जाना कि मेरी प्राणप्यारी मु
झको पुकार रही है मैं शीघ्र उस सघन वनकी लताओं
की ओर भागा पास जाकर देखा तो एक पक्षी पिया पि
या पुकार रहा है मैं अभागा ठंढी सांस भरकर वहीं बैठगया
अरु पवनसे कहने लगा.

कवित्त

अहो पौन भौनरूप भौन भौन गौन तेरो कौन
नहीं जानै तेरे पूरण प्रतापको। हनुमतसे पूत
तेरे दूत रामलछमनके भूत प्रेत गंजन औ भं
जन महापापको। पशु पक्षी वृक्ष लता सबको
प्रफुल्लित करो शालिग्राम कौन मेंट सकै तेरी
छापको। लादे मोहिं धूरि येग प्यारीके चरणन
की हृदयसे लगा यह रौतन सनकी तापको १

दोहा

नैक कहूं तें लायदे प्रिय चरणकी धूरि
आंखिनको अंजन करों समझ सजीवनमूरि १

पवनसे यह संदेशा कह आगेको चला तो क्या देखता हूं

श्रीगंगा भागीरथीकी धार धूम धामसे झकोले लेती च
ली जाती है मैंने अपने मनमें समझा इस जलसे कु
छ संदेशा प्यारीके लिये कहूं परमेश्वर चाहै तौ सब
काम पूर्ण हो जायगा क्योंकि यह अत्यंत वेगसे जा
तीहै यहबात बिचार वारंबार गंगाकी धारसे कहने
लगा

कवित्त

अहो नीरपीर हरणधीर धरणाविरहिनके
पूरणप्रतापी जान आनके शरणलई। पशु
पक्षी जीवजंतु वृक्षलता पुष्पादिक तुह्मारे
प्रतापसे रंगबदलतकई कई। भवनहू छुटा
यो बैरागी बनायदियो दुखपै दुखदिखावै है
नितभांतिनिर्दईदई। प्यारी हमारीसे कहियो
यहसारी बिथाप्यारेपैतेरे बिपतिपरतनित
नईनई १

हे मन मूरख तेरी मति ठिकाने नहीं यह नीरतो पूर्व गामी
है यहतेरी प्यारीकी शुधिकैसे ला सक्ता है अरु जो इस
को कहीं दैवयोगसे मिल भी गईतौ लौटकर नहीं आस
क्ता इसलिये इस्से कहना भी वृथाहै जलधरसे कहु जो
घर घरका घूमनेवाला है वह निस्संदेह तेरा संदेशा पहुं
चा येगा.

कवित्त

अहोजलद प्यारीके देशमाहिं बर्षो जायकस
लमनीरमानो अग्निमें औटायोहै। प्यारीकहै
शीतलजल आंगनमें बर्षत नित आज कहा

गर्मनीरनीरदवरसायोहै। कहियोतेरेविरह
कीविरहानल जरायोहमैंताहीकीलपटसे
चपलाकोवनायोहै। शीतल कियोचाहै जोह
मारो अरुपीको उर जलदीचलतोहींपियाप्या
रेने बुलायोहै १

हे मेघ मेरे ऊपर कृपातो आपने करीहीहै परंतु इतनी
वात और कहदेना.

कवित्त

खानपानकैसेतोहिंभावैहैप्राणप्यारी हमारी
गतितोपैकैसेलखीजानहै। तेरे वियोगकेरोग
में यहहाल भयोलाललालनेत्र औरपीरोपर्यो
गातहै कोईकहै पांडुरोग कोई कहै वातपित्त
कोईकहै कफहै कोईकहै सन्निपातहै हेजल
धरकृपाकरप्यारीसेकहियो जाय एकएकछि
नतेरे विनकल्पसम विहातहै १

जव घूमते घूमते वहुत दिन होगये फिरमैं पुष्पावतीन
गरीमें आया जहां मेरी जन्मभूमिथी उस नगरमें गोविं-
दचंद्र नाम नरेश महा प्रतापी पुण्यवान चौदह विद्यानि
धान इंद्रकी समान राजकरै जिसके राज्यमें ब्राह्मण
क्षत्री वैश्य शूद्र सव अपने अपने धर्म्ममें तत्परथे.

काम०- जिस राजाको तुम ऐसा साहसी अरु पराक्रमी वत
लाते हो उसने कुछ तुम्हारी सहाय नकरी.

माधो०- हे पंकज लोचनी मैं एक दिन भूला भटका मतवाले
कीनाई करमें त्रिशूल कांधेपर वीणा कांखमें पुस्तक द-
वाये वियोगीकावेष वनाये राजसभामें जानिकला रा-

जाके निकट जाय आशीर्वाद दिया. पृथ्वीराज आपका अखंड राजहो.

श्लोक

आयुर्द्रोणसुतेश्रियंदशरथेशत्रुक्षयंराघवे
ऐश्वर्य्यंनहुषेगतिश्चभवनेमानंचदुर्य्योधने
शौर्य्यंशान्तनवेबलंहलधरेसत्यंचकुंतीसुते
विज्ञानंविदुरेभवंतु भवतःकीर्तिश्चनारायणे १

दोहा

उठतत्काल नरेश पगवंदन मेरोकियो ॥
जनुगुरुपायसंदेश आदरमानिआदरदियो

अनेक अनेक आदर भावकर पांव धोय चरणामृतले मुझे बैठनेको आसन दिया तब मैंने वीणा बजाना आरंभ किया और भांति भांतिकी रागरागिनी राजाको सुनाय सब सभाको चित्रपटीकी समान बना दिया राजा हाथजोडकर बोला हे कृपासिंधु आपगंधर्वहो या नारद हो या कामदेवहो मेरा मनमोहनेकेलिये मनुजतन धर लियाहै.

मैंने उत्तर दियाकि मैशंकरदास पुरोहितका पुत्र हूं नाथ वनल मेरा नामहै यहवचन मेरे मुखसे सुन

दोहा

अतिप्रसन्नराजाभयो बहुविधिआदरकीन
नित्ययहांपग धारिये विप्रमहाप्रवीन १॥

राजाके प्रेमप्रीतिसने वचन सुनिमैं

सोरठा

करमंजनउठिप्रात चंदनतिलकलगायके
राजद्वारनितजात मनउदासप्यारीबिना

इसी भांति पुष्प तुलसीदल ले नित्य प्रति राज मंदिर में जाय देव पूजन कराय आसन बिछाय राजाके ढिग बैठा रहता जो कुछ कथा वार्ता राजा बुझता सो मैं कहता परंतु ध्यान प्राणप्यारीका था.

कभी वेद पुराण सुनाता कभी पिंगलके छंदोका आनंद दरशाता कभी संगीत शास्त्रके गीत मीठे मीठे स्वरोसे गाता कभी धर्मशास्त्रके वचनोंसे राजाका मन बहलाता कभी न्याय वेदांतकी मरोडी गुप्तगुप्त बताता जो स्त्री पुरुष मुझे देखता मोहित हो कहता धन्य है ब्रह्मा जिसने हमारे नेत्रोंके सुख देनेको यह मनमोहनी मूर्ति राजसभामें भेजदी.

सोरठा

बाचैं वेद पुराण नव व्याकरण बखानहीं
जोतिष आगम ज्ञान सामुद्रिक संगीत सब

सब नगरके मनुष्य ऐसे कहते थे अरु जो स्त्री मेरे रूपको देखती अरु मेरा वीणा सुनती उसी समय उसका वीर्य पतित हो जाता गृहका कार्य बिसार मतवाली बनजाती जो जीमें आता सो गाती परंतु मुझको किसीसे कुछ प्रयोजन नहींथा मेरे मनमें तो वही उरवसी वसी थी.

दोहा

ताके विरह वियोगसें निशिदिन रहत उदास
हृदय नयन मुख वचनमें करत उरवसी वास।

एक दिन मैं प्रातकाल उठि गंगा भागीरथीके तीर जाय स्नान ध्यानकर चंदनका तिलक लगाय वीणाका नाद मधुर मधुर ध्वनिसे उच्चारण करने लगा वीणाका शब्द सुनि अरु मेरा मनमोहन वेष देख सारी पनिहारी मतवारी हो

लगीं शिरकी गागरैं गिराय गिराय इधर उधर घूमने

दोहा

तन घूंघट की सुधि नहीं मटकी की सुधि नाहिं
नाद मंत्र मोहीं सकल मत्त भईं पल माहिं ॥

कवित्त

बाजी अकुलाय घबराय गिरि घर नमाहिं बा
जीवन विरहन विरह अग्नि माहिं जरी है। बा
जी मुरझायी बौराई अकुलाई फिरै माधो कि
त गयो जाके बीण कंध धरी है। बाजी वे सुरति
परि शर्द शर्द स्वासलेत तन मन की सुरति ना
हिं मानो परी मरी है। बाजी बाजी कहन लगी
बाजी फिर बाजी आज माधो की बीणा जुल्म
जादू की भरी है १

आगे जाकर देखूं तो.

को उपछिता लठाढी को उपरी धरणमाहिं को
उकरै हाय हाय तन को ना ज्ञान है। को उमद मा
ती रंगराती फिरै लाज त्याज काहू को चित मैब
सी बीणा की तान है कोउ शुधि बुधि बिसार बार बा
र कहन फिरै आज नौ हमारी फसी आफत में
जान है। कोउ कहै जीना कहा माधो की बीणा
सुन जादू औ टौना यंत्र मंत्रन की रवान है २

कोई कोई स्त्री परस्पर यह बात कह रही थीं.

कैसी करैं कहां जाय सूझत न कछु आली माधो
की ममता को फंद गरे पर्यो है। बनबन फिरावै
है गावै जब मीठी तान मोहनी सी डारिकै हरी

रोमनहरयोहै। ऐनमैनमैनरूपचैनलैनदेत
नाहिंमाधोकोवीणासखीजादूकोभरयौहै।
एरीवीरधीरकैसेचित्तको हमारे होयरोयरोय
आंखिनकोलालालालकरयोहै॥

एक ओरसे किसी सुंदरीके मुखसे यह शब्द सुनाई दिया-

दोहा

वीनानेछीनासकल खानपानरसभोग
आलीबालीवैशमें लग्योविरहकोरोग

जबउन पनिहारियोंकी यहगति और नारियोंनेदेखीवह भी लगी कुलाहलमचाने

दोहा

विभ्रमगतिभई नारिसब गयोमदनशरमारि
जरेजराये अंगको विरहानलरह्योजारि १॥

फिरलगीं विरह भरे पद गाने.

राग बसंत

मैनतुमदियोहमें दुखभारी
शरदचांदनीखिलीचंदकीमोकोलगतदवारी
तारागणमोहिंजानपरतहैमानोखिलीअंगारी
सुनिसुनिशोरमोरकोकिलकोपीरउठतमनभारी
हेमन्मथहेकामपंचशरतोसोंकहौंपुकारी
मैं अनाथकोई नाथनमेरोचितनितरहतदुखारी
वर्षाकाल मेघनभछाये लागीवहनवयारी
परतबूंदजबमेरेतनपैमानोलगतकटारी
दयाकीजियेसोपैरतिपतिहैयहविनयहमारी

जब मैंने वीणाके शब्दका निर्वारण किया तबसब भामिनि

अपने अपने भवनमें जाय सुंदर सुंदर भोजन वनानेल गीं उस समयमैंने वीणा फिर फूंकी वीणाका शब्द सुनि उनकी सुधिबुधि जाती रही.

एक स्त्री अपने पतिको भोजन परोसतीथी सो भोजन का थार छोड़ पृथ्वीमें भोजन परोस दिया यह आश्चर्य देख उसका पति बूझने लगा हे प्रिये सत्यसत्य कहो यह तुम्हारी क्यागति हुई अरु क्यों ऐसी व्याकुल हो अ रु किसलिये भोजन भूमिमें डार दिया. तुम्हारी सुधि बुधि कहा विसराय गई या किसी भूत प्रेत पिसाचने यह नाचनचायाहै.

दोहा

सांचवचनकहु कामिनी मैंपूंछतहौं तोहिं
तेरोचितकहुकितगयो अन्नपरोसतमोहि

जव पतिने अत्यंत हठकी तव तो उस चंद्रमुखीने अ ति दुःखीहो सव वृत्तांत कह सुनाया.

दोहा

खानपानसन्मानसुख देवसेवतजिदीन
नाहनाहिंजानो सुद्विज कहाठगौरीकीन

सोरठा

यहवृतांत सुनकान अग्निवाणसे तनलगे
सोसठ महा अजान रिसरंजित अंखियाभरीं

इस वातको सुनकर शरीरमें आगसीलगगई अरु लाल लाल नेत्र होगये सव प्रजागणको वुलाय हाय हाय कर वोला देखो भाइयो इसदुष्ट ब्राह्मणने कैसा द्वंदमचायरक्खाहै वीणा बजाय बजायसवस्त्रियोंके

मन मोह लेता है वीणा का शब्द सुनते ही वीर्य्य पतित होजा
ता है अरु चित्त ठिकाने नहीं रहता.

उसके पति की यह बात सुन सब नगर के मुखिया मनु
ष्य मिल राजा के सन्मुख जाय निवेदन किया.

हे महाराज शंकरदास पुरोहित के पुत्र माधवनल ने
बडा उपद्रव मचा रक्खा है कुछ निवेदन करने के योग्य
नहीं परंतु कहे बिन भी नहीं सर सक्ता क्योंकि नगर के
सब स्त्री पुरुष महादुखी हो रहे हैं जब नगर की स्त्री गंगा
किनारे स्नान करने जाती हैं तब माधवनल वीणा में कुछ
ऐसी मोहनी डालता है सब अवला तन मन की सुधि भु
लाय उसके पीछे बौरीसी दौरी फिरै हैं अरु वीर्य पतित
हो जाता है.

हे पृथ्वीनाथ जो माधवनल यहां रहैगा तो इस नगर में
हम किसी भांति न रहैंगे

श्लोक

यस्मिन् देशे न सन्मानो न वृत्तिर्न च बांधवः
न च विद्यागमः कश्चित् तं देशं परिवर्जयेत् १॥

प्रजा के लोगों की यह बात सुन राजा को अत्यंत चिंता हु
ई प्रजा बिन मेरा कार्य कैसे सरैगा यह विचार चार प्रति
हार भेजकर मुझको बुला लिया मैं अपने मन में अति उदा
स हो राजा के पास गया देखते ही राजा ने मुझसे क्रोध
कर कहा हे द्विजवर वह कौनसी विद्या है जिस्से पराई
स्त्रियों को वश करता है.

मैंने कहा हे नरेंद्र यह जो मेरी अद्भुत वीणा है जिस सम
य इसको बजाता हूं इसका शब्द सुन सब युवती व्या-

कुल हो जातीहैं परंतु मुझे किसीसे कुछ प्रयोजन नहीं मैं तौ पद्मपत्रके समान सबसे अलगहूं इंद्राणी भी मेरे सन्मुख आवे तौ माताकी सदृशहै मेरे मनमें तौ एक उरवसी वसीहै उसीके वियोगमे यह गतिहै.

राजा अपने मनमें सोच विचार करने लगा. अब क्या उपाय करना चाहिये जो इस लड्केकी ओर देखताहूं तौ प्रजा हाथसे जातीहै अरु जो प्रजाकी सुनताहूं तौ लडका हाथसे चला.

धर्मसनेह उभयमनिघेरी, भईगति सांपछछूंदरकेरी, निगलै कुष्ट होत तनमाहीं, छांडैरहत धर्म थिर नाहीं.

निदान राजाने अत्यंत सोचविचार कर वीसचेरी बुलाईं उनको सुंदर सुंदर वस्त्राभूषण पहराय एक एक कमलपत्र सबके नीचे बिछाय मंडलाकार बैठाय दीं अरु माधवनलको आज्ञा दीकि अपनी वीणा वजा औ वीणाका शब्द सुन तेही सबका मदन छूटा लगीं रदनसे ओष्ठ काटने उनकी यह दशा देख.

दोहा

तबराजा आयसुदियो चेरिनदेहु उठाय
सबहिनके पीछे रह्यो कमल पत्र लपटाय।
माधो मुख निरखनलगीं चेरीसकलनिशंक
मनसकुचत अंखियांमिलीं धरतमदनतनवंक.

यह आश्चर्य देख राजा अपने मनमें सोचविचार करने लगाकि प्रजाकी बात सब सत्यहै.

हे ब्राह्मणके पुत्र यह तेरा वीणा वडो विघ्नकारीहै ह-

मारी नगरीमें तुम्हारी रहायसनही यहांसे चलेजाओ औरकहीं ठिकाना देखो ऐसे मनमोहन वेषवालेको हम अपने देशमेंनहीं रखसक्के मैंने तुमको विद्यावान जान तुम्हारा आदर सन्मान कियाथा परंतु तुमनिरेअवगुणकी खान निकले.

दोहा

निकरजाहममनगरते अबसोचतहोकाहि
तेरे गुण तोकोदहैं हमरो दोषन आहि ॥

राजाके कठोर वचन सुन मैं उसके मुखकी ओरदेख नेत्रोंमें जल भर लाया हे परमेश्वर आज मैं इसयोग्य हो गया भामिनितो छुटीहीथी भवनभी छुटा परंतु कुछ सन्देह नहीं भगवतेच्छा जो कर्म गति.

श्लोक

यस्माच्चयेनचयथाचयदाचयच्च
यावच्चयत्रचशुभाशुभमात्मकर्म
तस्माच्चतेनचतथाचतदाचतच्च
तावच्चतत्रचविधातृवशादुपैति १
रोगशोकपरीतापबन्धनव्यसनानिच
आत्मापराधवृक्षस्फलान्येतानिदेहिनाम् २
स्वकर्मसंतानविचेष्टितानिकालान्तरा
वर्तिशुभाशुभानि इहैवदृष्टानिमयैवता
निजन्मान्तराणीवदशान्तराणि ३

ऐसे सोच समझ मातापितासे बिनकहे वीणा त्रिशूल करगहे पुष्पावतीसे चलदिया चलते चलते दशवें दिन कामावती नगरीमें पहुंचा.

काम०- हे प्राणप्यारे जवही तुह्मारे पांवमें बडे बडे छाले पड रहेहैं तुमको आये कितने दिन हुए.

माधो०- हे प्राणप्यारी आजही तुम्हारी कामावती नगरीमें आयाहूं यहांकी शोभा देख मैंने चाहाकि प्रथम राज भवनको चलकर देखिये यहांका राजा कैसाहै क्योंकि मूर्ख राजाके राज्यमें रहना उचित नहीं यह विचार राज द्वारपरजो जाकर खडा हुवा तो वहां नाटक होरहाहै नि दान जो कुछ हुवासो सब वृत्तांत तुम जानतीही हो परंतु यह निश्चै नहीं होताकि कबउस मृगनैनी पिकबैनीकाद र्शन होगा हे विधु वदनी अबयह कठिन कठोर कष्ट मुझ से सहा नहीं जाता हे परमेश्वर यातोउस्से मिला नहींमृ त्युदे एक वर्ष शिवकी कहनमें और रहाहै अंतको यह प्राणप्यारीकी भेंटहै.

चौपदी

क्षणयक चैन परत मोहिं नाहीं, ताको नेह बसत जियमाहीं. तातेकहत नेह नहिं नीका, रंचक सु खपुनि गाहक जीका. पर यक भ्रम उपजत मोहिं भारी, पूंछों तोहिं सांच कहु प्यारी.

दोहा

ताहीके गुणरूपसब दृगदर्शतहै मोहिं
विधनाके संयोगसे तियदेखतहों तोहिं १

(प्रीतम प्यारेके प्रेमरससने मधुरवचन सुन कामकंदला ऐसी मग्नहुई फूली अंगन समाई और दौरकर चरणोंमें जाय परी)

काम०- सो० हे पूरणप्रताप मैंहीहूं वह अप्सरा

दियाइंद्रनेशाप मृत्युलोक जन्मत भई
मातजातलीरोक अतिहठकीनीप्रीतिवस
भयो इंद्र मनशोक दियोशापगणिकाभई

माधो०- माधवनल प्यारीकी प्रेम प्रीति भरी मीठी वाणी सुन ऐसा मग्नहुवा तनमनकी शुधि भूलगया फिरकुछ काल व्यतीत होने पर सँभलकर बोला हे प्यारी तुमने मेरे पीछे कैसी कैसी भारी विपति सही सोसव आद्योपान्त वृत्तांन्त सुनाइये जिस्सेमेरे मनको धीर्य वधै अरु संदेह दूर हो.

काम०- हे प्रीतम जव तुमसे विछोहाकर इंद्रपुरीमें गई जो जो दुःख मैंने सहा मेरा मनही जानताहै अधिक क्याकहूं तनतौ सुरपुरमेंथा परंतु मन आपहीके चरणोंमें लग रहाथा.

वहां इंद्रसे किसीने मेरी निंदाकी कि जयंती नित्यप्रति रात्रिके समय मृत्युलोकमें माधवनल ब्राह्मणके पास जातीहै अरु यहां नाटकमें कभी नहीं आती सबकी पूजा छोड दिनरात माधव माधव रटतीहै सुरपुरका सब रंग भंग करदिया अभी वह मृत्यु लोकसे आईहै अरु अपने भवनको अभी गईहै उसको बुलाकर देखलो मेराझूंठ सच्च सव निश्चैहो जायगा.

दोहा

अति अनीति अप्सर करी बुद्धिवान तुमनाथ
सकल निवेदनहमकियो दंडदेन तवहाथ ॥

यह वात सुन सुनासीरको वडा क्रोधहुवा प्रतिहारीको आज्ञादी कि उसको अभी पकडकर लाओ प्रतिहारीने मुझे इंद्रके सन्मुख ला उपस्थित किया.

चौपाई

श्रमतनैन पलकैझपजाहीं, शिथल अंगशो धीकछुनाहीं पगनपरत मगगतितजिदीनी बिथुररहींअलकैंरसभीनी. सिगरे भूषण उलटे अंगा, बसनसुबास बासपियसंगा. दृगनिदीपदुतिझीन बिराजै कहुंकहुंपान पीकछबिछाजै. अधरदंतदंपति असलाई, अति अद्भुतउपमा तिनपाई.

दोहा

अधरसुधारसपानकिय तृषामिटाईआप रह्योजुकछुइकमानहू मसिकलगाईछाप

सोरठा

लखीनयनयहरीति रोषसगुरयुतबिद्युपति मनमेंपूरणप्रीति राजदंडखंडनबनै ॥

हे उरवसी तुझे अपनी हंसीका कुछ भी सोचनहीं तूनित्यप्रति मृत्यु लोकमें माधवनलके पास जातीहै अरुउसीका ध्यान तेरे चित्तमें बसारहताहै अब यह हमारी आज्ञाहै जो तुझको माधोनल प्याराहै तो अपना सीस उसके अर्पणकर अरु जो तुझको अपना तनप्याराहै तो माधोनलका शिर काटकर मुझे लादे यह मेरी सत्यप्रतिज्ञाहै जबतक दोनोंमेंसे एकका बिनाशन होगा तब लों मेरा क्रोध शांति नहोगा.

जब इंद्रने ऐसे दुर्बचन कहे तो मैंने उत्तर दियाकि मैं तमके ऊपर अपना शीश नौछावर करत्ते मुझे किसी भांति आग्रह नहीं उसके आगे देवता क्या वस्तुहै जिसके

एक एक रोमपर कोटिकोटि देवता वारिकर छोडदूं काम देव माधवनलका तन देख लज्जाका मारा अतनु बनग या जिस इंद्रासनको आपने अधिक ऊंचा समझ र क्खाहै उसे माधवनल तृणके समान जानताहै.

चौपदी

तीन लोक माधो सम नाहीं। तुम कत गर्व करो मन माहीं। यह मम मतन्न माधोके काजा। कियो चहै सो कर सुरराजा।

दोहा

अप्सर सब अरु सुर सकल तुम समेत नरनाह सर्व भोग अमरावती माधव बिन जरि जाह ॥

सोरठा

क्रुद्ध भयो असुरारि कठिन कुलिशसे वचन सुन, गह्यो वज्र शक्रारि नयो जयंती शीश तह. जो मम सांची प्रीति प्रीतन छुटै अनीति ते, मोहिं सत्य प्रतीति जन्मजन्म माधो मिलै

सुरेशने जाना कि जयंतीकी माधवनलसे सच्ची प्रीति है जिसने अपने प्राणका रंचक भी मोहन किया ऐसा वि- चार विचार इंद्रने कहा हे जयंती जो तुझे अपना प्राणप्यारा प्यारा है तो तू अपने प्राण प्राणप्यारेकी नौछावरकर जो तु झे मनुष्यसे अधिक प्रीति है तो जा मृत्युलोकमें वेश्या बन जो पुरुष तेरे मन भावै उस्से भोगकर अरु जिस मा धोको तैंने अपना प्रीत समझा है वह वनउपवन नगर नगर भटकता फिरैगा अरु उसके विरहमें तू ऐसी बेचै न रहैगी सुखसे माधो माधो शब्द क्षण भरको न छूटेगा

यह शापदे वज्रायुधने मेरे वज्र मारा उसी समय देह छो
ड कामावती नगरीमें आनकामकौमुदीके उदरसे औतार
लिया जव मेरी वारह वर्षकी अवस्था हुई

दोहा

तेरह वर्ष प्रवेश जव मन्मथ वढ्यो शरीर
नरनारी निरखत नयन रंचक धरत न धीर

सोरठा

निशिदिन पियको ध्यान खानपान भावत नहीं
कव मिलिहै पिय आन गुणिपन से वूझत रहत

वडे वडे राजा महाराजा गुणी धनाढ्य पंडित प्रवीन मेरे
घर आते परंतु मेरे मन न भाते माता अरु सहेली वहु तेरी
पहेली पढातीं अरु मुझे समझातीं परंतु मेरे चित्तमें ए
क न आती क्योंकि मेरा मन तो प्रीतमके फंदेमें फस
रहाथा इन वातोंको कौन सुनै अरु जो मैं वहुत हवो
डे हवाडेसे आंख खोलती भी तो यह उत्तर देती मेरा प
ति तो माधवनल है मैं और पुरुषको क्या जानूं

आज राजा कामसैनने मेरा नाटक देखनेके लिये मुझ
को वुलाया उस समय मुझे इंद्रका वचन स्मरण हुवा
मैंने जानाकि अव प्यारेके मिलनेका समय आ पहुंचा
क्योंकि मुझसे इंद्रने कहाथा तेरा प्रीतम तुझको का
मसैनकी सभामें मिलैगा इस आसपर प्राण तनमें वा
स कर रहे हैं हे द्विजराज इस प्रकार मेरा वृत्तांत है सो
सम्पूर्ण आपको सुना दिया अव जो मेरा अपराध
क्षमा हो तो कुछ निवेदन करूं.

माधो०- हे मनोरमा अपराध कैसा यह कहो कृपा करती हूं

मेरे ऐसे भाग्य कहां हैं जो तुम मुझसे बात करो आपकी मधुर वाणी सुनेको तो इस चितचकोरको परमोत्साह है किकब यह चंद्र वदनी अपने चंद्रवदनसे कुछवच न उच्चारण करे क्योंकि तुम्हारी बात बात में फूलसे झडतेहैं उन्हीं पुष्पोंसे अपने हृदयको शीतल करनाचाहताहूं जो तुम्हारी इच्छा होसो वर्णन कीजे

काम०- तुह्मारे वचनामृत तो अचेतनोको जीवन मूलहैं भलामैं इस योग्य कबहूं जैसी तुमनिज मुखार्विंदसे वर्णन करते हो कोई बात तुम्हारे सन्मुख कहते भी सकुचलगतीहै तथापि जैसे पूर्ण कलानिधिको देख पयोनिधि बढताहै तैसेही तुम्हारे दर्शनसे चित्त उमडताहै इसकारण कहे बिन रहा नहीं जाता गुप्त रखनेसे चित्त व्याकुल होताहै इसकारण विनय करतीहूं कि मुझे तुम्हारे सारेलक्षण अपने प्यारेके सदृश दृष्टि आतेहैं अब तुम किसलिये अपना भेद छिपातेहो मैंने सब तरह आपकी परीक्षा करलीकि आप माधवनलहैं अब कृपाकरके मेरे स्थानको प्रस्थानकर पवित्र कीजे.

दोहा

सुनिसुंदरि इतिहाससब ताहि अप्सराजानि
भरी अंकसब शंक तजिउर आनँदकी खानि

(अत्यंत मग्नहो माधवनल कामकंदलाके संग जाता है अरु यवनिका धीरे धीरे पतित होतीहै.)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक शालिग्रामवैश्य कृत प्रथमोंऽक समाप्तम्

दूसरा अंक

पहिला गर्भांक

स्थान कामकंदलाका मंदिर

(कामकंदला शृंगार करतीहै सखीसेवामेंखडीहैं)

काम०- कहो सखी आजमेरा शृंगार कैसा है.

मनो०- प्यारी आज तुम्हारी अनोखी ज्योति अरु वांकीछ विका कौन वर्णन करसकै.

दोहा

अंगअंग भूषणसजे पहरकुसुम्भीचीर ।
तेरी सुंदरछबिनिरखि छबिमन धरतनधीर
भूषणभार संभारही क्योंयहतन सुकुमार

सूधे पाँय न धरि परत महि शोभा के भार २

कहा कुसुम कहा कोमुदी कितक आरसी जोत
तेरी उजराई लखत आँख ऊजरी होत १।३

अंग अंग प्रतिबिंब परि दर्पणसे सब गात
दुहरे तिहरे चोहरे भूषण जाने जात २।४

केशर क्यों सर करि सके चंपक कितक अनूप
गात रूप लखि जात दुरि जातरूपको रूप ५॥

कामम०-हे सखी प्रेमकथाकी रीति तो मैं कुछ नहीं जानती पुरुष संग सेज सुख अबतक नहीं देखा वह माधो सुजान कोककी रीतिसे मदनकी कला अरु उसके स्थान सबके जाननेमें परम प्रवीण है पढी तो मैं भी हूं परंतु गुणी नहीं इस कारण जो कुछ विशेष भाव हो सो और भी कहो.

मनो०-भला सखी वह कोनसी कोक कला है जो तुम नहीं जानती जहां मन्मथका वास है तहां चुम्बन कियेसे नहीं रहता मैं क्या कहूंगी तू तो रतिसे इस समय कुछ न्यून नहीं जो मैं तुझे सिखाऊं

काम०-सखी इस बातमें कुछ बडाई छुटाई नहीं है तो भी तू मुझसे चतुर है.

मनो०-(कुछ गुप्त गुप्त बातें बताईं अरु कहा) अब तू प्रीतम प्यारेके पास चल.

काम०-भला प्यारी वह मेरा मनहरन चितचोर कहां है

मनो०-सखी चलिये इस आनंद भवनमें सेज बिछ रही है दीप प्रज्वलित हो रहे हैं सब भवन जगमग कर रहा है अरुण पीत श्याम श्वेत पुष्पोंके हार चंगेरामें धरे महक

रहेहैं गेंदुये तकिये लगरहेहैं इलायची पान जावित्री केशर कर्पूर चोया चंदन कस्तूरी अर्गजा सुंदर सुंदर सुवर्णके पात्रोंमें भरे धरेहैं जैसी तुम्हारे प्यारेके मन को रुचे वैसी सेज चांदनीचवेलीके फूलोंसे सजाई जाय.

वह देखो तुम्हारे प्राणवल्लभसेजकेउपर

दोहा

रत्नजटितकुंडलदिपे मृगमदतिलकलिलार
करवीणातनमनहरण उरमोतिनकेहार १

देखो कैसी कामदेवकीसी सूरतबनाये बैठेहैं चलो अपना मनोर्थ सुफल करो (कामकंदला जातीहै अरु सेजपर बैठतीहै)

मदन०-देखो सखी इस समय हमारी प्राणप्यारीको धीर्य नहीं रहा शरीर कांपताहै लज्जाकी मारीनीचीगर्दन किये अपने प्यारेके ढिग कैसी बैठीहै अरु ऐसे प्रेम प्रीतिसे मिली

दोहा

चक्रवाकचकईमिली मिलेचकोरहिचंद
रोमरोम सुखसंचरो मिट्योविरह दुखदंद १

मनो०-अरी इनकी चतुराईके वचन तो सुनो यह दोनोंयो वनमें भरपूर हैं अबलज्जा भी इनसे छूटी जातीहै इस्से चलोकहीं एकांत बैठकर रैन व्यतीत करें (मदन मोहनी अरुमनोजमंजरी जाती हैं अरु यह कहती जातीहैं).

म०म०-हे महाराज परंतु यह विनय हम आपसे और करतीहैं देखो महाराज हमारी प्यारी कामकंदला अभी अत्यंत

बाली भोली है कामकेल कुछ नहीं जानती प्रथमही की रीति प्रीतिमें आपकी प्रतीतकर अपना तनमन आप की भेट करदिया परंतु आप पंडित अरु चतुर हैं आप से कोई बात कहनेके योग्य नहीं हमारी आपसे बार बार यही प्रार्थना है परमेश्वर आपकी जोडीको सर्वदा आनंद रक्खै (ऐसे कह कामकंदलाका हाथ पकड शय्यापर बैठाय दिया) आज्ञा होयतौ हम अबजाय तुमको अपने मनगुनकी बातें करनेको देर होती होगी एक बात हम भूल गईं गंधर्व विवाह करना तुम को अवश्य उचितहै सो तुम करलेना औरतो कुछ इस समय बनन पडैगा परंतु मुंदरीकी अदल बदल करलीजो.

काम०-(हँसकर) लजायके नीची नारिकर बैठगई परंतु चित्तमें अत्यंत चाव (दोनों गईं) माधवनल अरु कामकंदला प्रयंक पर कलोलैंकर रहेहैं मानो मार्तंड अरु मयंक एक प्रयंकपर निशंक बैठेहैं कभी वह उसकी अंक भरताहै कभी वह इसकी अंक भरतीहै ऐसे सबरात प्रेम प्रीतिकी बातचीतमें व्यतीत हुई.)

(प्रभात होताहै अरु मदन मोहनी और मनोज मंजरी आती हैं अरु कामकंदला सेज छोडकर पलँगकी एक पट्टीसे लग अलगजा बैठती है.)

म०म०- बधाई बधाई आजकीरात धन्य है जैसा तुम्हारा मनोर्थ पूर्ण हुवा ईश्वर ऐसा सब किसीका करै.

काम०-आज क्या पाया है जो हँसती आती हो.

म०म०-आज हमने ऐसा कुछ पाया जो जन्म भर नहीं पा

याथा प्यारीको तोपतिमिला हमारी विपतिटली सब की पतिरही इस्से और अधिक सम्पति कौनसी है.

काम०-हे मदन मोहनी तेरी बात बातमें ठगेलीहै

मनो०-अरी मदन मोहनी देखा तमाशा कामकंदलासेजछोड कैसी अलग जाबैठीहै मानो कुछ जानतीही नहीं

मद०-मुझको येही सन्देह है कि आज कामकंदलाको होक्या गया शरीर विह्वलदृष्टि आताहै नवह तेजहै नवह रंग है नेत्रोंमें नींद भररहीहै पलकें झपी जातीहैं जंभाई चली आतीहैं अंगडाईलेरहीहै मुखसे पूरी बात नहीं निकलती.

मनोज०-सखी यह बात तो तेरी सब सत्यहै अंगभी शिथिल हो रहाहै कंचुकीभीदरकीसी दृष्टि आतीहै करकी चुरियांभी करकी दिखाई देतीहैं मांग बिथुरिरहीहै लटें मस्तकपर बिखर रहीहैं कपोलोंपर अरु अधरों पर दाँतोंके अरु कुचोंपर नखोंके चिन्हभी चमकरहे हैं मुखभी शशिके समान सेतहो रहाहै.

मद०-अरीयह तो बता आज चंद्राननकी शोभा क्यों मलीनहो रहीहै.

मनो०-आली तू तो सदा भोली भालीही रही अरी माधवने कामकंदलाके चंद्राननको वेध अधरामृत जो पियाहै इसकारण पियाप्यारीके मुखकी कांति मलीन होगई है जब भंवरने कमलमें प्रवेश कियातो केशर झार सबरस लिया

मद०-सच्चहै सखी इसीसे पियाप्यारीके मुखका रंग पीला पडगयाहै.

काम०- आज क्या सैनावैनी कररहीहो ऐसी हँसी मुझे अच्छी नहीं लगती.

मनो०- प्यारी तेरे मुखचंदके सन्मुख चंद भी मंद दिखाई देताहै.

मद०- अरी विधातासे एहीवर मांगकि प्यारीका सदासोभाग्य वना रहै अरु ऐसीही आनंदकी रात रहै.

काम०-(मुसुकराकर चुपहोरही).

मनो०- चलो वहुत लाज हो चुकी अव उठोमुख धो ओ पान खाओ चंदन कुम्कुम अंगसे लगाओ या प्यारेके संगसे अभी पेट नहीं भरा.

काम०- सखी तू सवका स्वभाव अपनेसा जानतीहै.

मद०- प्यारेके पलंगकी पटीसे लगी वैठीहो हृदय ठंढा है जो चाहैसो कहो.

काम०- मैंने कोई वात अनुचित तो नहीं कही मेराहृदयठंढा भी तुम्हारीही कृपासेहै जो तुमकहो सो करूं.

मनोज०- वरसोंसे सुमरते सुमरते आज यह आनंदका दिन देखाहै ऐसा उत्तम दिन कवपाओगी गाती वजाती सव सखियों समेत सरोवर स्नान करने चलो अरु देवकी पूजा करो जिसकी कृपासे आपका मनोर्थ पूर्णहुवाहै.

काम०- चलूं तो सही परंतु.

मदन०-(जाना जाना तुमयह कहोगी कि प्राणनाथअकेले कैसे रहैंगे सो तुम्हारे प्राण प्यारेसे चार घड़ीके लिये आज्ञा लिये लेतीहैं.

हे महाराज आज्ञाहोतो सरोवर स्नान करआवैं

माधो०- जाओ प्यारी स्नानकरना तो अवश्यउचितहै.

(सब सखीमिल सरोवर को जातीहैं
अरु यवनिकागिरतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक प्रथमो
गर्भांक समाप्तम्

दूसरा गर्भांक

स्थान सरोवर

सब सखी सरोवर के किनारे खडी हैं

दोहा

कामकंदलाविधुवदन सखितारागणसंग
कमल देखसंपुटगह्यो चकवीमन भयोभंग १

मदन०-हे विधुवदनी देख कैसा निर्मल जलझकोल रहाहै
वडे कलोलका स्थानहै मुनीश्वरलोगतपस्या करर

हेहैं अपने अपने रहनेको कैसे कैसे खोल खोद रक्खे हैं इनके मीठे मीठे बोल मनमोल लियेलेतेहैं यह ताल ईश्वरने ऐसा गोल बनाया है इसमें चोल तक नीर है किनार दृष्टि नहीं आती ऐसे गंभीर सरोवरमें टटोल टटोल पग धरना.

काम०- सखी इसमें अनेक अनेक रंगके कमल जो खिल रहेहैं इनपर भंवरोंके झुंडके झुंड जो गुंजार रहे हैं यह सारंगी कैसा शब्द मेरे मनको छीनेलेहै.

मनोज०- अच्छा देर मतिकरो शीघ्र वस्त्र उतारो धोती पहरो तेल सुगंध मलो

काम०- वहुत अच्छाहितू

मदन०- तेल फुलेल तो मलचुकीं चलो अब झटपट स्नान करलो.

काम०-आली यहां जल गहरा तो नहींहै वहुत नीरसे मेरा जी कांपता है तू आगे चल..

मद०-किनारे पर पानी वहुत गहरा नहींहै डरो मति मैं खडीहूं.

काम०- मेरा हाथ था मेरहु छोडिये मति मैं डुबकी मारती हूं (डुबकी मार हरिहर हरिहर कहने लगी)

मनोज०- वहुत देर हो गई अब जलसे वाहर निकल आओ एक तो तुम्हारी सुकुमार अवस्था दूसरे कोमल तन मुझे यह संदेह है कहीं शर्दी न हो जाय फिर और पापड बेलने पडें.

काम०- अरी वहन मुझे शर्दी कहां मेरा तन तो वैसे ही विरहानलसे तप्त होरहाहै.

मदन०- तू रातभर प्यारेके पास रही तो भी तेरे तनकी तपन बुझी.

काम०-(हँसिकर) वैसेतो तू बडी भोलीसी दिखाई देहै परंतु तेरी ठठोली न गई मेरा जलसे निकलनेको जी नहीं चाहता यह मनोहर मनोहर कमल देख मेरामन मकरंद वन यहीं रमाजाताहै.

मदन०-सखी तेरे मनकी विलक्षण रीतिहै जो सबसे प्रीति करलेतीहो.

काम०- अच्छा अब मेरे वस्त्र लाओ मैं जलसे बाहर निकलतीहूं.

मनोज०- देखो सखी इससमय कामकंदलाका तनकैसा चंपेके पुष्पकी सदृश चमक रहाहै कहीं कहीं जलकी बूंदें जो शरीरपर रहगई हैं मानो चंपेकी कलियोंपर वोसके कण दमकरहेहैं सजलश्याम अलकें जो मुखपर उलटकर डालीहैं उनमें सेजो जलकी बुंद टपकतीहैं मानो भुजंग मुखसे मोती उगलतेहैं.

सोरठा

चिहुर अथते तोय चढिआवततियशीशते
मनोरेशमगुनपोय मुक्ताफलढारतमदन १

औरदेखो काली काली अलकें कैसी कपोलोंपर पडीहैं जैसेचंद्रमाकोअमृतके लोभसे नागनी लिपटी रहतीहैं देखो कैसी सरल कुटिल छवि बनाईहै यह रसिक जननोंके फांसनेको फांसीहै आली इससमय वहछवि वर्त रहीहै.

दोहा

अवलाठाढीतीरपर नीरचुवतवरवीर
मनोअँसुवनरोवतवसन तनबिछुरनकीपीर

मदन०- हे कामकंदला तुझे कुछ भी सोच नहीं वहां तेरा मीत म अकेला पडा क्या कहता होगा उसकी भूख प्यासकी रंचक भी चिंता नहीं.

काम०- मेरा मन अवधीर नहीं धरता शीघ्र चलो वह मनमोहन प्यारा कभी अपने मनमें दुःखित न हो.

मद०- चलोरी चलो शीघ्र चलो हमारी प्राणप्यारी उतावली कर रहीहैं जिसमें उनके अरु उनके चितचोरके चित्तमें खेद न हो.

काम०- प्यारी मेरे मनका खेद खोना चाहो तौ ऐसा कोई उपाय करो जो आज हमारा प्यारा न्यारा न हो यह नदीनावसंयोग है जो अब हाथसे निकलगया तौ फिर मिलना महा कठिन है.

मदन०- सखी हम उसी बातमें आनंद है जिसमें तुमको सुख प्राप्ति हो अरु हमको यह लाभ होयकि माधोनलको देख अपना हृदय शीतल करें.

सोरठा

जो मन बांछित बात सोई सखि मुख उच्चरैं
आनँद उमगो गात तब चातुर आतुर चली

(सब सहेलियों समेत कामकंदला अपने घर आतीहै अरु यवनिका पतित होतीहै.)

इति श्रीमाधवनल कामकंदला नाटक द्वितीय गर्भांक समाप्तम्

तीसरा गर्भांक

स्थान कामकंदला का मंदिर

(कामकंदला माधवनलकेपास आती है)

काम०-हे प्यारे तुम्हारे दर्शनबिन मेरामन अति उदास हुवा अव मेरा चित्त चाहताहै तुम्हारे धोरेसे कहीं नजाऊं अवतुमको अकेला छोड सरोवर न्हाने कभी नहीं जानेकी.

दोहा

कमलदेखिसंपुट गह्यो चकई संगविछोह
मम मुखपूरण चंद्रसम निरखत अतिदुखहोह

माधो०-हे मनोरमा कहतिरा मुख मनोहर कहां वपुरा चंद कलंकी क्षयीरोगी स्त्रीका वियोगी वह तेरे सुंदर मुखार्बिंद की समता कबकर सक्ताहै प्यारीतेरे मुखके सन्मुखमार्तंडका घमंडभी ढीला दृष्टि आताहै.

काम०-(यह बात सुन मुसकराकर प्यारेको कंठ लगाय बोली) हे मनहरन तुमसे बिछडनेको मन पलभरको भी नहीं चाहता मैं सरोवर तो गई परंतु मन आपहीके चरणोंमें लगा रहा.

माधो०-प्यारी मनतो मेराभी यही चाहताहै कि एक क्षणको भी तुमको न त्यागूं परंतु क्या कीजे जो राजाकी आज्ञा.

काम०-(मन मलीन करके)

दोहा

मूरख लेस म्बंधु धिन इहि जग मिलै न कोय ।
तुम जानि बिछुरो प्राणपति विधि भावे सो होय ॥
मधुकर लुब्धो कमलसों कियो पान मधु प्रेम ।
नयन बाण तन में बिंधे तबहुँ मिलन को नेम ॥
भँवरोंकी तो यह गति है अरु मनुष्योंकी यह रीति.

माधो०-प्यारी विधिकी गति अपरम्पार है उस्से किसीकी पार नहीं बसाती क्या राजा मूर्ख मुझको देशसे निकाले अरु पाखंडियोंको पाले यह कर्मका फल है इसमें किसीका क्या दोष है अरु तू मुझे जानेदे हम तुम जो जीते रहेंगे तो सौबेर मिलेंगे.

काम०-(नेत्रोंमें नीर भरकर) हे प्यारे तुम्हारे पैयाँ पडूं ऐसे कठोर वचन मुखसे न निकालो ऐसे निठुर वचनोंको सुनसुनकर मेरा हृदय बिदीर्ण होताहै.

काम०-हे मदनमोहनी अब कैसे होगी.

दोहा

चलन वचन मीतम कहत सहत न तन दुख एह ।
प्राण चलें पिय संगही सह संताप न देह ॥

सोरठा- चलन कहत हैं मित्त आप संग ही चलेंगे
अति व्याकुल है चित्त नयन सजल भर भर दरें ॥
दो० आज सखी हम यह सुनो पहु फाटत पिय गोन
पहु अरु हिय रे होड़ है पहिले फाटै कौन ॥

मद०- कुछ संदेह मति करो चलो तुम्हारे मन मोहन को मनावें परंतु राजा का जो भय लग रहा है उसको क्या करोगी.

म० का०- तुम तो सुजान अरु ज्ञानवान हो राजा के कहे का विलगु नहीं मानना चाहिये धन यौवन के मद में सब ही मतवाले हो जाते हैं.

दोहा

मूरख का मुख बांबई निकसत वचन भुवंग
ताका सु रान लागिये विष व्यापै नहिं अंग १॥

माधो०- हे प्रिये राजा किसी के मित्र नहीं होते.

दोहा

बिपधारे १ कपि २ अग्नि ३ जल ४ राजा ५
सुआ ६ सुनार ७॥ यह दश होय न आपने
पासा ८ फांस ९ कलार १०

दूसरे यह बात है जहां अच्छे बुरे की बूझ न हो वहां का रहना भी अनुचित है.

दोहा

मन माणिक जो उच्चटै फिर न जुमैं तिहिं ठाव
चाहै वसुधा कनक की हारिल धरै न पांव १

सच तो यह है यहां रहना मुझको किसी भांति स्वीकार नहीं दश बीस दिन कहीं और ठौर रहकर अपने चित्त को शांति करलूं फिर आजाऊंगा.

चौपाई

कर्मरेखसों कछु न बसाई. बिधनाकी गति लखीन जाई. मिलन बिछोह बिधाता कीना हमें तुम्हें दारुणा दुखदीना. मिलबिछुरन दुखजाने सोई, जासों मीत बिछोहा होई.

काम०-(लंबीसांस भरकर हे मनरंजन बहुत दिन नरहो तो एक दिन और विश्राम कीजे आजकी रात और अपनी छातीको ठंढी करलूं अरु अपने हृदयकी तप बुझालूं (षटरस भोजन मँगाय) हे प्यारे भोजन तो करलो जो मेरे मनको संतोष होय.

माधो०- इस नगरमें भोजन करता तो नहीं परंतु तुम्हारा कहना भी मुझको अत्यंत भारी है.

मद०- सखी आजकी रात तो बडी शोभायमान है कैसी निर्मल चंद्रमाकी चांदनी खिलरही है तारे छिटकरहे हैं. चांदनी चंबेलीके पुष्पोंसे सुंदर सेज सजाओ.

काम०- मेरे गहनेकी पिटारी लाकर मेरा ऐसा सुंदर शृंगार बनाओ जो आजतक किसीने सुनाहो न देखाहो.

मद०- प्यारी जो आजही तेरा शृंगार नबनावेंगी तो किसदिन बनावेंगी क्योंकि तुम्हारे मनमोहन प्यारे कबकब आवेंगे.

मनो०- प्रथम तो चंदन कुम्कुम लगाय सुंदर सुंदर चोटीपट्टी मांग बनाय बत्तीस आभूषण पहराय अतलसका लहँगा जरीकी ओढनी उढाय। केशरका तिलक लगाय पान चबाय आज तो उरबसी बनादे जो नित्य प्रति प्यारेके उरबसी रहे.

मद०- दोहा

तन भूषण अंजन दृगन पगन महावर रंग
नहिं शोभा को साजियत कहिवे ई के अंग १
मानो विधि तन अच्छ छवि स्वच्छ राखिवे काज
दृगपग पोंछन को किये भूषण पायन्दाज २

मनो०- हे कामकंदला तेरे मुखकी शोभाका वर्णन कौन कर सके.

दोहा

अंग अंग तन जगमगत दीपशिखासी देह
दिया बढायेहू रहत बडो उजेरो गेह ॥ ॥

मद०- मैंने सुनाहै आज तेरे रूपको देख रतिभी लज्जित हो अनसन पाटी लिये पडीहै.

काम०- आली माधो क्या रतिपतिसे कमहै.

मद०- चलो प्यारी प्राण प्यारेको यह शृंगार दिखाओ.

मनो०- महाराज तुम्हारी प्राणप्यारी आई इसके शृंगारको तौ देखो कैसा बनाहै.

काम०- अरी मेरा मुख इस योग्य नहीं जो प्राणनाथ छवि वर्णन करैं.

माधो०- आइये प्राणप्यारी शैयापर विराजिये हमारे नेत्र चकोरोंके हृदयको सुखदीजिये इस मनमधुकरको रस पान करनेदीजिये क्योंकि आजकी रात और हमारा तुम्हारा संयोगहै. फिर न जानिये कबतक वियोग रहै.

काम०- (वियोगका नाम सुनि अकुलाकर)

दोहा

चतुर मनुज नहिं करतहैं लोगा दिखाऊ प्रीति

प्रथममिलनपाछेदगा कौनगांथकीरीति
जोमैं ऐसाजानती यह नानिवैहे साथ।
कबहुँनदेती भूलकर चित्त पराये हाथ॥
प्रीतमत्तेनर तुच्छमति जेमनपरहथदेहिं।
सुखसंपति लज्जातजाहिं दुःख विरहको लेहिं

माधो॰- प्यारी यह बातें तुम्हारी सब सचहैं परंतु जोमेरे मनमें बीततीहै मनही जानताहै कहनेसे क्या होताहै जोरा जाने मेरे पीछे तुझको दुःख दियातो वह दुःख मुझसे देखा न जायगा.

काम॰- तुमसे अधिक इस समय मेरा कौन है तुम एक दुःख को क्यारोतेहो विछुरनसे अनेक प्रकार के दुःखदेखने पडेंगे सो दुःख मुझ दुखियासे कैसे सहे जायंगे अरु जो मनको मनाही लिया परंतु नयनतो नहीं मानेंगे.

कवित्त

जब तेसुन्योहै प्यारोन्यारो भयोचाहतहै तब
हींतेमलयके सोपानीबरसावैहै जहां कहीं
बूंदनाहिंपरीतिनकि सानननलेकहियोथवरा
यनाहिंहसहूं अब आवैहैं। जारे विरह विधि
से कहुवे गिरोकप्रीत्तमको नातो एक पलमेंते
री श्रुष्टिको बहावैहै। जरे कोजरावैंऔदुखी
को दुखावैं जेक भूनाहिंऐसेनर जगमें सुख
पावैहैं १

माधो॰- प्यारी क्यों मुझको लजातीहो (यह कहनीची गर्दन कर चुपहो रहा).

काम॰- (आपही आप) ऊपरको देखकर) देखो यह चंद्रमं

दमति किस आनंदसे निर्द्दद चला जाताहै इसके मनमें किंचितमात्रभी दया नहीं हमजलियोंके जलानेको यह भी निगोडारथ भगाने लगा। अरे निरदई नेक ठहरतो सही

सोरठा

हे शशि हे निशिराज काज आज तुमते परो
लाज मेरी महाराज आज तुम्हारे हाथहै।

मेरी दोबातें सुनते जाओ आज मेरे ऊपर बडी भारी विपत्ति है मेरे प्रीतम प्रातःकाल आँयगे कुछ ऐसा यत्न करो जो रात्रि बढजाय जब वह न बोला तो कहने लगी हाय यह मन मलीन तन छीन चंद्रमा भी नहीं सुनता अपना रथ भगाये चला जाताहै इस दई मारे महाहत्यारे से क्या होगा यह तो सदाही का कपटीहै जिसने अपने गुरुकी पत्नीको कुदृष्टिसे देखा तो और किसका भी न होगा इस्से बातचीत करनी वृथाहै.

सोरठा

चंद्र न जाने पीर ताबिन सहै चकोर दुख॥
व्याकुल रहै शरीर निशि अँधियारी शीशधुनि

(फिरबोली) चंद्रमा बिचारेका कुछ दोष नहीं इसके रथमें जो हरिण जुडेहैं उन दई मारों का सब दोषहै (उन मृगोंको सुनाकर कहती है)

सोरठा

रे रे मृग भगतोहि रथनिशंक लये जात कित
पियबिछुरन दुख मोहि चंद्र छिपत पिय जायतें
जो तुमको कुछ लाज मोहि विरहनको दुख हरो

जाहु नकहुं तुम आज बसहु मास षट मम भवन

जो मेरा दुःख मिटाया चाहो तो कुछ ऐसा उपाय करो जो सदैव रात्रिही बनी रहे कभी भोर न होय जो मेरा मनकु सुदिनि खिन्नाही रहे (जब मृग भी न थंमे तो कहा) जिसका स्वामीही कुमार्ग गामी हो उसके दासका क्या विश्वास.

हे विधि जो तू सच्चा विधि मिलाने वाला है तो मेरी भी विधि पूर्ण लगा आज छै मासकी रात करदे क्योंकि प्रीतम प्रातःकाल जाने कहै हैं.

काम०-(जब किसीने उत्तर न दिया तो बोली) हे स्वामी तुम्हीं कुछ यत्न करो जो दिन न निकलै.

माधो०-हे प्रिया कहीं ऐसा भी हो सक्ता है यह बात बहुत कठि नहै परंतु बीणा बजाताहूं चंद्रमाके रथके मृगोंपर मोहनी डालता हूं देखियै चाहे रुक भी जाँय बीणाके बजातेही चंद्रमाके रथके कुरंग थकित हो जहांके तहां खडे रह गये अरु रैन बढी चकवी चकवे अकुलाने लगे कमल कुंभलाने लगे.

काम०-हे राहु मैं जन्मभर तेरा गुण नहीं भूलनेकी इस समय तुम जाय सूर्य्यका ग्रहण करो जो नित्यही आधीरात बनी रहै प्रात न होय प्रात होतेही पिया चले जायंगे. (जबहीं बीणा थमा चंद्रमा छिपगया सूर्य्यका प्रकाश हुवा)

माधो०- (आंखोंमें आंसू भरकर) हे प्यारी अब आज्ञा दीजे हम जाते हैं परमेश्वर मिलावैगा तो फिर मिलेंगे मेरा मन मधुकर तुम्हारे पंकज नैनोंको नहीं छोड सक्ता प-

रंतु राजाके कोपका भयहै अब तुम कहदोकि जाओ जैसे जीवदेहको महा कठिनाईसे छोडताहै ऐसेहीमें तुम्हारे स्नेहको छोडताहूं.

काम०- (नयनोंमें नीर भरकर) हाय भलामें अपने मुख से कैसे कहूं कि तुम जाओ कोई अपने शरीरमेंसे प्राण का निकलना कब चाहताहै.

दोहा

रसना विषपरसनकरे कहै गवन करकंत
तिन आँखियन मेरजपरे लखे चलन भावंत

(बाँह पकडे खडीहै) हे द्विजराज आज तुम्हें किसी भांतिनहीं जानेदूंगी जो तुम ऐसेही निर्दई बनोहो तौ एक कटारी और मारते जावो.

दोहा

मारिजारि करि भस्मपिय राखहु हृदयमझार
जबजी चाहै तबमलो अंगप्रेमरसडार ॥
सो० करतमुईको जाप जियतकठिनदुखदेतहो ।
अवपियकोनसराय तजसमीपविछुरनकरत २

चौपाई

तजसमीपमतिकरहु वियोगन, तुमविछुर तपियहुइहोयोगन. कंथापहारिजटाकरिकेशा वनवनफिरौं तपस्विनवेशा. मुद्राकानभस्मतनलाऊं, करकिंगरिदिनरैनवजाऊं. योगनहोय चित्त भरमाऊं, सिद्धहोयतौ माधोपाऊं, घरघरवनवनढूंढौंतोही, सोकछुकरौंमिलौजोमोही.

दोहा

खंडखंडतीरथकरों काशीकरवटदेहुं ॥
सनइच्छाकरिमरिजियों ढूंढकंततोहिलेहुं १

चौ० जानिदेजाहुविरहकेहाथा,पाँयपरोंमुहि लैचलुसाथा. अहोमीत द्विजराजबटोही,मां झधारसनि छांडोमोही. नयनबिछोहनदेखों नाहा, छांडोप्राणनछांडोबाहा.

मनोज०- मदनमोहनी देखती इस समय कंदलाकी कैसीकु गतिहोरहीहै नजीनेकी नमरनेकी

सोरठा

नयनझरैजिमिमेह देहगेहभीजैसकल
बिछुरननयोसनेह मनव्याकुलतनथरहरत

इसीदिनकेलिये कामकंदलाको समझातीथी सोदिन आज विद्यमानहै थोडीदेरका सुख जन्मभरकादुख योगी भौंरा परदेशी यह किसीकेमीत नहीं यह पराई पीरकोनहीं जानते नइनसे मिलनेका सुखनबिछुडने का दुख.

दोहा

परदेशीकीप्रीतिको सबकामनललचाय
प्यारीभारीदोषयह रहैनसँगलेजाय १

मदन०- छोडदे हाथ जानेदे क्यों अपनी जान खोतीहै (यहक ह बांह छुटायदी).

काम०- दोहा

बाँहछुटायेजातहो निबलजानकरमोहिं
हृदयमेंसेजाहुगे तबजानूंगीतोहिं ॥

(इतना कह मूर्छित हो पछाड़ खाय धरणि पर गिर गई)

मनो०- हे मदनमोहनी झटपट आ प्यारीको उठाय पलँगपर पौढायदे.

मद०- अरी इसका तौ सब शरीर स्वेत पडगया अधर सूखगये तनकतनक स्वास चल रहाहै नारी शर्द है इसके जीने का कोई भरोसा तौ नहीं दिखाई देता परंतु परमेश्वरकी लंबी बाँह है.

मनोज०- शीघ्र इसके नेत्र बंदकर पंखेसे बयारकर सेवतीके बडा गुलाबके पुष्पोंकारस इसके मुखपर छिडको गंधराज मदनबान मालतीके हार इसके हृदयपर धरो आगे ईश्वरकी इच्छा परंतु उपाय करना सार है.

मनोज०- (व्याकुल होकर) अरी यह तौ कोई घडीकी पाहुनीहै शीघ्र किसी चतुर वैद्यको बुलाओ जो इसे अच्छा करै.

मदन०- वैद्य क्या करैगा इसको कोई रोग तौ हैही नहीं यह तौ वियोगके रोगमें बेसुधि पडीहै.

मनोज०- फिर सखी जो कोई वियोगके रोगका उपचार जानताहो उसीको बुलावो किसी भांति कष्ट तौ टलै.

मद०- सखी

दोहा

करउपचार सबैरहीं तिया बिसूरि बिसूरि
बिरह भुजंगम जोडसी ताको मंत्र न मूरि

सोरठा

बिरह हलाहल खाय रोम रोम पूरण विंध्यो
मूरि न लगै उपाय जकी थकी रहिं सहचरी २

मनोज०-अरीमैं एक यत्न और करूंहूं तुम इसके धौरै से अलग नेंक हटजाओ (कानसे लग लगी माधो माधो पुकारने.).

काम०-(सखी कहांहै माधो) यह कह कामकंदला उठि बैठी सब सखियां घिर आईं.

मनोज०-हे सखी तुझे क्या हो गया क्यों दोनों नेत्रोंसे जल धारा बहारहीहै इधर उधर क्या देखरहीहै.

काम०-(सूना भवन देख) हे मनोजमंजरी मेरा जीवन प्राण कहां है

मनो०-कुछ सन्देह न करो बाहर बैठेहैं.

काम०-कहां हैं मेरे सन्मुख ला.

मनो०-मन में धीर्य्यरक्खो स्नान करने गयेहैं.

काम०-(गया नाम सुन कालदंडसे भी कठिन करालदंड हृदय में जा के लगा आपही आप) हे हृदय कठोर तू वज्रसेभी कठिन हो गया जो प्रीतम गया अरु तून फटा अरे निर्लज्ज तुझे कुछभी लज्जा नहीं आती जो ऐसे कठिन कठोर दुःख सह रहाहै जलके बिछडनेसे ताल तडक जाताहै कमल कुम्हला जातेहैं मीन अपने प्राणका त्याग कर देहैं हे पापी तू नेंकभी न फडका अरे हत्यारे हृदय तैंने प्यारेका बिछोह अपने नेत्रोंसे देखा हे निर्दई प्राण तू प्राणनाथके साथ न गया धिक्कारहै धिक्कारहै तेरे इस जीतबको तुझको तो प्यारेके बिछुडतेही टुकडे टुकडे हो जानाथा.

दोहा

प्रीत कठिन दुख देगये लेगये सम्पति सुख

हे निर्लज्जा धिक धिक तुझे रह्यो सहन को दुःख

हे प्यारे मैं नहीं जानती थी मुझे तड़पती छोड तुम ऐसे चले जाओगे मैंने तो ऐसा कोई आपका अपराध भी नहीं किया हाय यह सब मेरेही करमका दोष है किसीका कुछ दोष नहीं (यह कह फिर मूर्छित हो गई)

मदन०- दोहा

निशिचकोर शशि बिनु दुखी दुखी मीन जलछीन
त्यों कंदल नल बिन दुखी भई सकल बुधिहीन ॥

तुमचाहे कोटि यत्न करो जबतक माधो न मिलैगा इसका चित्त सावधान न होगा.

काम०- (माधोका नाम सुनि) अरी क्यों माधो माधो कर मुझे दाधो हो मुझे वैसेही चैन नहीं पडता घडी घडी काटनी भारी पडी है.

दोहा

जो दिन होय तो निशि रटूं जो निशि होय तो प्रात
ना दिन चैन न रैन सुख बिरह सतावे गात १

सोरठा

लेगये पिय सब संग सुख आनंद बटोरि कै
आली बिरह भुजंग डारि गये मम कंठमें २

मनोज०- अरी चलकर देखो तो कंदलाकी तो कुछ औरही गति हो गई नृत्य गीत चतुराई सब जाती रही खाना पीना छोड दिया दिनभर पपीहे की नाईं पिया पिया पुकारती रहे हैं क्या यत्न करें

कु०कु०- अरी तू अभी बाली भोली है तू इन बातोंको क्या जाने जिनके अंगमें बिरह प्रवेश करे है सब गान रंग उमंगको

क्षणमें भंगकर मनमें सैकडों तरंग उठातीहै अरुऐसा ढंग बना तीहै नवह जीनेका रहै न मरनेका.

दोहा

नेम चाव सुख हर्ष यश बल विद्या गुण ज्ञान
जिहि तन विरहा संचरै सब तजि होय अयान
वैद्य न जानै पीर तन औषधि होय न साधि
दिन दिन दूनी बढतहै तनमें विरह उपाधि

सोई गति कामकंदलाकीहै प्यारेके वियोगमें शरीर सूखकाँटाहो गया रोगनकी भांति वियोगन बनी पडी रह तीहै अंजन मंजन हसन बसन खान पान सब बिसराय दिया नींद भूंख लाज काजका नाम भी नरहा हरस्वासमें हायहाय का शब्द निकलताहै विरहानलकी नल विना कैसी ढींग प्रज्वलित हो रहीहै कभी कभी यह पढतीहै.

दोहा

कमल नाल विषजाल सम हार भार अहिभोग
मलय मलय जल अनल मोहिं वायु वायु को रोग
हाहा प्राणन सँगगये जब बिछुरे भावंत ।
हाथ मलै माथा धुनै चाप अंगुरिया दंत ॥

चौपाई

डरि तन मारे मन रहई, हिये पीर काहू नहिं कहई
क्षण अचेत क्षण चेत जु आवै, जनु विषलहर देह भरमावै स्वास लेत पंजर सब डोलै, हाय हाय सज्जन मुख बोलै.

दो० पीत पत्र सम रँग भयो रक्त न रह्यो शरीर

पवनपरसनहिंसहिसके डोलैगात अधीर

काम०-विरहाग्नि शरीरमें सुलग रहीहै त्रिविधि समीर इस में सहाय कारकहै पंचशार शर मार मारकर मूर्छित कर ताहै हृदय अँगीठीसेभी अधिक तप्त होरहाहै चंदन लगातेही शुष्क हो जाताहै पुष्पोंकी सेजपर जो चरण धरतीहूं तो तापसे मुरझा जातेहैं

दोहा

पियबिछुरतबिछुरेसबै उलटगयोसंसार
चंदन चंदा चांदनी भयेजरावनहार ॥
चंद्र किरण लगबालतन उठतबिरहयोंजाग
दुपहरदिनकर कर परस ज्यों दर्पणमें आग ॥

पिक मयूरोंका शब्द मदनके घावके ऊपर विषसम लगताहै गीत नाद रसकवित्त कहानी श्रवणोंको शूल सम प्रतीति होतीहै पतिबिहूनी स्त्रियोंको मदनदूनीदूनी त्रास दिखाताहै अरु हृदयपर विरहानलकी धूनी लगाताहै सूनी सेजखूनी हाथी की सदृश दृष्टि आती है। जैसे होसके वैसे माधोको मेरे पास लाओ नहींतो मेरे प्राण नहीं हे कुसुम कुमारी तैंने झूठ बोल बोलके एक वर्षसे मुझे रक्खाहै तू बार बार सौंगदे खाखाके कहतीथी कि तेराप्राणप्यारा अब आताहै

बारहमासा

सखी बारह मासगयेबीतन आये मीतलगी कहीं प्रीतकहो क्या करना।
आतीहै जीमें विषघोलघालपी मरना.

आषाढ़मास आलगा किसको कहूं रगा पियादे दगा निकलगये घरसे ।
प्रीतम प्यारे बिन जिया हमारा तरसे
उठतीहे विरहकी हूक जातातन सूक पपिहे की कूकज भी आदरसे ।
पीपी पुकार नयनों से मेघ सावरसे

दोहा

हाय पिया कैसी करी छोड़ि गये परदेश
स्वान मान भावे नहीं भई दूबरे भेश ॥
झड़० मैं कैसीकरूं पी प्यारे । नहिं जाते दुःख सहारे
जिस दिनसे आप सिधारे । चलरहे जिगर पर आरे

कवित्त

नीके हो निठुर कंत मन न लेसि धारे अंत मैं न स
य मंत से मैं केसे वर पाय हों । आसरो अवधि
को सु अब धो व्यतीत भई दिन दिन पीत भई
रही मुरझाय हों । अहो पति प्राणनाथ सांची
हों कहति एक पाय के तिहारे पाय फिर भीक
पाय हों । इकली डरी हों घन देखि के डरी हों
स्याय विषकी डरी हों आज प्यारे मरिजाय हों
मैं इकली सेजपर डरूं कैसे दुख भरूं रात दिन जरूं पड़ा
दुख भरना । आतीहे जीमें विष घोल घालपी मरना ॥१॥
सावनमें मिलके सब नार करें सिंगार तीजो त्योहार सब
मनातीहैं होहोके मगन कजली मलारें गातीहैं.
पी बिन फिरूं दरदर मारी करूं मैं क्यारी सखी तुझे सा
रीनों चे खातीहैं चहुँ ओर जोरसे घटा चली आतीहैं.

दोहा

नारी घर घर धूमसे गावें राग मलार।
झांझनकी ठोकरन्हमें होत झनन झनकार

झड० सबसारिवयां झूलाझूलें मेरे लगी वि-
रहकी हूलें। हम उसदिनो दिलमें फूलें जब क
भी खबर हर जूलें॥

कवित्त

दामिनी दमक सुरचापकी चमक श्यामघ
टाकी झमक अति घोर घन घोर तें। कोकिला
कलापी कल कूजत हैं जित तित सीकरते शी
तल समीरकी झकोर तें। स्वप्नमाहि आवन
कह्यो हो मन भावन सुलाग्यो तरसावन वि
रहज्वर जोर तें। आयो सखी सावन मदन स
रसावन सुलाग्यो बरसावन सलिल चहुं ओ
रतें॥

सब मेरा राग अरु रंग होगया भंग गया पीसंग मांग रंग
भरना। आती है जीमें विषघोल घाल पी मरना॥२॥
भादोंमें मेघ अतिबरसे मेरा जी तरसै निकलगये घरसे
पिया मेरे आली मैं डरूं देखिके घटा गगनमें काली॥
मुझेबीते वर्ष एक घडी लग रही झडी अकेली पडीघर
नहीं वाली यह विपति मुझपे इसवाली उमरमें डाली॥

दोहा

अंग सूखलकडी भयो नेकरह्यो नहिं मांस
विनादर्श पीके सखी निकस्यो चाहत स्वांस

झड० झुकरहीं अंधेरी रतियां। लगें बूंदे करद

सीछतियां। लिखलिख दुखडेकीबतियां भेजूंगीसजनपे पतियां॥

कवित्त

जहाँ तहाँ उन एन एजलजु भाँदवके चारि हू दिशा नघुमरत भरे तोयकोशो भासरसा ने नवरवाने जातकाहू भांति आने हैं पहार मानो काजरके ढोयके। घनसोंगगन छयोति मिरसघन भयोदेखिन परत मानोगयोरवि खोयके चारिमास भरिश्यामनिशाके भर मकरिमेरे जाने याहीं तेरहतहरिसोयके॥

कासदजा पीके पास पूरीकर आसहोरहूं दास पडूं तोरे चरना। आतीहै जीसें विषघोल घाल पी मरना॥३॥

आगया महीना क्वार घर न भर्तार करूं सिंगार किसपे मैं अपना मुझे सारा ऐसो आराम होगया स्वपना॥

जबयाद पियाकी आवे जिया घबरावे सेजनहिं भावे विरहसे तपना मैंने छोडा खाना अरु पीना पीही पीजपना

दोहा

घर घर पूजें न्योरते हैं पियासबनरनार देखदेखमें झुररही तुमबिन प्राण अधार

झड० यह खूबपायता आया। मुझे दूना औ रजलाया बिनपियाजियाघबराया नयनों में मेरे जलछाया॥

कवित्त

विविधिवरण सुरचापके नदेखियत मानो मणि भूषण उतारिवेके भेशाहें। उन्नतिपयोध

खरसिरिसुगिरे रहैनीके नलगत फीकेशो भाकेनितेशहैं। प्राणपति आये नेशरद ऋतु फूलिरहे आसपासकासखेतखेत चहूंदेश हैं। योवनहरणकुंभजो निउदयेते भईबर षाविरधताकेसेत मानोकेशहैं।

वाहवाहजी पिया निरदई खूब सुधिलई विपति आ छई जबसे तुम घरना आतीहै जीमें विष घोलघालपी मरना ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

कातिक में करिके अस्नान करें सबदान हमारे मानपि या नहिं आये मेरा देखिदेखिकर धूम जिया अकुलाये जो होते आजके पिया पाता सुख जिया गवनकितकि याजनेक हां छाये जने किनसो तनने पिया मेरे बिरमाये.

दोहा

दीपमालिकाकररहे घरघर अपने लोग
पियाबिना भावेनहीं छायाचित्तपेशोग

झड० मैं किसपे करूं दिवाली। घरनहींहैमे रावाली। मॅंगवाके पान अरु छाली। भरती खिलौनों से थाली।

कवित्त

आईहै दिवाली आली धूमधामनगरमाहिं प्रीतमनिरमोहीने भवलों सुधिनालीहै। सू कसूक कांटा भई तनपे जर्दई छई दई निर दईनेनई विपतिडालीहै। दिनोंरैन पापी मैंन चैनलैनदेत नाहिं अपनी भैडया कंत अलक हूं छालीहै। पातीलौन बालीघरखीलनखि

लौना एकबालम विदेश मेरी काहेकी दिवालीहै

सखीघरनहिंमेरा सजन सूनालगे भवन जबसे किया गमन आये घर फिरना आनीहै जीमे विष घोलघाल पी मरना ॥५॥

जिस दिनसे लगा अयैनसताना मे न चितको नहिंचैन मेरे दिनराती पडासूना हमारा भवन दिया नहिं बाती.

आदर्शनदीजे कुमर रही तुझे सुमरबाली तेरी उमर ध धकती छाती मैंमल बाठीसी फिरू विरहकी माती.

दोहा

सीतकाल पडनेलगा अतिउजियालीरैन
प्रीतम प्यारे तुम बिना नैक नचितको चैन

झड० सौतनियासौतनने आली।कुछ ऐसीमोहनी पढडाली॥ रमरहे वहीं परबाली।मेरीखबर आजलौंनाली

कवित्त

बरसै तुषारवहै शीतलपवन अतिकंपमान उरक्योंहूं धीरनाधरतुहै रातिनसिरातिसरसा तिविथाविरहकी मदनअरातिजोर यौबन करतुहै माणनाथश्यामहम धनहैं तिहारीहमें मिलौ विन मिलै शीतपारनपरतुहै।औरकी कहाहै सविताहू शीत ऋतुजानि शीतकोसतायो धनराशिमें परतुहै।

अब लीजो पिया मेरी खबर न आता सबरदुःखहैज बरनैनहुएझरना आतीहैजीमें विषघोलघालपीमरना ६

सखी पूस पडनेलगी शारदी छई तनजरदी विरहने

गरदी मचाई तनपै। दे दरश सजनमैं बैठी जानरवोवनपै

मैं मरूं विरहकी मारी होगई आरी जाऊं वलिहारीतेरे वोलनपै। पड़ी विपतें हजारों इसवाला योवनपैं

दोहा

शीतपियारेमीतविन करत अनीत अपार
जीत लिये सब अंगइन होत देहकेपार ॥

झड़० मैं इकली सेजपै सोती। आंखियों से चुवै जैसे मोती॥ दिनरात पडीहुई रोती। अँसुवोंसे मुरवडेको धोती

कवित्त

शिशिर तुषारके वुरवारसे उरवार तुहे सबी तेहोत सुन्नहाथपाँय ठिरिके। घोस की छुटाईकीवडाई अरनीन जाय प्राणपतिपाई कछु सोचिके सुमिरिके। शीतनेसहस करसहसे चरण व्हैके ऐसे जात भाजितम आवतहै घिरिके। जोलौं कोककोकीको मिलततौलौंहोतरातिकोक अधवीचहीतेआवतुहे फिरिके ॥

प्रीतमसे लगरही लगन सूनामेरा भवन नआये सजन मुझको दिये परना आलीहे जीमें विषघोलघालपी मरना ॥७॥

आगया महीना माहन आये नाह उठे तनदाह विरहने भूनामैं मारे शीतके हुई ऐंठकर जूना

विन पिया रहूंवे होश बैठी खामोश तनमें नहिं जोशहुवा दुरव दूना॥ नहिं भाता मुझे वसंत घर मेरा सूना.

दो० वालभालसीलगतहै दिरवान मुझे वसंत

लइये मालन उसी दिन जब घर आवे कंत

झड० कटे बर्फ पडे अति पाला। हुवा सूख सारा तन काला। मैंने कुछ नहिं देखा भाला। यूंही चला जोबना वाला॥

कवित्त

लागेन निमेष चारि युग सों निमेष भयो कही नवनति कछू जैसी तुम कंत की। मिलन की आसते उसास नाहिं छुट जात केसे सहों सासना मदन मय मंत की। बीती है अवधि हम अबला अवधि ताहि बाधिकहाले हो दया कीजे जीव जंत की। कहियो पथिक परदेशी सो कि धन पीछे व्है गई शिशिर कछु शुधि है वसंत की॥

पिया जल्दी दरश अब दीजे योवन मेरा छीजे आके सुधि लीजे कीजे बेदरना। आती है जी में विष घोल घाल पीस रना ॥८॥ ॥८॥

फागुन में राग अरु रंग बजें मिरदंग खड करहे चंग होरही होली- फिरें सखियां झूमती भरें गुलाल नझोली.

कोई मारे रंग की पिचकारी देत कोइ तारी कोई रंगे सारी रंगे कोइ चोली। छिड कन को किसी ने केशर कुम्कुम घोली.

दोहा

पिया बिना भावै नहीं मुझे राग अरु रंग
बौराई सी फिरत हूं खैंचो नेपिये भंग

झड० सखी उडें अबीर गुलाले। होर ही जसीन रंग लाले। खेलें हैं होली मतवाले। पडे कंत सों तके पाले॥

कवित्त

छायरह्योराशिरंगगायरहींनारीसबअबि
रऔगुलालवालभेरफिरैंझोलीमें तकत्तक
पिचकारीनारीमाररहींसाजनकेंसाजनपि
चकारीमारैंप्यारीकीचोलीमें ॥ भोनभोनइं
दुमुरवीकोकिलसीकूकरहींशालियामफू
लझरैंमीठीमीठीबोलीमें हाथमेंअकेलीप
डीमच्छीसीतलफरहीबालमबिदेशआग
लगोऐसीहोलीमें १

तेरे पइयां पडूहरवारी लेजा पिचकारी रंगसे मेरी प्यारी
भीजे चादरना आतीहैजीमें विष घोलघालपी मरना ॥१॥
सरवी चैतमास बन रिवला पियानहीं मिला जिगरमेरा
छिला करूमें क्यारी सरवी नहीं किसीका दोष कर्मकी
रव्वारी
में कहांतलक दुरव भरूं अकेली डरूं कबतलक करूं आ
ह अरु जारी कियापीसे बिछोहा इन किसमत हत्यारी

दोहा

प्रीतिनिबाहन कठिनहै कोई मतिकरियोप्रीति
मरजानो तौसहजहै कठिन प्रीतिकीरीति ॥
झड० जो ऐसा समझती प्यारी। प्रीतमकोरु
ठातीनारी मैंजाऊं तेरीबलिहारी। प्यारेसेमु
झे मिलारी ॥

कवित्त

लाललाल पातनसे वृक्षलताछायरहीमह
करहेवनउपवनपुष्पनकीसुवासते मंदसं

दगंधसनी पौन भौन वहे है चमंके चहुँ ओर मुकर
सूर्यके प्रकाशते शालियाम ग्राम ग्राम धूमरा
मनोमीकी मेरा मन कपक पातक ठिन का मना
सते प्रीतमन आये तू पहिले ही आयगये।
अब भी चलो जाय सखी कहदो मधु मासते १
हे मुझे तेरी परतीत मिलादे मीत करके तू मीत मेरा दु
खहरना। आती है जीमें विष घोल घोल पी मरना ॥१०॥
जिस दिनसे लगा वैशाख त्यागदी दाख घोलकर राख
रात दिन पीना बिन पिया सखी धिक्कार हमारा जीना.
अवलिया मैंने वैराग लिया घर त्याग फिरूं वनबाग हा
थमें बीना ॥ पिंडा भ भूतका झोलीमें धरिलीना.

दोहा

जोगन बन बन बन फिरूं पिय मिलनके काज
तुलसीकी माला लई त्याग सकल कुल लाज
झड० मैं घर घर अलख जगाऊं। प्रीतमको ढूं
ढकर लाऊं दिल इसी तरह बहलाऊं। पीऊं रा
ख अन्न नाहिं खाऊं ॥

कवित्त

कीधों मोर शोर तजि गये कहूं अंत भाज दादुर
दुर गये कहां बोल तन ये दई। कीधों पिक चात
क चकोर कहूं मारि डारे कीधों बकपांति कहूं
अंतरगत ह्वै गई। झींगर झिंगोरे नाहिं कोकि
ल पुकारे नाहिं पलाशनके वृक्षोमें कौने आग
सी दई ॥ जारि डारे मदन मरोरि डारे मोर सव
जूझि गये मघके धौं दामिनी सती भई १

यह सच्च वात मैंने कही जान तूसही छाती मेरी दही तुझसे अंतरना आताहै जीमें विषघोल घाल पीमरना ११
सखी ज्येष्ठ महीना आयानैनेंजल छायादूनामुझे तायापडै अति गरमी अव ऐसे हुए असोच सजनवे धरमी
मेरे मनको लगावै राग जाऊं कहां भाग सकल सुख त्यागलेलीवे शरमी तन सूखकांटासाहु आगई सब नरमी

दोहा

जरत धरन तारे गगन विकल भयो तनजाय
तनशीतल जवहोयगो दरशन दें पिय आय
झड० सब पूजें दशहरा नारी ओढें हैं कसुंभीसारी मैं मरूं विरहकी मारी वालम बिर मे कहीं जारी

कवित्त

वृषको तरुण तेज सहसो किरणकरि ज्वा
लनके जालविकरालवरषतहैं नचातिव
रणजगजरतझर निसीरीछाहकोपकर
पंथीपक्षीविरमतहैं अग्निपुंजनैकदुपहरी
ढरतहोत धमकाविषमज्योंनपातरवरक
तहैं मेरेजानपोनासीरीठोरकोपकरकौनो
घरीएकवैठकहूं धामैवितवतहैं ॥१॥

सब करैं गंगाअस्नान देरहीं दान लगाया ध्यानजाय नहिंबरना । आतीहै जीमें विषघोल घाल पीमरना १२
(यह कह लंवी स्वासलेवे सुधिहो गई)

कुसु०- हे मदनमोहनी अव कुछ ऐसायत्न कर जो प्यारीकेप्रा-

णबचें जो प्यारीहीके प्राण नहींतो हमारे प्राण कहां चलो किसी ज्योतिषीसे पृष्णकरें (कुसुमकुमारी अरु मदनमोहनी दोनों जातीहैं अरु सहज सहजमें यवनिका पतित होतीहै)

इतिश्रीमाधवनल कामकंदला नाटक शालिग्राम वैश्य कृत्त द्वितीयो अंक समाप्तम्

तीसरा अंक

स्थान बनखण्ड

(माधवनल अकेला बनमें भटकता फिरताहै अरु मुखसे बारस्वार यही शब्द निकलताहै हाय कामकंदला हाय कामकंदला) (मैंनातोता वृक्षपर बैठे वार्त्ता करतेहैं).

शुक०— मैना यह कौन रोगी वियोगीसा हमारे घोंसलेके नीचे पडा हाय हाय कर रहाहै नजानिये इसपर क्या विपतिहै.

शारि०-हे शुकराज इसकी विपत्तिका वृतांत कुछ बूझोमति इसका कोई परम प्यारा मित्र बिछुड गयाहै यह बारंबार रोरोकर ठंढे ठंढे स्वास भरताहै अरु दोनों हाथ मलमल कहताहै हाय कामकंदला हायकामकंदला जब बहुत हाय हाय करनेसे हृदयमें बिरहकी आग भडक उठती है तब नेत्रोंके जलसे उस बिरहकी ज्वालाको बुझाता है परंतु वह ज्वाला तो ज्वालाकी भांति दूनी दूनी प्रचंड होती चली जातीहै उसे कौन बुझासके बिनाइसके मित्र हे प्राणनाथ मुझसे इसका यह कठिनदुःख देखा नहीं जाता अरु जबसे यह आयाहै न कुछ खायाहै न पियाहै न सोयाहै। रोबैही रोबैहै न कुछ अपनी कहैन औरकी सुनै इसे ऐसा बिरहने सतायाहै सारातन सूख कर लकडी होगयाहै इतनेपर भी इसने अपनी प्यारीका नाम नहीं छोडा सच्ची लग्न इसीका नाम है.

अरु इसमें एक और बडा भारी गुणहै जिस समय वीणा बजाताहै सब बनके मृग इकट्ठे हो मतवालेसे इसके चारों ओर खडेहो जातेहैं अरु सबके हृदयसे बिरहकी लपटें निकलने लगतीहैं वीणाक्याहै मोहका जालहै.

जब यह वियोगी अपनी प्यारीका चित्तमें चिंतवन करताहै मानो सच्चा योगी अपने योग बलसे ध्यान कर रहाहै.

हे शुकदेव इसके रूपकी तो छटा देखो यह दूसरा कामदेवहै.

दोहा-अंगअथाहअलेखगति बिरहस

मुद्र अगाध। इसका थिरह वियोग लख भूला
धर्म समाध ॥

सत्य तो यह है कि विरह का वारीश महा अगम है लाखों मनुष्य डूब डूब कर मरगये परंतु किसीने थाह न पाई ब डे बडे ऋषि मुनि अनेक अनेक उपाय कर कर हारगये परंतु किसीने पार न पाया जिनको गगन अरु रसातल के जानेकी गम थी

जिसपर एक बारभी विरहकी दृष्टि पडगई फिर वह न जिया और जो जिया भी तो उनमत्त बनबन वन इस बटो ही की समान धूरि बटोरता फिरा जिसके चित्तको तुच्छ भी विरहकी चिनगारी लगगई उसके सब शरीरको जलाकर छार करदिया.

उसी आगके प्रभावसे सिंह व्याघ्र वियोगीके पास नहीं आसक्ते वही इस वियोगीके तनमें भडकरहीहै जिस वृ क्षके नीचे बैठताहै

हे शुक नंदन जो सच्चे वियोगी हैं उनकी समता योगीभी नहीं कर सक्के क्योंकि यह सदा दुःख सुखको समान मा नतेहैं

सोरठा

शीत न गनै अजान धाम न जानै रैन तन
जल थल एक समान बन उपबन डोलत नगर

इस समय इसकी सहाय कौन कर सक्ता है हाय जगत्में ऐसा उपकारी कोई नहीं रहा जो इसकी विपत्तिको मिटावे

शुक०- हे प्यारी ऐसा उपकारी अरु परम हितकारी विपत्तिका दूर करनेवाला राजा विक्रमादित्यसे अधिक दूसरा दृष्टि नहीं

आता यह विदेशी उज्जैन जाये तो इसके सब मनोरथ पूर्ण हो जांय (इतनेमें प्रातःकाल हो गया दोनों पक्षी उडगये)

माधो०-(आपही आप) विरहकी आग तो शरीरको जलाये डालतीहै जोमैं इसी वनमें भ्रमता भ्रमता मरगया तो फिर कामकंदला किसी भांति न मिलेगी अब जगमें किसी परोपकारीको ढूंढना चाहिये जो मुझे प्राणप्यारीसे मिलादे परंतु ऐसे नर जगत्में थोडे होते हैं जो पराये हेत अपना तन देदें.

दोहा

दयाकरन संकटहरण जे प्राणी मतिधीर
तिनकी कलिउत्तम क्रिया जे रखें परपीर ॥

सोरठा

कोटियज्ञ अनुसार एक अंगरक्षाकरन
करैं जे पर उपकार तिनको यश तिहुं लोकमें

(यह विचार वहांसे चलताहै अरु मार्गमें यह कहताजाताहै) कलियुगमें स्त्रीका वियोगी कौन नहुआ बडे बडे राजा महाराजा रामचंद्र भरथरी नल वन वन भटकते फिरे ऐसा कौनसा शरीर है जिसने कामदेवके बाण न खाये मैं किस गिन्तीमें हूं.

दुखियोंके सहायक अरु आनंद दायक श्रीरघुनायक थे सो नहीं रहे परंतु आजदिन विक्रमादित्यसे बढकर कोई जगत्में दृष्टि नहीं आता पराये दुखका दूर करनेहारा अरु सर्व सुख दाता.

दोहा

साहसयश परदुखहरण कोटिकोटि करलेय

शंकवंधीमैंजवगनौ नेहदानमोहिदेंय ॥१॥
उपकारीजवहींकहीं चलैंसयनलैसंग
कंदलमोहिदिवावहीं कामक्षत्रकरभंग २
(ऐसे आपही आप वक्ता झक्ता माधवनलउज्जैनि नगरी को जाताहे अरु यवनिका गिरतीहे).

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक शालिग्रामवैश्य कृत तृतीयो अंक समाप्तम् ॥३॥ ॥३॥

चौथा अंक

प्रथम गर्भांक

स्थान उज्जैन नगर शिवजीका मन्दिर

(माधवनल उज्जैन नगरको देखताहे अरु मनही मन मग्न होताहे).

(आपही आप) अहाहाहा धन्यहैयह पुरी अत्यंत शो-

भायमान सुखनिधान जिसके चारों ओर कैसीकैसी म-
नोहर पुष्पवाटिका बन रहीहैं जिनमें सुंदर सुंदर सुमनग
नके मोहने वाले खिलरहेहैं चंपा चंबेली मोगिया मदनबा
न गंधराज मालती चंद्र किरण चांदनीकी सुगंधनमोल
पटें कीलपटें मंदमंद पवनके संगल्हराती चली आतीहैं
तालोंमें अनेक अनेक रंगके कमल खिलरहेहैं तिनपर
भौंरोंके झुंडके झुंड फिररहेहैं आंबोंके वृक्षोंपर कोयलकू-
करहीहैं मोरमन भावनी सुहावनी बोलियां बोलरहेहैं प
पीहे पिया पिया कर बिरही जनोंके हृदयको छोलरहेहैं न
डागोंमें ठंढेठंढे निर्मल नीर झकोल रहेहैं इंदारोंपर रहटए
रोहे चल रहेहैं मालीमोंके मीठे स्वरोंसे मलारें गाय गाय
प्राणीमें रस घोल रहेहैं.

ऐसी अनोखी चोखी सुभग शोभा देख मेरामनमोहि
तहोगया ।

दोहा

कलशबिंबमणिमुद्रिका ध्वजपताकफहराय
रावरंकनहिंलखपरत सुखतेंबोलसबखाय १
कहुंपंडितचर्चाकरैं कहुंकाव्यकहुंवाद
कहुंमल्लठाढेलडैं कहुंगीतकहुंनाद २
कहुंनृत्यनाटककहुं कहुंअपसरागान
लखलखछबिउरबसितनकीहोतमियाकोध्यान३

(उस समय तनमनकी सुरति भुलायगई)

विरहानलभडकनलगा हगनचलोबहुवारि
रोयरोयलागोपढन यहदोहेदोचारि ४
निशिननींदनहिंदिवससुख व्याकुलहोतशरीर

कौनसुनै कासों कहों अंतरगतिकीपीर ५
द्दगपुतरिनमें पियाकी मूरतिरहीसमाय
जितदेखौंतितसोतिया पलकनइतउतजाय ६
निशिवासर आठोंप्रहर क्षणविसरैनहिंमोहिं
जहँजहँनयनपसारिहौं तहँतहँदेखौंतोहिं ७

(आगे जाके देखातो एक अति सुंदर शिवजीका मंदिर है साक्षात् तहां शिव पार्वती विराजमानहैं उनको दंडवत कर यह स्तोत्र पढनेलगा.

शिवस्तोत्र

ओंनमो भवाय भव्याय भावनायोद्भवायच
अनंतवलवीर्याय भूतानां पतये नमः १
संहर्तेचपिंगाय अव्ययायव्ययायच
गंगासलिलधाराय आधारायगुणात्मने २
त्र्यम्बकाय त्रिनेत्राय त्रिशूलवरधारिणे
कंदर्पायहुताशनाय नमोस्तुपरमात्मने ३
नमोदिग्वाससेनित्यंकृतांतायत्रिशूलिने
विकटायकरालाय करालवदनायच ४
अरूपाय स्वरूपाय विश्वरूपायतेनमः
कंटकटायरुद्राय स्वाहाकाण्यवेन्नमः ५
सर्वप्रणतदेहायस्वयंच प्रणतात्मने
नित्यंनीलशिखंडाय श्रीखंडाय नमोनमः ६
नीलकंठायदेवाय चिता भस्मांगधारिणे
त्वंब्रह्मासर्वदेवानांरुद्राणांनीललोहितः ७
आत्माचसर्वभूतानां सांख्यैः पुरुष उच्यसे

पर्वतानांमहामेरुः नक्षत्राणांचचन्द्रमाः ८
ऋषीणांचवशिष्टस्त्वंदेवानावासवस्तथा
ॐकारस्सर्वदेवानांश्रेष्टंसामचसामसु ९
आरण्यांनापशूनांचसिंहस्त्वंपरमेश्वरः
ग्राम्याणांऋषभश्चासिभगवान्लोकपूजितः १०
सर्वथावर्तमानोपियोयोभावोभविष्यति
त्वमेवतत्रपश्यामिब्रह्मणाकथितंयथा ११
कामक्रोधश्चलोभश्चविषादोमदएवच
एतदिच्छामहेबोधुंप्रसीदपरमेश्वर १२
महासंहरणेप्राप्तेत्वयादेवकृतात्मना
करंललाटेसंविध्यवन्हिरुत्पादितस्त्वया १३
तेनाग्निनाततोलोका अर्चिभिस्सर्वतोवृताः
तस्मादग्निसमाह्येते वहवोविकृताग्नयः १४
कामः क्रोधश्चलोभश्चमोहोदंभउपद्रवः
यानिचान्यानिभूतानिस्थावराणिचराणिच १५
दह्यन्तेप्राणिनस्तेतुत्वत्समुत्थेनवन्हिना
अस्माकंदह्यमानानांत्राताभवसुरेश्वरः १६
त्वंचलोकहितार्थायभूतानिपरिषिंचसि
महेश्वरमहाप्राज्ञप्रभोशुभनिरीक्षक १७
आज्ञापयवयंनाथकर्तारोवचनन्तव
भूतकोटिसहस्रेषुरूपकोटिशतेषुच १८
शंकरायवृषांकायगणानांपतयेनमः
दंडहस्तायकालायपाशहस्तायवैनमः १९
वेदमंत्रप्रधानायशतजिव्हायवैनमः
भूतंभव्यंभविष्यंचस्थावरजंगमंचयत् २०

तवदेहात्समुत्पन्नंदेवसर्वमिदंजगत्
अन्तंगंतुनशक्तास्मोदेवदेवनमोस्तुते २१

(माली आताहै)

माली॰-हे द्विजराज आप कहां विराजतेहैं.

माधो॰-उदासीनहूं योगी वियोगीका घर कहां जहां पडरहे वहीं स्थानहै यह तो कहो यह मनोहर पुष्पवाटिका किसकीहै.

माली॰-यह बाग महाराज वीरविक्रमाजीतकाहै.

माधो॰-हमको भी राजा वीरविक्रमाजीतका दर्शनहो सक्ताहै.

माली॰-हां महाराज हो सक्ताहै.

माधो॰-किस समय अरु किस भांति उनका दर्शन होगा.

माली॰-प्रातःकाल नित्य इस मंदिरमें शिवजीका पूजन करने आतेहैं अरु सबके मनका मनोर्थ पूर्ण करतेहैं

माधो॰-तो मेरा मनोर्थ भी पूर्ण होगा.

माली॰-निःसंदेह इसमें कुछ संशय नहीं.

(माधो मालीकी बात मान मनमें धीर्य आन यह श्लोक महादेवके मंदिरके द्वारपर लिख बनको चलदिया).

श्लोक

किंकरोमिक्कगच्छामिरामोनास्तिभूतले
नारीविरहजंदुःखमेकोजानातिराघवः ॥१॥

दोहा

कहाकरौंकितजाउहौं राजारामनआहि
तियवियोगसंतापसब राघवजानतताहि १

(माधो जाताहै अरु राजा वीर विक्रमादित्य शिवालय पर

आतेहैं).

राजा०- पुजारी.

पुजा०- हां अन्नदाता.

राजा०- हमारी पूजाकी सामग्री लाओ.

पुजा०- पृथ्वीनाथ चंदन अक्षत धूप दीप नैवेद्य पुष्प गंगाजल सब वस्तु उपस्थित है.

राजा०- ऊपरको देखकर पुजारी यह श्लोक मंदिरके द्वारपर किसने लिखाहै हमारी नगरीमें ऐसा कौन दुखारी है.

माली०- महाराज एक परदेशी ब्राह्मण वैरागीका वेष कियेहाथ त्रिशूल अरु बीणा लिये यहां आया तोथा परंतु यह मुझे सुधिनहींकि किस समय यह श्लोक लिखा अरु कहां चला गया.

राजा०- पुजारी शीघ्र उसे ढूंढकर लाओ में स्थानपर जाकर और लोगोंकोउसके ढूंढनेके लिये भेजूंगा परंतु तुम भी ढूंढनेमें अत्यंत उद्योग करो क्योंकि तुमने उसे भली भांति देखा है (यह कह राजा वीरविक्रमादित्य राजमंदिर को जाते हैं अरु यवनिका गिरतीहै).

इतिश्री माधवनल कामकन्दला नाटक शालिग्रामवैश्यकृत प्रथमोगर्भांक सम्पूर्णम्

द्वितीयगर्भांक

स्थान राजा वीर विक्रमाजीत की सभा

(सब सचिव सेनापति सभामें बैठेहैं राजावीर विक्र
मादित्य आते हैं).

राजा०- आज मैं शिवालय में शिवका पूजन करने गयाथा दे
खातो एक श्लोक शिवालय पर लिखाहै उसको पढकर
मेरा चित्त अत्यंत चकित हुवा ऐसा कौन मनुष्य हमा
रे नगरमें है जिसपर ऐसी भारी विपत्तिहै अवतुम सव
सज्जनोंको यह आज्ञा दीजातीहै शीघ्र जाओ अरु जहां
कहीं वह वियोगी मिले उसका ठिकाना लगाओ जो को
ई उस विरहीको ढूंढकर मेरे पासलावेगा उसको एक
लाख रुपैयेका पारितोषिक दिया जावेगा जवलौं उस
वियोगीको अपने नेत्रोंसे न देखलूंगा तवलौं भोजन
नहीं करूंगा यह मेरी सत्य प्रतिज्ञाहै.

मंत्री०-हे दीनदयाळ आप थोडीसी बातके लिये इतना संदेह क्योंकर तेहो मैं अभी बडे बडे चतुर वसीठों को ढूंढने के लिये भेजताहूं.

राजा०-अच्छा शीघ्र भेजो.

मंत्री०-हे वसीठोमें आज तुम्हारा उद्योग देखूंगा तुम कैसे परिश्रमी अरु चतुरहो जो कोई उस श्लोक लिखनेवाले उदार का खोज लगावेगा एक लक्षका पारतोषिक पावेगा.

वसी०-चलो भाई प्रथम वन उपवन ढूंढें.

दूस०व०-अच्छा भाई तुम वन उपवनको जाओ हम तो पहिले नगरके घरोंमें ढूंढेंगे.

वसी०-अरे मूर्ख तू क्या जाने उदासी भी कहीं नगरमें आतेहैं उनको तो सदा वनही अच्छा जान पडताहै.

राजा०-हे भानमती ज्ञानमती तुम दोनों ढूंढने जाओ तुम्हारी बुद्धि वियोगी पर भली भांति पहुंचतीहै.

दोनों०-अच्छा महाराज आपका राजसमाज परिपूर्ण रहे हम दोनों जातीहैं अरु उस वियोगीको ढूंढकर अभी लातीहैं यह क्या विचारहै हम आकाश अरु पाताल से मनुष्यको ढूंढकर ला सक्तीहैं आप संदेह न कीजे. (दोनों गईं).

भान०-चलो सखी प्रथम शिवालयमें चलें वहीं ठीक ठीक ठिकाणा लगेगा परंतु तू मालती उद्यान ओर ढूंढती आ.

ज्ञान०-सखी यहां अधिक परिश्रमका कामहै जो वह उदासी मिलगया तो पारतोषिक भी पूराही मिलेगा.

भान०-यह बात तो तेरी सब सत्यहै परंतु मैं भी अपने करतव्य

मैं गई न करूंगी.

ज्ञान०- प्रथम मैं विहारकुंज में गई फिर चंदनवन ढूंढा केश रवाटिका अरु मोतीबागका एक एक भवन देखा चंपावाडी अरु मालतीलताको भिन्न भिन्न कर खोजा जब कहीं उसका खोज न लगा तो हारकर तेरे पास आई हूं.

ज्ञान०- देखतो वह कौन मनुष्य अशोक वाटिकामें अशोक वृक्षके नीचे शोकवंतसा बैठा कामकंदला कामकंदला रट रहा है वोही तो नहोय.

भान०- सखी लक्षणोंसे तो एही विदित होताहै कि वोही है क्योंकि-

दोहा

तन दुर्बल आँखियां सजल गहबर लेत उसास
चित उचाट तन चटपटी रंचक रक्त न मांस ॥१॥
लोचन गोरोचन सरस आनन हरद समान
तन दुर्बल सांसनि विपुल विरहीजन सो जान २

ज्ञान०- चलो सखी उस्से कुछ वार्तालाप तो करें होन होयह वोही हो.

भान०- बहुत अच्छी बातहै मेरी इच्छाभी यही है.

ज्ञान०- सोरठा

हे बिरही द्विज देव कृपा दृष्टिकरि देखिये
कहि समझावो भेव जिहिं दुख सब जग सुख तज्यो

हे उदासी किसके वैरागमें सब सुख संपतिको त्याग वैरागी वन वन वन घूमते फिरते हो अपने हृदयकी पीर वर्णन करो शरीर दुर्बल बना रक्खाहै नेत्रोंसे नीरकी

नदी वह रहीहै तनछीनहै मुख मलीनहै शोकके समुद्र मेंडूब रहेहो इसका क्या कारणहै.

माधो०-हे वाला तू कौनहै जो हमारी विपत्तिका वृत्तांत बूझ तीहै.

ज्ञान०-दुखीका वृत्तांत कोई दुखियाही बूझेहै.

माधो०-नेत्रोंमें जल भरकर हे वाला जवसे कामकंदला प्यारी इननेत्रोंसे न्यारीहुईहै तवसे खानपान निद्रा सुख सव जाता रहा पराई पीरको वोही जानताहै जिसके मनमें पीर होतीहै.

ज्ञान०-हे भानुमती मुझसे इस वियोगीकी विथासुनी नहींजाती अरु खडा भी नहीं हुवा जाता इसकी विरह भरी वातें सुन सुन मेरा हृदय भरा आताहै अरु रोमांच खडे हुए जातेहैं.

(गदगद कंठसे वोली)हे विप्रनगरको पधारिये)

माधो०-क्यों किसकारण हमको नगरमें लिये चलतीहो

ज्ञान०-हम राजा वीरविक्रमाजीतकी दासीहैं तुमनें जो शिवालयमें श्लोक लिखाथा उसको देख राजा वडे दुखीहुए उसी समयसे राजाने राजकाज छोड दियाहै अरु यह प्रण कियाहै विना उसके देखे अन्नपानीन खाऊँगा सैंकडों प्रतिहार तुमको खोजते फिरतेहैं अरु हमको भी तुम्हारेही ढूंढनेके लिये भेजाहै अव आपकृपाकर के शीघ्र राजाके पास चलिये परमेश्वरने चाहा तो राजा तुम्हारे मनका मनोर्थ पूर्ण करेगा.

माधो०-हे वाले चलोमैं तुम्हारे संग चलताहूं.

(दोनों दूतिका माधवनलको साथले राजावीर विक्र-

माजीतकी सभामें आतीहैं अरु यवनिका गिरतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक द्वितीयोगर्भा क सम्पूर्णम्

तीसरा गर्भांक

स्थान राजा वीर विक्रमाजीतकी सभा

(राजा सभामें विराजमानहैं माधवनल हाथमें त्रिशूल कांधेपर वीणा धेरे दूतिका ओंके संग राजाकी सभामें आताहै अरु उसके रूपको देख सब सभाके लोग चकित होतेहैं).

भान०–हे पृथ्वीनाथ यह वोही वियोगी ब्राह्मणहै जिसने शिव मंदिरमें श्लोक लिखाथा आपकी आज्ञानुसार सभामें विद्यमानहै.

राजा०- हे द्विजदेव प्रणाम.

माधो०- पृथ्वीनाथकी जय होय.

राजा०- आसनपर विराजिये (माधवनल बैठताहै)
कोशाधीश भानमती ज्ञानमतीको एक लक्ष लदेदाकोष
से देदो.

राजा०- हे द्विजदेव शिवके मंदिरपर श्लोक आपहीने लि-
खाथा.

माधो०- हां महाराज वह वियोगी मैंहीहूं.

राजा०- देखो मंत्री इस ब्राह्मणका शरीर विरहानलने कैसा
दग्ध कियाहै इस विरहकी आगनें लक्षों मनुष्योंके तन
जार जार छार कर दिये (अहो वियोग तुझको वारंवार
नमस्कारहै.)

मंत्री०- हां पृथ्वीनाथ सत्यहै यह वियोग बुरी वस्तुहै.

राजा०- हे विप्र मेरे लिये जो आज्ञाहो सो कार्य करूं धन्यहै.
मेरा भाग्य जो तुमने मुझको दर्शन दिया प्रथम तो
आप अपना नाम ग्राम वर्णन कीजे फिर वह इतिहास
कहिये जिसके नेहमें देह गेहका सब सुख संपत्ति
त्याग वैराग लिया ईश्वर आपकी आशा पूर्ण करैगा.

माधो०- हे राजन् माधवनल मेरा नामहै गंगातट पुष्पा-
वती नगरीका निवासीहूं चारवेद षट शास्त्र अष्टादश
पुराण सांगीत सामुद्रिक ज्योतिष कोक काव्य पिंगल
धर्मशास्त्रका वक्ताहूं चौदह विद्या चौंसठ कलाका
जान्नेवालाहूं.

सोरठा

सबगुण अवगुण होय करताजबनिफलकरै

चले न चतुर इकोय होय वही जो विधि रचा

पुष्पावती नाम एक नगर है गोविंदचंद्र वहांके राजा का नाम है वडा ज्ञानी अरु विवेकी है विधिकी गतिसे विवेकी वन मुझे अपने नगरसे निकाल दिया तवमें अति उदास हो कामावती नगरीमें पहुंचा तहां कामसेन नाम राजा पूर्ण प्रतापी चौदह विद्या निधान सकल गुण खान परम पुण्यात्मा और वडा धर्मात्मा है उस नगरमें एक कामकन्दला नाम वेश्या रूप गुण सम्पन्न चौसठ कलामें प्रवीन है उसके रूपका चमत्कार देख सव गुण वुधवल चतुराई को विसार यह खंजन रूपी नेत्र उसके रूपके जालमें फंस गये सो चातुरपातुर एक क्षणको चित्तसे नहीं विसरती आठ प्रहर उसीका ध्यान रहता है ऐसा सुंदर रूप विधाताने उसे दिया है कौन वर्णन करसके वह मृगनैनी नेत्रोंमें पैठकर मेरा मन निकालकर ले गई अरु मेरे नेत्रोंने उस मनोहर मूर्तिको हृदयमें वसालिया है इसी आसरेसे यह प्राण देहसे नहीं निकलते कि प्यारीकी मनमोहनी मूर्ति हमारे निकट विद्यमान है अव वारंवार आपसे यही प्रार्थना है जो तुमसे हो सके तो कामकंदलाको मंगादो अरु जो यह काम आपसे नहो तो निषेद करोमें और ठौर याचना करूं.

(ब्राह्मणकी वात सुन राजाका चित्त वहुत चकित हुवा अरु अचंभेमें आगया है परमेश्वर ऐसे ऐसे मनुष्य भी जगत्‌में विद्यमान हैं).

राजा०- अहो विप्र जगत्‌के पूज्य सर्वगुण सम्पन्न रूपरा

शि त्रिभुवनके मोहन वशीकरण तुमहो तुमको कौन वशकर सक्ताहै यह मन माणिक सर्व शक्तिमान परमात्माके ध्यान करनेके योग्य था सो तुमने परायेहाथ डालदिया उसके वियोगके वशमें पड सुखको त्याग दुःख ग्रहणकिया इसमनका हृदयमें वासहै नेत्र सुख श्रवण इनकारोंकना अवश्य उचितहै.

माधो०—हे राजन् यहमन जो अपने वशमें होतौ कुछकिया जाय यहतौ दुष्ट बडा बलिष्टहै नेत्रढीठ इस्के वसीठ हैं मनको दूसरेके जालमें डाल आपही व्याकुल हो जलकी धार वहातेहैं जबसे कामकंदलाको देखा है तनमनकी सुधिनहीं मित्रके वियोगका महा कठिन शोकहोताहै जिसको मित्र वियोगका दुख व्यापा होगा सोई जानताहै.

राजा०—हे ब्राह्मण तुम ऐसे पावन पवित्र हो वेश्या कासतसंग करतेहो तुम्हारी पूजा तौ जगत् करताहै तुम गणिकाकी पूजा करते हो वडे आश्चर्यकी बातहै जबतक गांठमें द्रव्यहै तबहीलौं वेश्याकी प्रीतिहै अंतको यह वैरीसे अधिक वैरी किसीकी मीतनहीं यह कनेरके पुष्पके समतुल्यहै रूपरंगसब सुंदर परंतु सुगंधका नामभी नहीं अरु इनके मिलनेसे अत्यंत हानिहै.

कवित्त

कायासों कामजात गांठहूंसों दाम जातहु
यशको नामजात रूपजात अंगनै,उत्तमस
व कर्मजात कुलकेनिजधर्मजात गुरुज

नकी शर्म जात अपने चित भंगते। रागरं
गरी तिजात ईश्वर सों प्रीति जात सज्जन
सों प्रतीति जात मदन की उमंगते। सुरपुर
को वास जात भक्ति को निवास जात पुण्य
को प्रकाश जात गणिका के संगते ॥१॥

विदू०—यह बात तो हमने भी बड़े बड़े ध्वजाधारी पंडितोंसे
सुनीहै वेश्याका विश्वास करना चतुरोंका कामहै
यह तो मूर्खोंहीको लूट खातीहै जैसे यह मूर्ख नंद ए
कही दृष्टिके मारे सारे घर बारको त्यागवैरागले लि
या हमसे नहीं बूझते हजारों वेश्याओंके घर बरसों-
लोंरहे अरु तबला बजाया परंतु हमपर कोई छिना
लनरीझी हमनेभी किसी रांडको मुँहन लगाया लु
ड़िया डोरालिये पीछेही फिरती रही हमतो इनके चाल
चलनको पहलेसे जानेथे जब हमारे पिताके घर
में पांचसौ छः सौ वेश्या रहती थीं.

कवित्त

भेटतही चाहैं भेंट फेरताकी टोहैं फेंटलैटल
टजात साथहाथनचगादेहैं, काहूसेझगादे
कहैं अँगिया रंगादेकहैं भूषण मँगादेकहैं
बसतर मँगादेहैं। कामीजन अंधजनि फंसो
गणिकाके फंदऐसी बिभिचारिनजो प्रीत
मकोदगादेहैं कामको जगादेतन व्याधिको
लगादेंलै मंगादेलै मंगादेकरें रातदिन तगा
देहैं ॥१॥ ॥१॥

माधो०—हे राजन् प्रीतिकी रीति अति विचित्रहै देखो

पुष्पलता नहीं विचारती कि कीकरका वृक्षहै वा चंदनका वृक्षहै नारी नहीं जानती यहलीनहै वा कुलीनहै हाथी आलको खाताहै चंदनको नहीं खाता पपीहा सात समुद्र अरु सोनभद्रसेनदको छोड स्वातकी बुंदको रटताहै चकोरकी प्रीति चंद्रमासेहै सूर्यसे कुछ प्रयोजन नहीं है नृपराज जो जिसके मनमें रमाहै वह उसीमें आनंदहै मीन नीरहीमें सुखीहै क्षीरसे उसका चित्त संतुष्ट नहीं होता

दोहा

जिहिं कर मन रमजाहि सन वोही वाको राम
जैसे किरवा आकको कहा करै बसि आम

राजा०-हे द्विजदेव अमूल्यसे अमूल्य जो वस्तु चाहो सो हमसे लेलो उत्तमसे उत्तम ब्राह्मणकी कन्यासे विवाह करलो परंतु गणिकाकी प्रीत मनसे त्याग न करो क्योंकि वेश्याकी प्रीतिका विश्वमें कोई विश्वास नहीं करता.

माधो०-हे नृपेंद्र मैं तो उसकी प्रीतिसे भलेही हाथ धोबैठूं परंतु यह मन तो मेरे वशमें नहीं उसे तो कंदलाने प्रथमही फांस लिया रुधिर मांस वियोगने सोखलिया एक तनमें स्वास शेषहैं सोभी जबलौहैं तबलौं मन आशा नहीं छोडताहै.

दोहा

जबलौं मुक्ति न जीवकी स्वर्ग नहीं विश्राम
तबलौं रटौं विहंग ज्यों कामकंदला नाम १
प्रीति इक अंगी नहिं तजत मीन पतंग चकोर
सत्य प्रीति दुहुँ तन तजै असको दुसह कठोर २

कोटि जन्म किन तप करै नेह न व्यापै देह
परे वज्र तेहि हिये पर तजे जो पूरण नेह ३
नर पशु में अंतर यहै मनुज कहै पशु नाहिं
प्राण देत मृग बीन पर प्रीति अधिक मन माहिं ४
ब्रह्मज्ञान जानत सोई नेह चिन्ह जेहि अंग
गुप्त प्रगट सब लखपरत जब झलकत तन रंग ५

राजा०-(मनही मनमें) स्नेह तो ब्राह्मणके हृदयमें अचल पाया जाता है आगे जो विधाताकी इच्छा परंतु मन से आज्ञा नहीं तजे करता सब संयोग बना देता है (जो जो बात राजा ब्राह्मणसे बूझताथा वह उत्तर समास मदे ताथा) (चरण छूकर) हे ब्राह्मण मैं ब्राह्मणोंका दास हूं जो आपकी इच्छा हो सो मांगो विधाता सब मनोर्थ आपका पूर्ण करैगा मुझे किसी तरहका तुमसे दुर्भाव नहीं है-

माधो०-हे महाराज कामकंदलासे अधिक कोई वस्तुकी मुझे कांक्षा नहीं जिसके कारण मैंने अपना धन धाम लुटाय रक्तकी धारनेत्रोंसे बहाय तन सुखाय उदासी बन बन बन फिरा आपसे बन पड़ै तो उस बनितासे मेरा बानक बना दो मैं क्या करूं मुझसे कुछ बन नहीं पड़ता.

दोहा

मम अँखियनको पंख बलजो देदे करतार
मनहरणी छवि मित्रकी उड़ि देखों यक बार

राजा०-हे द्विजराज दशदिन और व्यतीत करो मैं कामसैन पर चढ़ाई करूंगा अरु उसको पराजय कर कामकंद ला तुमको दिला दूंगा निसंदेह रहो किसी भांतिकी चिं

तानकरो राजाको बाँधकर तुम्हारे सन्मुख खडा करदूंगा जो तुम्हारी इच्छाहो सो करना अब रात्री हो गई आपवि श्राम कीजे (अरु राजा राजभवन में पधारते हैं अरु माधवनल सोता है अरु पलंगपर पडा पडा नैपथ्य में यह गीत गारहा है)

माधो०- गजल

अरी कंदल अरी कंदल अरी कंदल अरी कंदल
मुझे क्या कर दिया तैंने न सोते कल न बैठे कल १
कभी सूझे है बनमें बैठकर कर मित्र का सुमरन
जो बैठूं तो यह सूझे है कहीं को चल कहीं को चल २
अजब चक्कर में डाला है न कहने का न सुन्ने का
जो कहता हूं किसीसे कुछ वह बतलाता मुझे पागल
जिस घडी भोली भोली शकल तेरी याद आती है
कलेजा थामरह जाता हूं दोनो हाथों को मलमल ४
देह सबसूख कर कांटे की माफिक हो गई मेरी
तंग हूं जिंदगानीसे कठिन है काटना पलपल ५

इति श्री माधवनल कामकंदला नाटक तृतीयो गर्भांक सम्पूर्णम् ॥३॥

चौथा गर्भांक

स्थानराजभवन

(राजा प्रातःकालउठतेहैं अरुमंत्रीको बुलाकर अन्योत्तम वारांगनाओंका नृत्यरचाया जाय मंत्री सब नगरकी पातेरें वुलाताहै अरु अद्भुतनाटक कराताहै)

मंत्री॰-महाराज नाटक होरहाहै चलिये देखिये

राजा॰-हे ब्राम्हण जबलौंसेनापति सैनाइकछीकरै तबलौंतुम नाटकालयमें गाणिकाओंकी निपुणाई अरु चतुराई देखो

(राजा अरुद्विजराज सभामेंगये महाराज नृत्यदेखिये कैसी कैसी सुंदर वेश्या नृत्यकर रहीहैं)

दोहा

अतिस्वरूपवहुगुणभरी नवयोवनकटिछीन
रागरंगसवचातुरी रूपविधातादीन ॥१॥

इनकारहस्य देखिये यह सुंदर नाटक आपहीके लिये र

चायागयाहै सब सोचसकुच विसार यह नाटकाकार दे, खिये

माधो०- हे राजन् नृत्य कौन देखै मेरे नयनतो कामकंदला के फंदमें फँस रहेहैं

दोहा

नृत्यगीतगुणरूपसव मोहिंकंदला नारि
सो नयननमें वसरही दोनों तनमनडारि

सोरठा

विधिजडियाअपहाथ सत्यप्रीतिकंदलजडी
मनमाणिकतिहिसाथ जड्यो सोकैसे उच्चटे

महाराज यह तो पच्चीस सोहै परंतु पच्चीस करोडमें भीउ सके जोडकी दूसरी न निकलेगी विधाताने वहएकही रचीहै

कवित्त

गतिगजराजकेसीकटिमृगराजकैसीहय
केसो घूंघट औहारिणकेसे नैनहैं। अलिकेसे
केश औरकीरकेसी नासिकाहै कपोतकेसो
कण्ठ औरकोकिलासेवै नहैं। कमलकेसेच
रणऔ अंगुरीकुसुमरंग चम्पकतनवरण
गंधजूहीजैनहैं। एडीनारंगीसी उरोजश्रीफ
लसे बिम्बासे अधादंत दाडिमाबिजैनहैं॥ १॥

ऐसी ऐसी करोड स्त्रियोंका रूप लेकर विधाताने इसके लालित्यपद बनायेहैं मेरा मुख इस योग्य नही जो उसके रूपकी लावण्यताकी शोभा वर्णन करसकूं परमेश्वरने जगत्में वह एकही रचीहै.

राजा०-(मनही मनमें) यह ब्राह्मण तो उसीके रंगढंग परमत्त वालाहै इसके चित्तपर दूसरी वाला कवचढसक्तीहै जो इसका उपाय आज नहुआ तो नजानिये कलको क्याहो जो यह ब्राह्मण मरगया तो वृथा ब्रह्महत्याका भागी होना पडेगा (माधोसे) अच्छा महाराज धीर्य धरिये वहुत शीघ्र आपके कार्यका प्रयत्न किया जायगा

माधो०-हे राजन् आपने मुझसे यह वात नबूझी किकामसेनने तुझे किस अपराधपर निकाल दिया सो अपनी व्यथामें आपही अपने मुखसे वर्णन करताहूं

चौपदी

एकदिन कामसेन नृपराई। नाटक रच्यो परम सुखदाई। नाचत कामकंदला वाला। भ्रमर एक आयो तेहिकाला। कुचके अग्र सु वैठेउ आई पवन तेज तिय दियो उडाई। मानो सुदित ब्रह्म करगही। सब सांगीतकी कर सपही। गुण अरु रूप विधाता दियो। शिर सकादित ताहिको कियो। ताहि रीझमें सर्वस दियो। राजा रक्त घूंट भरि पियो मूरख रावन कुछ महिचाना भयो क्रुद्ध कुछ भेद न जाना। गुण अवगुण कुछ नाहि विचारो। तुरत दियो मुहिं देश निकारो अवहों शरण तुम्हारी राजा। जो वन पडै तो कीजे काजा।

दोहा० साहसीक परदुखहरण मैं जु सुनो सशकान जो शाकवंधी चक्क वैदे हु नेहको दान १

राजा०-हे द्विजदेव आप कोई सन्देह न कीजे परमेश्वरने चाहा तो तुम्हारा कार्य वहुत शीघ्र होगा परंतु आपके

अवलोकनार्थ यह सुंदर नाटक रच बडे बडे गुणी गायन चातर पातर बुलाई हैं जिनका रूप देख रति अरु रंभाभी अचंभा मान लज्जित हो इनका नृत्य अवलोकन कीजे

दोहा

इंद्र अखाडे ते अधिक रूप नृत्य गुण राग
जे न निहारैं नयन भर ते नर परम अभाग

माधो०- सोरठा

जो नहिं होत अभाग तो कंदल क्यों बिछुरती
रूप नृत्य गुण राग बिन कंदल बिष दल भये

दोहा

जिहि कारण सब सुख तज्यो ताही सों मन लाग
जो मूरति चित में बसे ताही को बैराग
नहीं कंदला सी कहीं दृष्टि परी मोहिं और
पश्चिम दक्षिण पूर्व गिरि ढूंढ फिरो सब ठौर

मंत्री०- पृथ्वीनाथ यह ब्राह्मण तो पूराही प्रेमी निकला स्वप्न मे भी कामकंदला को नहीं भूलता इसने कामकंदला को ऐसा मीठा समझा है दिनरात कंदला कंदला करता है जो इसके काम में देर करी अरु यह मरगया तो वृथा कलंक लगेगा अरु ब्रह्महत्या गले पडेगी- अब सेनापति को बुलाय झटपट कटक सजाय युद्ध का सामान कीजे !

राजा०- मंत्री इस वियोगी का वियोग देख देख मेरा चित्त व्याकुल हुआ जाता है अरु जबसे इसके विरह भरे वचन सुने हैं मेरी नींद भूख सब जाती रही जबतक इसका काम न हो जायगा दूसरा काम मैं नहीं करने का यह मेरा संकल्प है परंतु अब तो संध्या समय हुई कुछ हो नहीं

सक्ता प्रातःकाल सबसामान किया जायगा (नाटक विसर्जन होताहै अरु राजा रनिवासमें जातेहैं यवनिका गिरतीहै)

इतिश्री माधवनलकामकंदला नाटक चतुर्थोगर्भांकसम्पूर्णम्

पाँचवाँगर्भांक

स्थान राजावीरविक्रमाजीतकीसभा

(राजा सिंहासनपर विराजमानहैं मंत्री सेनापतिसब सन्मुख खडेहैं)

राजा०- सैनापति

सैना०- हां पृथ्वीनाथ क्या आज्ञाहै.

राजा०- सब नगरमें डौंडी फिरवादो जितने शूर वीरसावन्तयो

धा बलवान हैं सब अपनी अपनी चतुरंगिनी सेना सजा
य एकत्र करें.

सेना०- हे प्रजापालक सब सैना उपस्थित है.

चौपाई

देशदेशके भूपति आये। छप्पन कोटि निशा
न बजाये, साजे रथ मांजे हथियारा। धनुटं
कार करें असवारा॥ पीपी भंग तुरंग नचाव
त। अपने अपने रंग दिखावत सबै लोहके
चावनहारे। उमगि रहे कर लिये कटारे॥ आ
ज्ञा होय चढैं तेहि देशा। जहां कहूं को कैहें न
रेशा॥

नब्बे सहस्र कुंजर बीस लाख घोडे बारह लाख ऊंट अ
ठारह सहस्र खिच्चर चालीस सहस्र पैदल दश सहस्र
सैनापति

दोहा

अगणित रथ कंचन मंढे जोते धवल तुरंग
पायक पैदल को गने हाट बाट बहु संग १

राजा०-सैनापति सैना को आज्ञा दो कामावती नगरी को च
ले (दल के चलने ही धरती धसकने लगी धौंसा बाज
ने लगा तुरंगों के खुरों से उडि उडि कर धूरि आकाश में
छागई शूरवीर घोडों को नचाते कुदाते मारू राग गा
ते रणसिंहा बजाते चले जाते थे)

अरु एक हाथी पर राजा वीरविक्रमाजीत माधवनल
को संग लिये दश सहस्र सैनापतियों के गोल में चले
जाते थे अरु आगे आगे एक घोडे के ऊपर कवीन्द्र यह

कवित्त पढता चला जाताथा.)

कवित्त

धरधर हाले धराधर धुन्धकार नकोंधीरन धरत जे धरीया बलवाहके। फूटत पाताल ताल सागर सुरवात सात जाते हैं उडात व्योम विहंग बलाहके। झालरि झकत झलकत झपी फीलन पै वीर विक्रमजीत के सुभट सराहके। अरिउरदाह शोर परत संसार घोर बाजत नगारे आज विक्रम नरनाहके॥ श्वेत रथ श्वेत वस्त्र श्वेत ध्वजा श्वेत छत्र श्वेत हैं तुरंग लखि भूपलगे लरजन। ज्ञान में गणेश अस्त्र शस्त्र में महेश सम पौरुष में रामसे शत्रुदल विसरजन झलाझलकत कत मार्तंड के समान तेज जाकी हांक सुन मुखफेरलेत अरिजन। रोदा के बजत शूरवीर संग्राम तजे गंधर्वसैन तनय की सुसिंह केसी गरजन ॥२॥ ॥२॥ ॥२॥

युद्धको चढत राउ बुद्धकोस क्रुद्ध दल चहूं ओर संकनके पसरे पसारेसे। भनत कविंद्र आगे पहरे धुजारे घोर धहरे नगारे जात गिरिवर गारेसे। धसके धराके दाढ कालके कराके होत सुनि सुनि आवत दिगपालन तमारेसे फेनीसे फनीके फन फेलि फेलि फूटे छूटे उछरि उछरि परें सिंधु में फुहारेसे ॥३॥ ॥३॥

धुक्कत अचल अरि लुक्कत उलूकन लों मु

क्रूनकिलीनके धुकारनदवेशाके।भनतक
विंद्रतहांपेशाके मवासीकौनलरवत अबा
से अलकेशाके लकेशाके।जीतके जहूरसा
जें फौजनके अयबाजें भारे महाराजके स
मारेवलवेशाके।दरजेंदिल्लीके उमरायन
के उरफारें गरजें नगारे जबविक्रमनरेशाके ४
जादिनचढतदलसाजअवधूतसिंहतादि
नदिगंतनलौंदीनदाटियतहै।प्रलयकेसी
धाराधराधमकैनगाराधूरिधारासोंसमुद्र
नकीधारापाटियनेहै।भनतकविंद्र भुवगो
लकोलहहरतकहरतदिग्गजमगाजकाटि
यतहै।दाविदाबिकचारिफनीशफनमंडल
मैंकमठकीपीठमें पिठीसीबाटियतहै ॥५॥
जिनफनफुनकारउडतपहारभारभूतलह
लतपीठकमठविदलिगो।जिनविषज्वाल
ज्वालावलीलवलौनहोत जिनझारिदिग्ग
जचिकरमतिझलिगो।कीनो जिनपानपय
पानसो जहानकुलकूरमउछलिजलसिंधु
खलहलिगो। खग्गरवगराजमहाराजनृ
पराजवीरसांपनिशत्रुसेनाकौपलमेंनिग
लिगो ॥६॥ ॥६॥
रनवनभूमेंतो भुजलतिकापेचढीकढीम्या
नवांवीतेविषविषभरीहै।जारिपुकोडसेसो
तौतजेप्राणताहीछिनगाडरूअनेकहारेझा
रतेनझरीहै।भनतकविंद्रराउबुद्धअनुरुद्ध

तनैता कोबीरयुद्ध एकतैंहीबशाकरीहै।तर
लतिहारीतरवार भन्नगीकोकहूं मंत्रहै नतं
त्रहैनजंत्रहैनजरीहै ॥८॥

ग्रामकेमनुष्य०- (अपने आपको कालके गालमें समझड
रते कांपते कविंद्ररायसे आयआय यहबुझनेलगे)

ग्रामबासी०- **कवित्त**

चारोंओरकारीकारीघटासीचलीआवत
धसकनहै धराअरुशेषकपकपानोहै।तोपन
केशब्दहौनकेधौंघनगर्जरहेशस्त्रहैंकिच
पलाकछुपरतनाहिंजानोहै।कोपकीदृष्टिसे
जाहिदेखै एकबार छिनकमें छारकरधूरिसें
मिलानोहै।कालकोकालमहाकालविकरा
लरूप बिक्रमभुवालआजकापरीरसानोहै ९
घोडनकीटापनकीधूरिसेआकाशछयोभ
योहै अंधेरोसानैंडहूंहिरानोहै।धसकनल
गीधरा औरशेषसन्नाटेभरेदिग्गजडिगमि
गे औरकूर्मकुलसुलानोहै।देशदेशकेनरेश
भाजेकरबिक्रवेषकोउबनमाहिंकोउगुफामेंछि
पानोहै।कालकोकालमहाकालविकराल
रूपबिक्रमभुवालआजकापरीरसानोहै १०
धमधमधौंसाहोतचमचमलोहाहोतझुम
झुमतमकनयोधनकोजालहै।तैसियपरी
हैगजघोरनकीरवरभरव्हैभयोमलीनरज
से सूरजकोभालहै। चक्रवर्ती विकलउसासैं
कहैंभरिभरिसाजदलदौरोआजकापैविक्र

मालहै। करमहिरानो काकोकोनपेरिसो नोदैव नजानियैकापर आजकिल्ल किलानो कालहै ॥११॥ ॥११॥

कविंद्र॰- कामावती नगरीमें कामसेनराजाएक द्विजकी अविज्ञाकरीनेकनाहरानोहै। विक्रमनेदूत भेजताको समझायो बहु कामसेन मूरख नाहिं कहाएक मानोहै। फिरतो व्हैकुद्ध युद्ध करिवेकोमन मेंठानि माधोके संगकटकलैके तहांजानोहै। कालके कोपको ठिकानोहै चारदिवस विक्रमके कोपकोन एकक्षपाठिकानोहै ॥११॥

(दशोदिशाके राजा कंपायमानथे न जानिये किसपर कोपकीदृष्टि पडजाय जबदशयोजन कामावती रहगई तब राजा विक्रमने वहीं डेरे डालदिये)

राजा॰- मंत्रीचलो वेषबदलकर कामकंदलाकीपरीक्षालें

मंत्री॰- चलियेमें उपस्थितहूं (दोनों घोडोंपर सवारहोतेहैं अरु कामावतीमें आतेहैं) यवनिका पतितहोती है

इतिश्री पंचमो गर्भांक सम्पूर्णम्

छठा गर्भांक

स्थान कामावती कामकंदलाका मन्दिर

राजा०-हे मंत्री मैंतो वैद्यबनूँ तू मेरा शिष्यबन कामकंदला के मंदिरके नीचे पुकारैं

मंत्री०-परीक्षाकी विधितो ठीक ठहराई

राजा०-(आपही आप मंत्री संगमें) वैद्यहूं वैद्य सब रोगोंको उपचार अरु विचारसें परिपूर्ण जादूटोना वियोगका निर्मूलक पाहिले काम पीछे इनाम सबेरेसे शामतक आरामकर सकाहूं अपने काममें चतुर अरु विलक्ष णहूं

मदु०-मनोज मंजरी यहतो कोई बडाचतुर वैद्य जान पडताहै

मनो०-भावो इसको यहां बुलाओ कामकंदलाको दिखा देवैं जो इसे अच्छी करदेतो इससे अधिक और क्या

कुसु०-इसको को रोग तो नहीं वियोगहै इसको वैद्य क्या करैगा.

मनो०-अरी वह वियोगका मंत्र यंत्र भी तो जानैहै.

कुसु०-अच्छाहै दिखादेखो कुछ हानि नहीं मैं तो दिनरात येही मनाऊंहूं किसी भांति प्यारीको शीघ्र आरामहो.

मनो०-अहो महाराज वैद्य राजजी कोमल चरण धरकर हमारा घर भी पवित्र करते जाओ.

वैद्य०-बहुत अच्छा क्या कोई तुम्हारे घर रोगीहै

मनो०-हां महाराज हमारी प्यारी कामकंदला बहुत दिनोंसे दुखारीहै.

वैद्य०-चलो चलतेहैं तुम आगे आगे होलो (भवनमें आये)

मनो०-आसनपर विराजिये (बैठगये)

वैद्य०-इसका हाथ निकालो मुख खोलो (वैद्य राज हाथ देखतेहैं) इसको तो वियोगका रोग हमारी समझमें आ

मनो०-हे कृपासिंधु इस रोगका कुछ यत्न भीहै.

वैद्य०-यत्न सबरोगोंकाहै परंतु इसके लक्षण कुलक्षण दृष्टि आतेहैं यह कुछ खाती पीतीनो होगीही नहीं दिन रात मुंह लपेटे मूर्छित पडी रहती होगी न कुछ कहती होगी न सुनती होगी

म०कु०-हां महाराज येही सबलक्षणहैं जो आपने बताये अब हमको निश्चै हुआकि इसको आपके हाथसे आराम हो जायगा परंतु यह संदेह हमारा और दूरकरदो यह कबतक अच्छी हो जायगी

वैद्य०-यह तो बताओ इसको यह रोग कितने दिनोंसेहै अ

रुकेसे हुआ। आद्योपांत सब वृत्तांत सुनाओ

कुसु०-महाराज मनमोहन रूप धरे एक ब्राह्मणका लडका कहींसे आयाथा अरु माधवनल उसका नामथा नहीं जान पडाकि वह इंद्रथा या चंद्रथा रविथा या मदनथा सो इसके चित्तको चुराकर लेगया अरु कुछ ऐसी मोहनी सीडाल गयाहै उसी दिनसे दिनरात बेसुध पडी रहतीहै और की सुनतीहै न अपनी कहतीहै भूख प्यास निद्रा त्याग दीहै आठपहर माधोहीका ध्यानहै

दोहा

भरि भरि ढारै नयनजल मीत वियोगिनि नारि
समझाई समझै नहीं रहीं सबै पचिहारि १

उसकी विरहानलमें अपने तनको जला जलाकर भस्म करदेतीहै एक वर्षसे इसकी येही व्यवस्थाहै

वैद्य०- हमने इसका सब भेद जानलिया घबराओमति यह शीघ्र अच्छी होजायगी औषधिकी परीक्षातो तुमको अभी दिखाये देते हैं परंतु आठ दिनमें अच्छीतरह चलने फिरने लगेगी जबतक अच्छा आराम नहो जायगा तबलों किसी वस्तुकी हमको कांक्षा भी नहींहै अब सब तुम यहां से हट जाओ हम इसका उपचार करतेहैं (सबहटगई) राजाने कंदलाके कानमें कहा माधवनल आयाहै परंतु दूसरेको यह बात प्रगट नहो किसी मुनीश्वरका वचनहै

श्लोक-षट्कर्णोभिद्यतेमंत्रस्तथाप्राप्तश्चवर्तया
इत्यात्मनाद्वितीयेनमंत्रःकार्योमहीभृता १

इसलिये यह बात गुप्त रखनी अवश्य चाहिये औरबातें करो

काम०- (नेत्र खोलबोलने लगी) प्राणनाथ कहांहै मेरे सन्मुख लाओ

वैद्य०-मैंनेतो पहलेही तुमको समझा दियाथा कि इस बातको प्रगट न करो तुम नहीं जानतीकि राजाका चोरहै आया जाताहै धीर्य रक्खो परंतु यह बात दूसरा नजानै औरऔर बातें करो

काम०-हे वैद्यराज मुझको आपका कहना सब भांति स्वीकारहै परंतु यहतो कहो वह बातहै तो सत्य

वैद्य०- झूठ सत्य सब प्रगट हो जायगा

काम०-जो मेरा मनोर्थ पूराहो गयातो जन्मभर आपका गुणन भूलूंगी

वैद्य०-हे कुसुमकुमारी तुम्हारी प्यारी तुमको बुलातीहै इस्सेबूझोतो कुछ कष्ट दूर हुवा या नहीं

मद०- धन्यहै धन्यहै आपके उपचारको जो इस नारी प्यारीका नया जन्म किया-

वैद्य०-लो और जो कुछ कहनाहोसो कहलो फिर कुछ औरउपाय करैं

मद०-क्यों महाराज अब क्या उपाय करोगे.

वैद्य०-दो घडी पीछे फिर इसका वही रंगहो जायगा

मद०- क्यों

वैद्य०- इस समय हमारे बटुवेमें औषधि एकही मात्राथी अब और औषधि बनेतो इसको भली भांति आरामहो

कुसु०-फिर वह औषधि कबतक बन जायगी

वैद्य०-दो तीन दिनमें

कुसु०-तुम बतादोतो हम बनालें

वैद्य०-तुमसे नहीं बनैगी हमबनादेंगे

कुसु०-आपठहरे कहांहैं

वैद्य०-वैद्योंका क्या ठिकाना कभीकहीं कभी कहीं जव औषधिवन जायगी हम आप आजायंगेअव विदादीजे तुमहट जाओ तो मैं कुछ और युक्ति करता जाऊं सबहट गईं हे कामकंदला तू किसके वियोगमें बौरी बनी पडीहै मा धवनलको तो छलबल कर एक स्त्रीने छललिया अबउ सने उसे ऐसे जालमें डालाहै उसीके वियोगमें रात्रि दिन मतवाला वना घूमतारहताहै नजानिये क्याजादू कर दियाहै तू और पुरुषसे प्रीति क्यों नहीं करलेती

काम०-हे वैद्येंद्र समझकर बातकहो तुम्हारे मुखार्विंदसे य ह वचन शोभा नहीं देते चंद्रमा सहस्त्रों चकोरोंपर दृष्टि करताहै परंतु चकोर दूसरा चंद्रमा नहीं समझती

चौपाई

मैंमनद्विजहिदक्षिणादीना।देखततजोनै नहतलीना॥बोलो तासौं जो मन माहीं॥जाको देखेनयनसिराहीं॥तेहिविनुजग्तसूनसव भयो।मन धन जीवविप्रलेगयो॥सोप्रीतम देगयोठगोरी।तजिगुणरूप भईहौंबोरी॥

दोहा

जेहिंमारगप्रीतमगये नयनगये तेहिराह।
कैसेदेखौं औरको जहँ देखौं तहँ नाह १

वैद्य०-(मनहीमन इसकी प्रीति ब्राह्मणसेभी अधिकहै प रंतु एक परीक्षा औरभी करलूं प्रगट सत्यलो यहहै मैंते री प्रीतिकी परीक्षा करलाथा सो तेरी प्रीति परिपूर्ण नि

कली धन्यहै धन्यहै तेरे सत्यशीलको तेरापतिव्रत धर्म
बहुत पक्का देखा अबमैं सत्य सत्य बात तुझसे कहताहूं
उज्जैन नगरमें मैंने माधवनलको देखाथा उसकीभी ऐ
सीही पूर्ण प्रीति दृष्टि आई दिनरात हाय कामकंदलाहा
य कामकंदला करता फिरताथा न कुछ खाताथा न कुछ
पीताथा एक तेरे नामके आसरेपर जीताथा दिनआठ
या दश हुए एक अद्भुत चरित्र हुवा उसे कहते मेरा हृद
य विदीर्ण होताहै

काम०- हे वैद्य भूषण आपने क्या आश्चर्य देखा

वैद्य०- (नेत्रोंसे अस्रुधारा बहाकर) माधवनल मार्गमें काम
कंदला कामकंदला करता चला जाताथा किसी मनु
ष्यने हंसिकर कह दिया अरे मूर्ख क्या कामकंदला
कामकंदला करता फिरताहै कंदला तो मरगई यहबा
त सुन विरहानलकी तेजीमें उनमत्त हो एक पत्थरसे
ऐसी टक्कर मारी उसी समय छटपटाकर मरगया क-
हनेके योग्य बात तो नथी परंतु आधीनतासे कहनी
पडी

(यह बात सुनतेही कामकंदलाहकी बकीसीहोधर-
नपर पछाड खाय हायके करतेही मरगई सच्चीप्रीति
इसीका नामहै)

वैद्य०- (आपही आप) इसको तो प्राण खोते एक पलभी
नलगा हा ऐसेभी मनुष्य संसारमेंहैं जो हाय करतेही
प्राण छोडदें हायमें जिसके कारण सैना सजाय कर
लायाथा सो सबकाम मट्टी होगया अब कामकंदला क-
हांसे आवे हाय मैं अब उस ब्राह्मणको क्या उत्तर दूंगा

जो मैं जानता यह विरह दहीहायके करतेही प्राणत्या
ग देगी तो यहबात इस्से मैं क्यों कहता मैंने जानबूझकर
स्त्रीहत्या करी हे परमात्मा मुझ दुराचारीकी क्या गति
होगी.

स०स०-(जब कामकंदलाकी यह गति देखी तबतोलगीहा
यहाय कर छाती पीटने अरु शिर धुन)
हे प्यारी तू हमको अकेली माँझधारमें छोड़चली ह
म किसको अपनी प्यारी प्यारी कर पुकारेंगी हे काम
कंदला हमसे क्यों नहीं बोलती अब हमारा आदर स
न्मान कौन करेगा अबहम अपना प्राणघात करती हैं
हाय प्यारी हमारी सुनी न अपनी कही अबकौन हमारा
मनोर्थ पूर्ण करेगा.

वैद्य०-चुपहोजाओ क्यों घबराती हो क्या तुमने इसे मरा जान
लिया विरहके मदमें मग्न हो गई है दिन निकलतेही अ-
च्छी हो जायगी विरहकी तापसे नेत्र बंद कर मूर्छित
हो गईहै मैं औषधि लाताहूं तुम कुछ संदेह मत करो इ-
सके अच्छे होनेमें कुछ संदेह नहीं

दोहा

कालकूट ते कठिन है जिहिं व्यापै यह साल
यमनेरे आवत नहीं विरहकालको काल॥

जबलों मैं न आऊं इसका मुख मत उघाडना (यह क
ह राजा अरु मंत्री आधी रातके समय अपने कटकमें
आते हैं अरु लोट पोटकर रात गमाते हैं मार्तंड उदय हो
ता है अरु यवनिका गिरती है)

**इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक षष्ठमो गर्भांकसं-
पूर्णम् ॥६॥**

सातवां गर्भांक

स्थान राजा वीर विक्रमके डेरे

(राजा वीर विक्रमाजीत का दरबार लग रहा है मंत्री सेनापति हाथ बांधे खडे हैं माधवनल पास बैठा है)

राजा॰-हे द्विजदेव कामकंदला तुम्हारे वियोगकी आगमें जलकर मरगई जिसके कारण नव्वैलाख सैना लेकर चढा था सो कार्य सब निस्फल हो गया.

माधो॰-हे राजन् यह बात सत्य है

राजा॰-भला यह समय झूठ बोलनेका है

माधो॰-(चकित हो आपही आप) हाय प्यारी मुझे अकेला ही छोड कर चलदी हे विधाता और दुखमें दुख घावपर नोन लगाना यह शरीर ऐसे कठिन कष्ट सहने योग्य

तो नहीं था परंतु इस समय तू भी अपने करतव्य से मत चूक अरे निर्दयी कठोर चित्त हमारी प्यारी के प्राणांतक रने का एही दिन छांटाथा ले अन्याई वह प्राणभी अपने से तररव अबतो तेरे मनकी अभिलाष पूर्ण होगई और जो कुछ इच्छा शेषहो वहभी करले कभी पीछे मनमें पछतावा करे अरे अत्याचारी तुझको यह भी लज्जा नहीं आतीकि मरते को मारकर क्या शूरताहोगी (यह वचन कह उलटी पछाड खाय पृथ्वीपर गिरतेही प्राण त्याग दिये)

राजा०- मंत्री यह क्या हुआ ब्राह्मणने कामकंदलाका मरण सुनतेही देह छोडदी

मंत्री०- महाराज सच्चे प्रेमी पुरुष ऐसेही होते हैं

दोहा

दोंदाधीसुनिमालती अलिदाध्योतेहिंगांहिं
मालति विनुअलिनारहे अलि विनुमालतिनाहिं
आलम ऐसीप्रीतिकर ज्योंवारिज अरुवारि
वहसूखे वहनारहे मिटे मूल जलडारि

राजा०- हे सचिव अब मैं भी अपने प्राण नष्ट करूंगा क्योंकि प्रथमतो स्त्रीहत्या दूसरे ब्रह्मघातक फिर मेरा निस्तारा कैसे होगा मुझको कोई नर्क में भी चैन नलेनदेगा वहांभी मुझे प्राणी हत्यारा कहकर पुकारेंगे यह पापमेरा सहस्र जन्मपर्यंत भी मुक्त न होगा (आपही आप) हे बुद्धि जन्मसे तुझको वेदशास्त्र धर्मकर्म्मके संस्कार कराये उस समय तू भी ऐसी निर्बुद्ध होगई रंचक मात्रभी दया न आई अरीदुष्टतैंने भी मेरा नर्कवास

ही चाहा धिक्कार है तेरे करतव्यको मैं यह नहीं जाने
था कि तूही मेरे प्राणोंकी ग्राहक हो जायगी जो कुछ
किया सो अच्छा किया तेरे ऋणसे भी एक दिन उद्धार
होनाहीथा (प्रधानसे)

प्रधान-चंदन-अगर-देवदारु-पद्माक्ष-घृतादि म-
गाय शीघ्र चितारचो अब मुझको अपना प्राण रख
ना पलपल भारीहै अब मुझे कोई वस्तु अच्छी नही
दृष्टि आती

मंत्री०-हे राजन् तुम किसलिये अग्निमें जलते हो ऐसी क्या
बातहै राजाओंकी आज्ञासे सैंकडों स्त्रीपुरुष मारे जा
तेहैं राजा कहीं इतना क्लेश करतेहैं यहांसे उठिके च
लिये रहनेदीजे चिताको नहींतो सबराजा अरु कट
क क्षणभरमें शिर पटक पटक मर जांयगे सब सैना
में खलबली पड रही है शत्रु शिरपर गाजरहाहै देश
सूना पडाहै इस बातको तो कोई न जानैगा परंतु देशदे
शमें यह दुरनामता होगी कि कामसेनको जीत न सके
भयमानकर भस्म होगये बडी लज्जाकी बातहै ऐसी
ऐसी हत्याओंका राजाओंको दोष नहीं

दोहा

जग समुद्र दुख सुख करण नरतिय मरैं अपार
राजन दुख व्यापै नहीं जिन्हैं भूमिको भार १

राजा०-हे मंत्री इस समयके चलनेमें धर्मकी हानि अरु चि
त्तमें ग्लानि होगी सब संसार मरनेही के लियेहै क्या
राजा क्या रंक सब कालके गालमें जांयगे परंतु यश
अपयश बना रहेगा वालि दधीचि हरिश्चंद्र दशरथ

करण- की कहानी आजलौं प्रसिद्ध है रावण- कंस- दुश्शासन जिनका यश जगमें विख्यातहै उनकाजीवनभी मरणहीकी समतुल्यहै अबतुमसब लोगमेरे धोरेसे हट जाओ मुझको जल जानेदो-

(गंगास्नानकर मोह ममताको त्याग अत्यंत दानपुण्यकर गंगाजलपी भास्करको नमस्कार कर चितामें बैठगया उस समय सब दलमें हाहाकार पडगयाफूटफूट कर रोनेलगे)

मंत्री०-हे करतारतैंने यह कैसी विपरीतकी जोहमारे नरेश एक ब्राह्मणके पीछे चितामें भस्महुए जातेहैं (लगे सबसेनप काष्ठभार मंगाय मंगाय अपनी अपनी चिता बनाने अरु रोने महा घोर रोनेका द्वंद्व स्वर्गलों पहुचा किराजावीरविक्रमार्जीत जीताही अग्निमें भस्महुवा जाताहै अप्सरा परस्पर युद्ध मचानेलगीं राजा विक्रमादित्यको हमवरेंगी यहबात सुनि बैताल तत्कालदौडे जभी राजा चितामें आगलगानेको उपस्थित्तथा दोनों बैताल आपहुंचे राजाका हाथ पकड लिया)

बैता०-हे दीनानाथ तुम चक्रवर्तीहोकर एक वियोगी ब्राह्मणके कारण अपना शरीर भस्मकर डालतेहो बडे आश्चर्यकी बातहै-

राजा०-मैनेतो बैठे बैठाये अपने आपको पापलगालिया पहिले तो

।।४। कामकंदलाका वध किया पीछे ब्राह्मणका जीवलि
।।४। या अब मरनेसे अधिक कोई बात अच्छी नहींजा
।।४। नपडती

वैताल० ॥४। हे नृपेंद्र क्या तुच्छ कार्यके लिये अपने प्राण ॥४॥ खोतेहो हम अभी अमृतका कलश। भर कर ला ॥४। तेहैं (गये अमृत लाकर) यह अमृत किसके मु ॥४। खमें डालैं

राजा०-॥४। प्रथम इस ब्राह्मणके मुखमें डालो (सुधाबुं ॥४। दके पीतेही माधवनल कंदला कंदला करता उठि ॥४। बैठा परमानंदहो कहने लगा)

(राजा चितासे उठि कहने लगा) तुम्हारेही प्रताप से आज हमारा मुख उजियाला हुआ सब सैना आनंद मयी हो गई

माधो०-मेरा चित्तउसी समय प्रफुल्लितहोगा जब कामकंद ला जीजाइगी (अरु राजा आप अमृत लेकर कामकं दलाके घर आताहे अरु बैतालोंको विदा करताहै अरु यवनिका पतित होतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकंदलानाम नाटक सप्तमो गर्भांक सम्पूर्णम् ॥७॥ ॥७॥

आठवां गर्भांक

स्थान कामावती कामकंदला का मंदिर

(कामकंदला छपर खट में मूर्छित पडी है सब सखी ख डी वैद्य की राह देख रही हैं)

मदन मोहनी यह रागिनी सबको सुनाती है

वैद्य नहिं आयो हो गई रात मो को तो कुछ दृष्ट परत है और नयो उतपात चलकर नो देखो कंदल को कर तन कल से बात १ स्वास चल त नहिं नारी बोलत शर्द परो सब गात मुरदा ई छाई सब तन काले पर गये दांत २ देख दे ख कंदल की सूरत जिय घबरायो जात कैसी करूं जाउँ मैं का पे घर अँगना न सुहात ३ वैद्य राज हू धोखा दे के भाज गये परभात सब ल क्षण कंदल के मो को बुरे बुरे दिखरात ४

सबसखी रो[illegible] पीटती दोडी आई हाय कंदला अरी तु
हसे तौ बोल तुझको क्या हो गया सब संगकी सहेलियोंको
अकेली छोडे देती है हाय हम किसको काम कंदला काम
कंदला कह कर पुकारेंगी हे प्यारी अब कौन हमारा आदर
सत्कार करेगा हाय अब कौन हमारे मनगुनकी वात बु
झैगा हे प्यारी अब किसका हम सुंदर सुंदर श्रृंगार बना
वैंगी हे प्यारी किसके ऊपर होलीमें गुलाल उडावेंगी कि
सको श्रावणमें काजरी तीजके दिन मलारैं गाय गाय झूला
झुलावेंगी हे प्यारी यह तुम्हारी प्यारी कुसुमकुमारी हा
ती पीटपीट उलटी पछाडे खातीहै इनको उठाकर क्यों
नहीं समझाती हे प्यारी तू हमको किंचित्मात्र भी दुखी
देखतीथी तौ अपने उपरनेसे हमारे आंसू पूंछतीथी अरु
गुदगुदाकर हमको हंसातीथी हाय अब ऐसी कठोर चि
त्त हो गई हमारी ओर भी नहीं देखती हे प्यारी यह श्या-
मसरोजनी अरु कुंदकलीडींगफोड फोडरोरहीहै अरु
शिरधुनि धुनि विलाप कर रहीहैं अरु हलाहलका कटो
रा हाथमें लिये पीनेको विद्यमानहै इनका हाथ क्योंन-
हीं पकडती अब तुझको दईने ऐसा निरदईकर दियाह
मारे प्राण खोने परभी तेरे हृदयमें दया नहीं आती हे प्या
री तेरे वियोगका ताप हमकैसे सहेंगी अरु अपनी विप
त्तिका वृत्तांत किससे कहेंगी हमारा धरणीपर धीर्यका
धरिया अरु बातका बुझैया अब कोई नहीं रहा। हे प्यारी
हमारा कानभी दुखैथा तौ तू आय सहाय करैथी अब ह
मारी सहाय कौन करेगा आकाशकी ओर देखकर हे
ईश्वर हे निरंजन तुझको सब संसार दुख भंजन कहता

है तू कैसा दुःख भंजन अरु जनमन रंजन है जो हमारा दु
ख भंजन नहीं करता हमने सुना है तैंने गजको ग्राहसे ब
चाया द्रौपदीका चीर बढाया पांडवोंको लाखा मंदिरसे ब
चाया फिर हमको यह दुःख क्यों दिखाया है हे परमेश्वर
तू कैसा न्यायकारी है तेरे यहां किंचित्मात्र भी न्याय न
हीं किस अन्यायीने तेरा नाम न्यायी रक्खा है जो तू स
च्चा न्यायकारी है तो हमारी प्यारीको अच्छा कर अरु
हमारी भारी विपत्ति हर उसी समय वीर विक्रमादित्य
वैद्यका रूप किये अमृत लिये आ पहुंचा

राजा०- कहो- कुसुमकुमारी तुम्हारी प्यारी कामकंदलाकी
क्या गति है

कुसु०- चलिये महाराज देखिये उसकी वही व्यवस्था है न ने
त्र खोले न मुखसे बोले

वैद्य०- नारीकी नारी देखकर रोगमें तो संदेह है नहीं परंतु उप
चार करता हूं यह कह थोडासा अमृत उसके मुखमें
चुवाय दिया (उसी समय माधो माधो करती उठि बैठी)

दोहा

सुधाबुन्द मुखमें परी चलन लग्या तन स्वास
बोली नारी नारिकी भई सखिनको आस

काम०- मुझको तो नींद ही नहीं आती थी आज क्या है जो ऐसी
सोई-

मद०- हे कामकंदला तू तो मर चुकी थी तेरे मरनेमें कुछ सन्दे
ह नहीं था परंतु तेरे भाग्यसे यह वैद्य शिरोमणि कहांसे
अच्छे आगये हनुमानकी नांई सञ्जीवन मूल खवायके
तुझे जिवाय दिया

काम०- जब कामकंदलाको सुधिहुई तबवैद्यराजके चरणों में शिर धरकर सब आभूषण उतार उनके आगे रखक हा हे वैद्यशिरोमणि मुझपै कुछदेनेको नहींहै अपना तन भीदेदूं तो भी आपके ऋण सेउ ऋण नहींहोसक्तीप रंतु यह शरीर माधोको अर्पण कर चुकीहूं

वैद्य०- वैसेही मेरा चित्त तुमसे अत्यंत प्रसन्नहै मैं तुमसे कुछ नलूंगा एक तो तुमको कुछ देनेसे गया दूसरे औरउलटा लूं यह बात तुम्हारे कहने योग्य नहीं जोगुणी पुरुष लोभी होतेहैं उनको संसारमें यश नहीं मिलता लोभी को कोई परमार्थी नहीं कहता उनका नाम स्वार्थीहै

दोहा

जोजियलोभतौगुणकहां जोगुणतौधनकोटि
गुणी सराहै सर्वजग धनी सराहै छोटि॥

काम०-हे वैद्यभूषण इससमय मेरा चित्त अत्यंतविभ्रमहो रहाहै.

वैद्य०- क्यों

काम०--आप मुझे वैद्य नहींज्ञातहोते देवताहोया किन्नरहो या सुरेंद्रहो याकुबेरहोया रामचंद्रहो या महादेवहोया युधिष्ठिरहो । यावीरविक्रमाजीतहो सत्य सत्य अप- नावृत्तांत कहो तोमेरे चित्तकी चिंता जाय

वैद्य०- अहो कंदलासत्यसत्य तो यहहै वीरविक्रमाजीतमेरा नामहै अरु उज्जैन नगरका बासीहूं मुझसे दुखियोंका दुःखदेखानहींजाता माधोनल मेरेपास गया उसकोदुःखीदे ख नव्वेलक्ष ९००००० सैनाले कामावतीनगरीको आयाहूं अरु माधवनल मेरे संगहै परंतु तेरी प्रीतिकी

परीक्षालेनेको भिषज्का वेष धर तेरे घर आया अरुमा
धोका मरण सुनाया तू सुनतेही मरगई तेरे मरनेकास
माचार सुन वहभी खडेहीसे पछाड़खामरगया तबतो
मैंने चिता बनाय जलनेकी ठहरायदी यहबात सुनवी
र वेतालोंने अस्पताल माधवनलको जिलाया फिर
आय अमृत तुझको पिलाया हे कंदला यह अपराध
मेरा क्षमा करदीजे क्योंकि प्रेमका समुद्र अथाहहै मैं
मतिमंद इसके पारको नहीं पासका

काम०—पाँवोंपर शिरधरकर हे कृपानिधान आपदानियोंके
विषे हरिश्चंद्र अरु दशरथके समानहैं इस संसाररू
पी समुद्रके तारण तरण अरुदीन दुख हरण आपहीहैं
जो प्राणी किसीकी डुबती हुई नौकाको पारलगातेहैं
सोनरजगत्में अपार यश पातेहैं हे पृथ्वीनाथ संसारमें
सब इकसार नहीं होते.

दोहा

विरलानर पंडितगुणी विरला बूझनहार
दुखखंडनविरला पुरुष विरलाबुद्धिउदार

हे भूपेंद्र- लिखतीतो पाती परंतु छाती उमड़ी आतीहै
इस्से लिखी नहीं जाती दूसरे अँगुली कपकपातीहैं ती
सरे विरहनेत्रोंसे आंसू वहातीहैं

दोहा

कागज भीजत नयन जल करकांपत मसिलेत
पापी विरहा मन वसत विरह लिखन नहिंदेत १
करकांपत पतिया लिखत जल भरि आवत नैन
कोरो कागज हाथदे मुखियो कहियो वैन २

लिखन पढनकीहैनहीं कहीसुनीनहिंजात
अपनेजीसेजानले मेरजीकीबात ॥ ३ ॥

इतनी विनय मेरी ओरसेहाथजोरकर प्यारेसे कहियो तुम्हारी दासी दर्शनकी प्यासीहै तुम बिना निशिदिन बिरहानल देहको दाहतीहै परंतु अंतरगति आठ पहर तुम्हाराही ध्यान निद्रानेत्रोंसे ऐसी गईहै न धरतीपर आतीहै नसय्यापर आतीहै (किसी कविका वचनहै)

दोहा

प्यारे मेरीनींदकी बात तुम्हारेहाथ
आवतहीतवसाथही गई तुम्हारेसाथ

निशि अँधियारीकारी नागिनिकी नांई पुकारतीरहती है यह भारी विपति मुझसे सहारी नहीं जाती दोनों नयन रैन दिन द्वारहीकी ओर निहार ते रहतेहैं-

दोहा

करकपोलअरु श्रवण यह सदारहत इकसंग
रोयरुधिरगयोनयनसग स्वेतभयोसब अंग

कवित्त

गई भूख प्यास तनसूख सूख कांटा भयोसे
तसेतरंग सब अंगकोपरगयो, नयननतेपा
नीके पनारेसे चले जाततिन्हींके नीरसेल
वणसिंधु भरगयो। शर्द शर्द स्वास मेरीना
सिकासे निकसैहै वियोग कोरोगमेरी देहको
चरगयो। नेकचैनपरत नाहिंबोरीसीदोरी
फिरोंशंकर को छौना कुछटोनासो करगयो १
आयोहै वसंतकंत अंतकहूं छायरहे मेरेहूश

रीरमाहिंपीरापनछैगयो, विधिकीकरतू-
तको भेदनाहिंजानो परेकहाहों समझीहु
तीओरकहाव्हैगयो, बांकीसी झांकीदिखा
यहाय माधवनलबोरीसी बनायकुछठगौरी
सीदेगयो, सोतेनाहिंबैठे कलकेसे करूं शालि
ग्रामसमाधोनिरमोहीदुहीदिनमेंमनलेगयो २

हाय यह वसंत ऋतु अरु में अकेली कोकिलाकीकू
कसुनू। हे प्रीतम इस कठिनदुःखका निर्वारणकरो य
ह महाक्लेश मुझसे कहा नहीं जाता जिसपर यह त्रिवि
धिसमीर शरीरको फूंके देतीहे इस विपत्तिसे वेगि बचा
ओ मुझे अकेली जान कामदेव भस्म करे डालताहे प
रंतु में जानतीहूं इसपापीने मुझे शिवसमझाहे अप
ना वदला लेनोको फिरताहे जव में तुम्हारा ध्यान क
रनेको नेत्र वंद करती हूं यह काम अन्याई धनुषवाण
तानमेरे सन्मुख आनखडा होता हे उससमयमें कह
तीहूं

सवैया

गगननहीं मुक्तानकी मांगहे चंद्रनहीं यहउ
द्यन भालहे॥ नीलनहीं मखतूलकी पूंजहे शे
षनहीं शिरवेणी विशालहे॥ विभूतिनहीं मल
यागिरिशोभित विजियानहीं पियविरहवि
हालहे। ऐरे मनोजसँभारिकेमारियोईशनहीं
यहकोमलवालहे॥

उधर मालनवसंत लेकर आईहे इधर प्राणांतहोनेको
वैठेहें। हे कंत यह वसंत किसपर रक्खू वहुतेरीतो

इनपीले पीले फूलोंको देख फूलती हैं परंतु मेरा इन फुलोंकारंग देख अंग पीला पडाजाताहै

कवित्त

मदमातीरसालकीडारनपेचढीआनंदसोंयों पुकारतीहैं कोउकेसीकरैविनतीइनकीनहीं नेकदयाउरधारतीहैं कुलकानिकीकानेकरै नकछुमनहाथपरायहिमारतीहैं यहकोइलि याकूंकिकैरजनकीकिरचैकिरचैकरैडारतीहैं॥

इस पावस ऋतुमे जब मेघ बरसताहै अरु अंधियारी झुकतीहै अरु दामिनि दमकतीहै उस समय छाती पर साँप चलताहै मोरोंकी झिंगार को किलाकी पुकार सुन हृदयमें सालहोतेहैं जिसपर यह पापी पपीहा पिया पियाकर औरभी घावोंपर लोन लगाताहै। बेरन बूंदो ने बेढबही बैरबांध रक्खाहै

कवित्त

अहोवैद्यराज जब चारों ओर गर्जें घनलरजतहै हिया और जिया अकुलातहै। रवि गयोदविछिति अंजन तिमिर भयो भेदनिशि दिनकोन क्योंहूं जान्यो जातहै॥ होतचपचौंधीजोतिचपलाके चमकेते सूझिन परतपाछे मानो अधरातहै॥ काजरते कारो अँधियारो भारो गगनमें घुमडि घुमडि घन घोर घंहरातहै

हे वैद्यराज आज आपके आनेसे धीर्यहुवा अब पिया अवश्य मिलजायंगे.

शरद् पूनोकी चंद्रिकाको सब शीतल कहते हैं परंतु मेरे नेत्रोंमें ज्वालाही भडकती रहती है जिस वस्तुको सज्जन पुरुष सदासे शीतल कहते चले आये हैं. वह मुझे आग दिखाई देती है

दोहा

चंदन चंद चकोर पिक दादुर मोर समीर
यह सब मम वैरी भये कैसे बांधूं धीर
नल को कहियो जाय कै हे नृपेंद्र मम पीर
तुम बिनु सब वैरी भये कौन बंधावे धीर

राजा।०- हे कामकंदला तेरा दुःख देख मेरा चित्त अत्यंत दुखी होता है परंतु क्या करूं न उसको यहां लानेका न तुझे वहां ले जानेका थोडे दिनों और धीर्य धरो अरु मुझको विदा दो तो मैं अपने कटकमें जाऊं (यह बात कह विदा हो राजा कटकमें आता है अरु यवनिका गिरती है)

इतिश्री माधवनल कामकन्दला नाम नाटक शालिग्राम वैश्य कृत चतुर्थो अंक समाप्तम् ॥४॥

पांचवाँ अंक

प्रथम गर्भांक

स्थान कामसेनकी सभा नगर कामावती

(द्वारपाल आताहै)

द्वार०-महाराज एक दूत कहींसे आयाहै सो द्वारपर खडाहै

राजा०-हमारे सन्मुख लाओ

द्वार०- (जो आज्ञा) बाहर जाकर दूतको बुला लाया

दूत०- (सामने जाकर) प्रणाम करताहूं

राजा०- क्या नाम कहांसे आये किसने तुमको भेजाहै ।

दूत०- श्रीपति तो मेरा नामहै अरु अपने आनेका कारण कहताहूं उज्जैन नगरके राजा वीरविक्रमाजीत महारणधीर जिनको तुम भली भांति जानतेहो उनका पठायाकु

छ संदेशा लेकर आयाहूं.

राजा॰-क्या संदेशा लायेहो कहो.

दूत॰-आपके नगरका एक माधवनल नाम ब्राह्मण जिसको आपने कामकंदलाके पीछे अपने देशसे निकाल दिया था सो तुम भली भांति जानते होंगे कामकंदलाके वियोगमें फिरते फिरते हमारे राजासे भेट हुई तबराजानेउस्से कहा में कामकंदलाको तुझे दिला दूंगा सो नब्बे लाख सैना लेकर तुम्हारी सीमापर आगयेहैं जिसके भयसे देवता थर्रातेहैं बडे बडे राजा धवरातेहैं जिसनेब्राका बांध अनेकदेशोंको विजय कियाहै सोराजा आपसे कामकंदलाको मांगताहै.

दोहा

माधवनलके कारने चलिआयेइहिदेश
कामकंदलाविप्रको मांगें देहुनरेश॥

राजा॰-(क्रोधकरके) अरेबसीठ निठुर बचन मुखसे न निकाल तूबसीठहै नहीं तो तेरी जिव्हा अभी काटली जाती बसीठका मारना राजनीतिसे वर्जितहै अरे दुष्ट जोमें कामकंदलाकोदे दूंगा तो राजाओंमें मेरा अपयश होगा देश देशके नरेश कहेंगे दंडदेकर अपनादेश बचाया जबतक देहमें स्वासशेषहै तबलौं कामकंदलाकोनहीं देनेका राजा विक्रमादित्यतो एकहै जो सहस्रादित्य चढिआवे तो क्याहै एकबार मरकर क्या दुबारा मरनाहै जो राजा युद्धका सामान कल करतेहों वह आजकरें मैंभी अपनी सेना सजाताहूं.

दूत॰-सुनो महाराज राजा वीरविक्रमाजीत बडे बली अरु परा-

क्रमीहैं जिनके दलमें लाखों हस्ती अरु घोडे अनंत रथहैं अरु पाँय पैदलकी तो कुछ गिन्तीही नहीं अरु बडे बडे बलवान शूरवीर रावत योधा संगमें हैं जिनका प्रताप आदित्य के समान सब पृथ्वीपर प्रकाशवानहै सब राजा जिसके आज्ञाकारी ऐसे राजासे थोडीसी बातके कारण विग्रह करना चतुरोंका काम नहीं.

श्लोक

एकात्सत्रंजगतः प्रभुत्वंनववंवयः कान्तिमिदं
वपुश्च अल्पश्चहेतोर्वहुहातुमिछन्विचारमू
ढप्रतिभासिमेत्वम् १।

राजा०-(लाल लाल नेत्र कर) अरे दूत जानतानहीं कामसेन मेरा नामहै विनाविधाताके दूसरेका भय मुझको नहीं जा अभी अपने राजासे कहदे युद्धका सामान करें.

दूत०-(जो आज्ञा) परंतु अबभी कुछ नहीं बिगडा क्रोधको शांति करो अरु कामकंदलाको देदो नहीं पीछे बहुत पछिताओगे अरु कंदलाको दोगे मेरा प्रणाम लो में जाता हूं (गया).

राजा०-मंत्री अभी हमारी सेनामें डोंडी पिटवादोकि सब सावधान हो जाँय सेनापतिसे कहोकि चतुरंगिनी सेनासजाय युद्धका सामान करै.

मंत्री०-सेनापति आपको राजाजी बुलाते हैं.

सेना०-पृथ्वीनाथ क्या आज्ञाहै.

राजा०-सेनापति हमारी सेना शीघ्र प्रस्तुत करो.

बजाओ फौजमें डंका जहांलोंहैं मेरा लशकर
छोड घर बारकी ममता नगरसे चलपडो बाहर

अगाडी कालेकाले हाथियोंके दलहों वादलसे
पिछाडी घोडोंकीसेना अठारह लाखसे बढकर
रथोंके तांतेके तांते चले जावें झमाझमसे
वैठेहों दोदो मतवाले सिपाही पहिरे जरवख्तर
पैदलोंकीहो दलवादलसी सैना वांकी अरु तिरछी
किजिसकी गर्दसे छिपजाय शशि आकाश अरु दिनकर
रचोचतुरंगिनी सैना वनाओ व्यूह अलवेला
कि ऐसा सूक्ष्म हो मार्ग नाजिसमें जासकें मच्छर
अरे शूरो अरे वीरो तुम्हारा ही सहाराहै
वदाहै युद्ध विक्रमसे तुम्हारेही भरोसे पर
भाइयो इसही दिनके वास्ते वरसोंसे पालाहै
पौत्र रणधीर सिंह औ पुत्र मदनादित्यसे वढकर
नामहो जायदुनियामें लडोइंस भांति डटडटकर
एकदफे कोतो पृथ्वीपर वहादो रक्तका सागर

सबसेन०—हे महाराज आपधीर्य रखिये एक क्षण भरमें शत्रुकी सैना को मार भगाये देते हैं आप सन्देह न कीजे परमेश्वरने चाहा तो वीर विक्रमाजीतको जीत उज्जैनके कोटकी शिला शिला वखेर दी जायगी अरु ऐसे लडेंगे चाहे तनके कटकें टुकडे हो जांय परंतु पीछेको पग न धरें आपधीर्यसे वैठे रहें (यह कह सैनापति डेरे नगरसे वाहर डालते हैं अरु यवनिका धीरे धीरे गिरतीहै)

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाम नाटक प्रथमो गर्भांक सम्पूर्णम् ॥१॥

दूसरा गर्भांक

स्थान राजा विक्रमके डेरे

(राजा वीर विक्रमादित्य सब सेनापति मंडली समेत बैठे हैं वसीठ आता है अरु कामसेन राजाका सब वृत्तांत सुनाता है)

रा॰वि॰- मंत्री जो कुछ दूतने कहासो तुमने सुन लियो अब क्याढील है हे मेरे भुजदंड सैनापतियो कामसेनके कठोर बचन सुनकर हमारे हृदयकी आग भडक उठी इसलिये उसपै चढाई करना चाहतेहैं हमारा कटक शीघ्र उपस्थित हो अरु आज ऐसा करो कि एक वार तो धुआंधार हो जाय पृथ्वी कांपने लगे कूर्म कुल मुलाने लगे दिग्गज डिगमिगाने लगें भूतनाथ प्रेतमंडली लिये नाचते फिरें योगिनियोंके खप्पड रुधिरसे परिपूर्ण हो जाँय चौमुण्डा रक्तभर स्नान करने लगें अं-

धाधुंध युद्ध कर कबन्ध संग्राममें नाम करें रक्तकी
धारा धरापर बह निकले.

दूत०- (इतनेमें एक दूतनें आकर कहा) महाराज शत्रुकी
बाईस लाख सेना प्रलयकी घटाके समान उमडती
चली आती है जिसकी धूरिसे आकाश आच्छादित
होरहाहै सूर्य दृष्टि नहीं आता धौंसोंका शब्द शूरोंका
सिंहनाद वीरोंका गर्जना गजोंका चिंघाडना घोडों
का हिनहिनाहट बाजोंके शब्दसे कान गुंगियाये जाते
हैं बरछी भाले सांगीनें बिजलीसे चमकतेहैं अरु
चित्रविचित्र पक्षियोंकी भांति लालपीले पंचरंगे झं
डे फहराते चले आतेहैं.

कवित्त

बडेबडे शूरवीर योधा साबंत बली रथोंसेंस
वार मानो सूरतिहैं मैनकी। शूल गदा मुदग
र कृपान धनुषबान लिये ऐसी धाक हांक
जैसी भीमकरण बैनकी। कहत लल्लकार शू
रवीर बार बार एही लूट लेहु चलके आज ग
ढी उज्जैनकी। गजनको दबावत औ नचा
वत तुरंगनको आवत महाराज आजसे
नकाम सैनकी ॥१॥

विदू०- महाराज आप सब बैठे कौतुक देखते रहिये हम नि
रे पंडित ही नहीं हैं अरु परमेश्वरकी दयासे हम योद्धा
भी पूरेही हैं एकही बार कुंभकरणकी भांति सबका भक्ष
ण करछेः महीनेकी नींद सोऊंगा फिर किसीकी सुन्नेका
नहीं चाहे महादेव शिर मारते रहें चाहे ब्रह्मा पीछे पीछे

पुकारते फिरें

रा० वि०-(हसिकर) कृपासिंधु आपकातो भरोसाही है क्यों वृथा परिश्रम करते हो.

विद्द०-मैं अपना करतव्य प्रथमही क्यावर्णन करूं आपके प्रतापसे जो कुछ करूंसो देख लेना बहुत कहनेसे क्या होताहै बाण वर्षासे भूमिकी भांति शत्रुओंके हृदय विदीर्ण करूंगा घायलोंकी तृषार्त वाणी रणभूमिमें पपीहोंकी भांति ठौर ठौर सुनाई देगी बाणोंके मारे गगन अदृष्ट होजायगा बाणविद्ध शीश अरु भुजा आकाशमें गिद्धादि पक्षियोंकी नांई उडते फिरेंगे चील काक स्वान गीदड आदि मांस भक्षी जीव भली भांति तृप्त हो परस्पर विरुद्ध त्याग देंगे अरु रक्त रंजित रण भूमिमें आपके शत्रु ऐसी मोहकी घोर निद्रामें सोवेंगे कि फिर उठाये न उठेंगे अथवा उनका उठाने वालाही कोई न रहैगा.

सबवीर०-महाराज आज रणभूमिमें आप हमारा पराक्रम देखना जैसे किसान नाजकाखेत काटकाट बराबर बराबर बिछा देताहै ऐसे आज हम रिपुदलका बिछौना बिछादेंगे हमारेती खेती खेतीरविषके बुझे हुए जहरीले तक्षककी भांति उडउड कर शत्रुओंके हृदयका श्रोणितपियेंगे तब हमारा बल शत्रु दलको प्रगट होगा जबतक हमारे शरीरमें पुरुषार्थ रहैगा हम शत्रु को स्वप्नमेंभी सुखसे नसोने देंगे आज हमको आपके ऋणसे उद्धार होने क्षत्रीजन्म सुफल करने अरु सुरपुरके आनंद भोगनेका समय सहजमें मिलगयाहै सो

अबहम नाशवान शरीरके लिये कभी नहीं छोडेंगे.

रा॰धि॰- धन्यहै शूरवीरो धन्यहै ऐसेही समयके लिये कुलीन पुरुषोंकी सहायता कीजातीहै तुम्हारी ओरका मुझको पूर्ण विश्वासहै अरु तुम्हारेही भरोसेपर मैं निश्चिंत रहताहूं देखो भाइयो आज ऐसा संग्राम करो जो दोनों दलमें तुम्हारी वाहवाह हो जाय हम लोगोंको अपना क्षत्री धर्म अरु अपने शस्त्र सबसे अधिक प्रिय हैं सो परमेश्वरकी कृपासे आज दोनोंका समागम आ बनाहै इस लिये अब ऐसा उपाय करना उचितहै जिससे अपने धर्मकी ध्वजा फहरातीरहै अरु अपने शस्त्रोंको शोणितकी तृषा शेष नरहै.

शू॰वी॰- आप देखते जाइये कैसे कैसे पराक्रम अरु करतव्य आपको दिखातेहैं जैसे पतंग दलको दीप शिखा पर जलते कुछ काल नहीं लगता तैसे आपके प्रबल प्रतापसे समरके समय यह दल बादल तत्काल छिन्न भिन्न हो जायँगे.

दूत॰- (जलदी आनकर) महाराज शत्रुकी सेना सावनकेसी घटासम उमडी चली आतीहै खेतके निकट आपहुंची जो कुछ यत्न करनाहै शीघ्र कीजे.

सै॰प॰- अहो बीर रणधीर सेना सजाओ। अटल मारूबाजे बजाओ बजाओ १ करो सैनका सर्व सामान पूरा। अगाडी अगाडी बजाओ सिंदूरा २ तुरंगोंको दल मेंनचाओ नचाओ। लडो आगे बढ पगन पीछे हटाओ ॥३॥ छुरी सांग भाले संभालो संभालो॥ रिसालोंको शत्रूके झटपट दबालो ४ झपाकेसे घोडोंकी बागें उठाओ। भगा

ओ भगाओ भगाओ भगाओ ५ क्षात्र शूरता धीरता
बल दिखाओ। अर्सी खड्ग वर्छी शत्रुदलमें मचाओ ६
शतघ्नीमें बत्ती लगाओ लगाओ। सकल शत्रु सेनाकी घ
ज्जी उडाओ ७ धडाधड धडाधड करो मार ऐसी। जो
शत्रूको मालूम होवै प्रलयसी ८ लडो इदके वेरबदके
पगमति हटाओ। रुधिर धार धरणीपै ध्रुवतक वहाओ ९
जो मारो बली नाम उसका लिखाओ। जो भागे कोई पीछे
उसके न जाओ १० करो युद्ध बांका और शूर वीरो। मेरे श
त्रुके दलको घेरो घरेरो ११ करो युद्ध ऐसा रहे नाम क
लमें अकेलेही घुस जाओ शत्रूके दलमें १२ जहां शत्रु
देखो वहीं धर गिराओ। सदा विक्रमादित्यकी जय मना
ओ १३ सुयश विक्रमादित्यका नित्य गाओ। मनाओ म
नाओ सदा जय मनाओ १४

सब योधा मिलकर एक वारगी शत्रुसेनामें हाला चाला
डालदो (दलमें लगे मारू बाजे बजने अरु शूर वीर शस्त्र
बांध बांध लगे घोडे कुदाने अरु बरछी भाले चमकाने अरु
अपना अपना करतब दिखाते) (नेपथ्यमें जाते हैं).

माधो०-हे पृथ्वीनाथ आपने मेरे कारण अत्यंत परिश्रम उठा
या। लज्जाके मारे मेरा मुख आपके सन्मुख नहीं हो
सक्ता क्योंकि न कुछ बातके उपर आपको इतना क्लेश
सहना पडा परंतु मेरी कुछ इच्छा है जो आप मेरा
मनोर्थ पूर्ण करें.

रा०वि०- तुम्हारा क्या मनोरथ है वर्णन कीजिये.

माधो०- आपके शूरवीर तो बडेही रणधीर हैं परंतु प्रथम सु
झसे अरु कामसैनसे अथवा उसके पुत्र पौत्र से युद्ध

हो कामसेनकी ओरसे मेरे मनमें वडा क्रोध भर रहाहै क्योंकि उस दुष्टने कुछ अपना बुरा भला नविचारा अरु मुझे ऐसे समयमें अपने नगरसे निकालाहै कि मेरा हीजी जानताहै जो आपकी आज्ञाहो तो उसदिन काव दला आज लूं अरु अपने हृदयकी दाह बुझाऊं.

रा०बि०—(हंसिकर) जान पडताहै कि आप रणविद्यामेंभी निपुणहैं.

माधो०- सब आपहीके प्रतापका प्रभावहै.

रा०बि०- यह वीर क्या थोडेहैं जो तुम संग्राम करनेकी इच्छा करतेहो! आप बैठे बैठे मेरे वीरोंका कौतुक देखिये जरा देरमें कामसेनकी सैनको जीत दलमें जीतका डंका वजाये देतेहैं अरु अभी कामसेन समेत कामकंदलाको मंगातेहैं अरु कामावतीकी गद्दीपर आपको विठाये देतेहैं फिर धीरे धीरे अपने हृदयकी दाह वुझा लेना.

माधो०- सत्यहै महाराज आपके वचन तो पत्थरकी लकीरहैं इसमें कोई सन्देह नहीं यह तो न कुछ कामहै आपके प्रतापसे इन्द्रलोक अरु पाताललोक से सब वस्तु आसक्तीहै परंतु मेरे मनका दाह उसी समय बुझेगा जब अपने हाथसे कामसेनको परास्त करूं.

रा०बि०- जो आपहीकी यह इच्छाहै तो मैं निषेधभी नहींकर सक्ता आप युद्ध कीजे अरु जिस शस्त्रकी कांक्षाहो सो लीजे अरु अपने मनकी अभिलाषा पूरीकीजे.

माधो०-(सब आपकी दयाहै) यह शिवका दिया त्रिशूल ही बहुतहै.

विदू०- महाराज तो आज मुझको भी आज्ञा होय जो क्षण भरमें शत्रुदल छिन्न भिन्न कर तुंड मुंड बखेरडालूं अरु सात समुद्र आपके नामके अरु सात समुद्र अपने नामके अरु सात इस वियोगी ब्राह्मणके नामके खुदवाय रुधिरसे भरदूं अरु कामावती नगरीको उठाय इक्कीस समुद्रके पार जाय धरि आऊं जो यह वियोगी योगी वन ढूंढता ही फिरो करे ज वलों हमको कुछ अकोर नहीं दे करोर वर्ष पर्यंत भी हाथ न आवे सब त्रिशूल प्रसूल भूल जांयगे हमको भी परमेश्वरने पूर्ण बली ब्राह्मण बनायाहे परशुरामने भी हमसे ही बूझकर अपनी माताको मारा था रावण भी हमारा पुराना मित्र था उसने हमारी ही आज्ञासे सीताको चुराया था जरासंधने हमारी ही सहायतासे श्रीकृष्णको सत्रह वार जीताथा जब कंस हमसे मिला तो हमने सहाय कीतो कंसका विध्वंस किया शिशुपाल वाणासुर हिरण्याक्ष हमारे घरानेके चेले थे हमारी ही बांधी बंधेथी अरु हमारी ही खोली खुलेथी कहो तो सब पृथ्वीपर जल्हीजल करदूं कहो दशोंदिशामें ज्वालाही ज्वाला दृष्टि आने लगे मैं सर्व विद्यामें पारगामीहूं.

रा०बि०- (मुस्क्याकर) सत्यहे महाराज सत्यहे आपके वाक्य अरु बलका क्या सराहनाहे आपकी दृष्टिसे ही सृष्टि काल यहो सक्ताहे तुमको परमेश्वरने महाबलवान अरु परोपकारी बनायाहे आप तुच्छ काममें परिश्रम नकीजे किसी भारी काममें आपसे काम लिया जायगा यह किंचित् संग्राम क्याहे यहां तो आपके नामसेही काम हो जाइगा.

विदू०-(आपकीइच्छा) हमकोतौ किसी बातसे प्रयोजन नहीं
रा०धी०-सेनापति बारहलक्ष सैना अत्यंत युद्धमें बुद्धिबल
शाली अरु पांच महाबली महाराज माधवनलकी सहा
यताके लिये संग करदो.
१ वज्रनाभ २ मेघडंबर ३ रिपुदमन ४ आरिमर्दन
५ शत्रुनाशक. अरु हे विजयभैरव तुम इनके संग र
हना किसी भांतिसे यह अपने मनमें दुख न मानें अरु
जो शत्रुकी सैना को प्रबल देखोतौ बसीठ को भेज देना
उसी समय और सैना भेजदी जायगी.
(राजाके वचन सुन विजयभैरव सैनापति बारहल
ख सैनाले माधवनलके संग युद्धको जाताहै अरु य
वनिका गिरतीहै).
इति श्री माधवनल कामकंदला नाम नाटक शालि
ग्राम वैश्य कृत पंचमो अंक समाप्तम् ॥५॥

छठवाँ अंक

स्थान कामसैनका कटक

(एक दूतने आकर कहा महाराज)

दूत०- कवित्त

आवतहै सैनमहाप्रलयके बादलसे धौंसन
केशब्द मानोगर्जन आसमानकी। चपला
से अस्त्रशस्त्र चमकरहे चारों ओर वर्षासी
वर्षरही धनुष औरबानकी ओलेसे गोलेप
डेंकिरचैं बगपांतिनसी धनुषकी शोभा मानो
पंचरंगानिशानकी शूरवीररावत पुकाररहे
दादुरसे सदाजैहोसदाजैहो विक्रमबलवा
नकी ॥१॥

माधवनल ब्राह्मण बारह लाख सैना लिये आताहै सा
क्षात परशुरामका अवतारहै उसके बलकी बराबरीको

न कर सक्ता है तक्षकसे शत्रुओंको मयूरके नेत्रोंकी अ
ग्निके सदृश इनके नेत्रही सन्मुख नहीं रहनेदेते संग्रा
ममें परशुरामकी भांति इनका अमोघ पुरुषार्थ प्रग
टहै इक्कीस वार छत्रियोंको मार उनका वंश निर्वंशक
रदिया जैसी युद्धकी रीति किसीको नहीं आती इनके
शल्लके प्रहारके सहनेकी किसको सामर्थहै पांच से
नापति इनके संगहैं युधिष्ठिर - सहदेव - नकुल - अर्जु
न - भीम के समान कौन बलवान इनका साम्भाकरस
क्ताहै प्रथम यही दलसे निकल शस्त्रलगाये त्रिशूल
ताने सिंहसा दहाड़रहाहै जोशत्रुसेनामें संग्रामका पा
रगामी और नामीहो वह मेरे सन्मुख आनकर युद्धकरै

रा० का० - पुत्र मदनादित्य - माधवनलसे तुम युद्धकरो जा
ओदेवीकी कृपासे जयहोगी दशलक्षसेना अरु सात
सावंत महा बलवंत लोहेके चाबने वाले अपने संगले
जाओ परंतु उस ब्रह्मनेटे भिखारीका शिरतो काटना
मति पकड़कर हाथोंमें हाथ कडी पैरोंमें बेडी डाल मेरे
पास ले आना अरु जितनेवीर उसके संगमेंहैं सबको
रंग भूमिमें रुधिरके रंगमें रंगदेना.

मद०दि० - (खड्ग हाथमें लेदलसे बाहर निकल पुकारा) खबर
दार संभलजाना मैं आपहुंचा भाग न जाना.

माधो० - अरे मूर्ख भाग जाना क्या वस्तुहै भागाक्रिया हमारी
भली भांति जानी हुई है अभी तेरे शरीरके चार भाग क
र दिखाये देतेहैं तेरे भागमें हमारे ही हाथसे तेरा मरण
लिखाहै.

मद०दि० - आपके सब लक्षण ब्राह्मणोंकेसे दृष्टि आतेहैं कि

रवेद पाठ त्याग मेरी भुजाओंके सागरमें क्यो डूबन चले आये अपने प्राण ले भाग जाओ क्या भाग क्रियाभाग क्रिया करते फिरोहो कहीं तुम्हारीही क्रिया नहो रहे अभी यहां रणयुद्ध यज्ञ होरहाहे कामसेन यज्ञकर्त्ता हे हमसब ऋत्विकहें विक्रमादित्य यज्ञका बकराहे जिस समय यज्ञ सम्पूर्ण होकर संत ब्राह्मणोंको भोजन जिमाया जायगा आपका भागभी निकाल कर रखछोडेंगे लेजाना अब यहांसे भाग जाओ धोखेमें कहीं किसीकी आईमें तुमन मारे जाओ यह लोहेकी कठिन आंचहे क्षत्रियोंके सिवाय किसी औरसेस ही नहीं जाती.

माधो०-रे अधम दुर्बुद्धि हम तुझको अज्ञानी जान तेरे कहनेका बुरा नहीं मान्ते नहीं तो तेरे दुर्वचन सुनतेही मारे बाणोंके तेरी जिव्हाके खण्ड खण्ड करदेते तू हमारा वेषदेख निरा ब्राह्मणही मति समझना जब हमारा पौरुष देखेगा तो स्त्रीवन किसी बनमें वनवासियोंकी कुटी ढूंढता फिरेगा चकमकके पानीमें रहनेसे उसकी अग्नि छीन नहीं हो जाती.

मदनदि०-ओहो आपके शरीरमें तो बातके कहनेही पतंगे लग गये चकमककी तरह चिनगारी निकलने लगीं आप केवल लक्षणोंसेही नहीं कर्तव्यसे भी ब्राह्मणही जान पडतेहैं क्योंकि क्षत्रियोंकी भांति आपकी भुजाओंसे बल नहीं दिखाई देता केवल बाणीहीके वीर दृष्टिमें आते हो कहनेको सब कुछ परंतु हो न सके कुछभी.

माधो०-अरे अत्याचारी विश्वास घाती तैंने विश्वामित्रके

कर्म नहीं देखे मुहूर्त मात्रमें इन्द्रको जीत नई शृष्टि रच दिखाई तुझको लज्जा नहीं आती तू हमारे सन्मुख मुख करके बोलता है याद नहीं इक्कीस बार परशुरामने पृथ्वीको जीत क्षत्री वंशको निकच्छ कर क्षिति ब्राह्मणको दान करदी

मद०दि०- धन्य धन्य आपकी बुद्धिको यह तो कहिये ब्राह्मणोंसे मिलकर फल किसने पाया विश्वामित्रने नवीन शृष्टि रचिके कौनसा सुयश कमाया त्रिशंकुका ऐसा खोज खोयाकि उसको मध्यमें लटकाया धरतीका रक्खा न आकाशका हमतो लज्जाके मारे डूबे जाते हैं परशुराम ऐसे औतारी प्रगट हुएकि जिस महतारीके गर्भमें जन्म लिया उसीका शिरकाटा दशरथके पुत्रोंके आगे कानभी न हलाया निरे साधुही बनगये लज्जातो न आती होगी परंतु तुमको क्या लाज तुमतो जन्मके भिखारीही ठहरे घरके कुटुंबको मार अपने आपको वली समझने लगे परंतु आपने समर रूपी समुद्रकी लहरें नहीं देखीं जो देखोगे तो छाती फट जायगी वहां ठहरनेके लिये परमेश्वरने क्षत्रियोंहीको उत्पन्न कियाहै.

माधो०-रे सठ मिथ्यावादी तुझे हमारे पुरुषार्थकी सुधि नहीं हमारे तेजसे एक समर सिंधुकी तरंगेही शांति नहीं होंगी जैसे परशुरामके प्रतापको देख वारीशने शीशनवास आय शरणली अरु मार्ग दिया अगस्त्य मुनि समुद्रके तीन चुल्लूकर पीगये अरु मूत्रके मार्ग वहादिया अरु कहा जा हमारे नेत्रोंकी ओट होजा जा आजसे तेरा जल खारी हो जायगा जबउसी समुद्रकी यह गति

की तो यह संग्राम सिंधु तो कोईसा फाड दिया जायगा

मद०दि०–ओहो अब तो आप समुद्रके चुल्लू करने लगे वि दित होता है पृथ्वीका भी भक्षण करोगे अब काहेको कोई जीता बचैगा मैंने जान लिया आपहीके कोपसे महा प्रलय होती है.

माधो०– अरे अज्ञानी हमको निरा ब्राह्मणही मत जान क्षण मात्रमें तेरे दलको क्रोधकी कृशानुमें विजया हवन करसक्ते हैं चाप जो है यही हमारा श्रुवा है शर आ हुति है कोप अग्नि है यह तेरी सेना समधे हैं तेरे कटु वचन साकल्य है कामसेन यज्ञ पशु है यह त्रिशूल वलि देनेका शस्त्र है तेरा शीश हवनकी शान्तिके लि ये श्रीफल है.

मद०दि०– अपने मुखसे अपनी वडाई करनी कायरोंका काम है.

माधो०–रे मिथ्या अभिमानी हम कायर हैं तू नहीं जान्ता प रशुरामने सहस्त्रावाहुकी सहस्त्र भुजा क्षणमात्रमें काटकर फेंकदीं.

मद०दि०– नहीं महाराज आप कायर क्यों होते आप तो वाक शूर हैं बलवान भुजवलसे कायर नेत्रजलसे वा कशूर वचन छलसे निजमनानंद कर लेते हैं.

माधो०- रे निर्लज्ज हम छलवलसे चित्त संतुष्ट कर लेते हैं सो क्या हम अपनी भुजाओंकी सामर्थ्यसे नहीं करस के आज हमको वह शक्ति है चाहै तो तेरे देशको क्ष णमात्रमें लोट पोट करदें.

मद०दि० आपतो साक्षात् बलभद्र हैं जो यह काम कर भी

डालो तो कुछ आश्चर्य नहीं मैंने तो आपका स्वरूप देख
तेही जान लिया था अब क्यों व्यर्थ ब्रह्मघातका दोष
मेरे शिर रखते हो.

माधो॰-धिक् मूढ लम्पट मुझको निरा ब्राह्मणही कहकर
हमारे तीक्ष्ण शरोंसे निवृत्त होना चाहता है तो लेह
मजने ऊ भी उतारकर बगेले देते हैं अरु शस्त्र भी अ
लग धरे देते हैं मुष्ट प्रहारसे ही हमारी तेरी जीत हार
विदित हो जायगी हमको कोरा लोभी ब्राह्मण मत स
मझ हम रावणसे अधिक युद्धार्थी ब्राह्मण हैं हमने इ
क्कीस बार क्षत्रीवंशका विध्वंश कर पृथ्वी ब्राह्मणको
दान करदी अरु फिर क्षत्रियोंको दुखी देख उन्हींको
दे दी.

गौडोंको गौड बंगाला... पौडपुरियोंको उडीसा जगन्नाथ.
बघेलोंको मगध... वैश्योंको- वैश्यवारा- अंतरवेद.
भिलवारोंको विदर्भ.... रागेरोंको कम्बोज.
पंचवानोको पांचालदेश.... चावडोका पाटन.
वत्सलोंको कावरू....गोलवत्तोंको चोलदेश.
वड गूजरोंको काठियावाड गुजरात.
कठेरियोंको करनाटक.. जंघारोंको द्रावण मद्रेश.
पलनहास्योंको तैलंग चौहानोको सम्भल.
तोमरोंको दिल्ली, बुंदेलोंको बुंदेलखंड.
गहरवारोंको केरलदेश... पमारोंको पंचजल.
यादवोंको सोरठ..कछवायोंको कच्छ.
परिहारोंको मारवाड. समा- और- भट्टोंको सिन्धु.
रूम- साम- गोरखोंको नैपाल- कटियारोंकोकाश्मीर.

पारस- केकेय- गान्धार- समरकवन्ध- मोलिंगियोंको मुलतान- लाहौर- अमरेशोंको अम्बरीषा- राजपूतों को- भीमताल- भोटान- मानसरोवरसे बद्रिकाश्रमपर्यंत इस भांति पृथ्वी सबको बांट हमने वैराग्यले लिया.

मद०दि०-सब बडाई होचुकी अवतो कुछ बाकीनहीं रही और कुछ कहनाहोतो कहलो क्योंकिफिर पीछे मनमें पछितावा नरहजाय हमने कोई बात नहीं कही तुम्हारही सुख तुम्हारीही बडाई यहां कुछ लडाई लडनी थोडेही पडतीहै मनसे आयासो गाया.

माधो०-रे कायर क्लीव हमक्या अपनी बडाई अपने मुख से झूंठी करतेहैं क्या हमको धरती आकाश एक करनेकी सामर्थ नहींहै क्या हम तुझसेहैं सातवर्षपर्यंत स्त्री बनाबन विचरता फिरा हमारेही पिताने तुझको पुरुष बनाया अब बलवान बन बलका घमंड दिखाते हो मनमें लज्जित नहीं होता.

मद०दि०-अरे वृथा बकवादी ब्रह्मवंश घालक मैंने ब्राह्मण समझ तेरे कठोर बचन सुने परंतु अब जानाकि तू ब्राह्मणके वीर्य्यसे उत्पन्न नहींहै अरु तेरी बंदरकेसी घुडकी अरु कौवे केसी कांव कांव नहीं जातीहै ले संभल जामें शस्त्र प्रहार करताहूं.

माधो०-रे दुष्टात्मा- चाण्डाल- तेरा काल तेरे शिरपर गाज रहाहै क्यों वृथा हत्यादेनेको फिरताहै जामेरे नेत्रोंके साम्हनेसे चला केहरी मेंडकको कभी नहीं मारता परंतु वह अपने आपको बडा बलवान जान अपनी टरटर करताही रहता है अपने नीच पनको नहीं छोडता ले हम

भी अव धनुष चढातेहैं संभल (दोनोंने धनुष वाण चढालिये) रणसिंहेका शब्द नेपथ्यमें होताहै अरु मारू राग गा रहेहैं चरण घुमा घुमाकर दोनों वीर तूणीरसे तीर निकाल निकाल वह उसके शरीरमें अरु वह उसके शरीरमें तक तक मारताहै अरु बारम्बार शंख ध्वनि होतीहै) नेपथ्यमें.

राग मारू

रंगभूमि घूम घूमलरत वीर भारी
भंभंभटभिरत आनकंकंकरले कमानसंसं
शरतान तान मारत धनुधारी १ धंपंपगधर
तबदल भंभंभटउछल उछलसंसंसंगडर
सकललरतले कटारी २ गंगंगहिगहि कढा
रकंकंकहैं मार मार रंरंरिपुकोप छारपीटत
हैंतारी ३ बंबंबलवान लरत नंनंनहिने कड
रत धंधंधनु धाय धरत रिपुकोलल कारी ४

राग मारू तथा

युद्ध करत क्रुद्ध सहित योधा नहिंहारत
खेंच कानलौं कमान मारत शर तान तान शू
रवीर पलनिधानगाढे किलकारत १ गिरत
परन फेर उरत मनमें नाहिंने कडरत सन्मुख
होशस्त्र करत कठिन मार मारत २ मार मार
चार ओर होत युद्ध महाघोर योधा कर जोरसों
रदल्लसें ललकारत ३ बरछी भाले कृपान द
मकैं चपला समान वैरी भयमान मानं आतकोपु
कारत ४ कटत मुंडलरत रुंड मस्तकसोंह

तत्रिपुंडल्होहूसेभरतकुंड भयोभूरिभारत्त ५

गानेका शब्द अरु तूर्य्यका नाद शंखकी ध्वनिसुनिदो नोंवीर सिंहसमानगर्जनेलगे कायर क्लीव कठिन युद्धदेख लर्जने लगे माधवनल बाणवर्षासे अरु त्रिशूलकी मारसे मदनादित्यको व्याकुल करदेताहै अरु वेधडक हरेकवीरको मारता पछाडता सिंहकी तरह दहाडता सम र सिंधुकी काईमी फाडता दलियोंको उत्ताडता चला जा ताहै).

(सुबाहुकी बाहु उखाड शत्राजितको पछाड वज्रदंत के दंत झाड कुलिशनाभकी छाती फाड व्यूहरूपी बाग को उजाड अकेला सिंहकी तरह दहाडरहाहै माधो०)

मद०दि०- उंचस्वरसे ललकारकर सावधानहो.

रे पाखंडी पाखंड फैलाने वाले कभी किसीसे लडना क भी किसीसे लडना कभी इधर जुटना कभी उधर जुटना कभी आगेको भागना कभी पीछेको भागना इनबातोंसें कुछ शूरता नहीं पाईजाती जोतू बडा ब लका गर्व रखताहै तो शस्त्र रखदे अरु मुष्टयुद्धकर प्रथम हमसे झूंठी सटपटसे काम नहीं चलता आजदे खूं तूं कैसा बलशाली है.

माधो०- यह बडे आश्चर्यकी बातहै किस्यारको सिंहसे यु द्ध करनेकी अभिलाषाहुई (इतनाकह फिर माधोनल मदनादित्यसे जाजुटा अरु ऐसा घोर युद्ध मचाकि दोनो के शरीर चलनीवनहोगये निदान लडते लडते माधो नलका त्रिशूल मदनादित्यके हृदयमें लगताहै अरु व्याकुल होकर भूमिपर गिरताहै अरु सेनामें कुलाहल

पडताहै अरु अप्सराओंका मनोर्थ पूर्ण होताहै ! नैपथ्य में गाना बंद होताहै).

(कामसैनकीसेनामें हाल्लाचाल्ला देख विजयमें खटकटकको धीर्य देके खटक आगे बढताहै अरु फिर माधवनल अपने अस्त्र शस्त्र सँभाल कालरूप हो गर्जताहै अरु फिर महाघोर संग्राम मचताहै अरु फिर नैपथ्य में जुझाऊबाजेके संग मारूराग गाते हैं)

राग झंझोटी

करत सब योधा युद्ध अपार
चलत कृपान शूल अरु शक्ती मारत कोई कटार
धूमधामसे चलै भुजंगी हो रही मारामार
तक तक तीरवीर सब मारत जहरी सर्पाकार
कटत शीश भुज उर छत्रिनके तौ ऊन मानत हार
मार मार कर रहे दशौं दिशिनन की सुरत बिसार
गिरत वीर उठि करत बहुरि रण धुवां धार अंधियार
दोउ दल लरत गिरत भट कट कट बहत रुधिरकी धार
मचो घोर घमसान कोन कित कोउ नहिं करत विचार
मार मार ध्वनि होत कटक में दया करें करतार
बडे बडे सावत शूर साठ ढेरहे निहार
बरन परत काहू को नल पर छलबल कर तहजार
दोनौं दलमें चलत शतघ्नी रहे वीर ललकार
खबरदार कोइ जान न पावै घेर घार लो मार
खरबल खरबद मक च मक शस्त्रनकी कायर कूरग मार
साधु संत बन लगे भागने डार डार हथियार
धरु धरु धरु रिपु जान न पावे योधा रहे पुकार

शालिग्रामरामइसरणमेंरारवेनामहसार

(माधवनलकी वाणवर्षासे पलमात्रमें पृथ्वी आकाश अ
दृष्ट होगया गज अश्व मनुजादि घायल मृतक शरीरोंके
ढेरकेढेर पर्वतसे दृष्टि आते उनमेंसे रक्तकी नदी लहरेंले
तीचली जातीथी जिन्में वीरोंके छिन्नभिन्न अंगकच्छ
मच्छ ग्राहसे दिखाईदे रहेथे अरु कनारोंपर चीलका
क गृद्धादिहंससारस चकवेचकवीकी नांई तक रहेथे
अरु बगुले मुर्दोंके नेत्रोंको मीन समझ निकालनिका
लखारहेथे आँतें कमलनालशैवालादिसी जिधर ति
धर जान पडतीथीं स्वानशृगाल आदि मनुष्योंकी अं
तडी ऐसे खेंच तानरहेथे मानो मोर सर्पोंको पकड
पकड निगलरहेहैं घायलोंके करुणावचन प्यासे
पपीहेकी तरह सबके चित्तको उदास कररहेहैं योधा
ओंके क्रोध भरे शिरभी दांतोंसे होटोंको काटतेही दृष्टि
आतेहैं मानो नारियल रुधिरधारमें वहे चले जातेहैं
सेवक स्वामियोंकी आर्तवाणी सुनिसुनि शिरधुनि
धुनि रोयरोय घावोंमें टांके जो लगा रहेहैं मानोकिशा
न अपनी खेती नलारहेहैं अरु कोई कोई योधायु
द्धका समान जोकर रहेहैं मानो किशानोंको खेतोंमें
बीजबोनेकी कांक्षाहै चारोंओरजो हाहाकार शब्द
हो रहाहै मानो दादुरमोर झिंगार रहेहैं शत्रुसेना
खेत छोड छोड ऐसे भाग निकली मानो किसान
ग्रामवासी हल कांधेपर धरे बैल आगे करे संध्या
समय अपनेअपने घरको चले जातेहैं (नेपथ्यमें)

नाराचछंद

अनेकवीरशस्त्रडारमुंहछिपायचलदिये ॥
अनेकवीरचूतरोंपैदागखायचलदिये ॥१॥
अनेकवीरवस्त्रकांखमेंदबायचलदिये ॥
अनेकवेषसाधुसंतकावनायचलदिये ॥२॥
अनेकपुत्रपौत्रत्यागजीवचायचलदिये ॥
अनेकवीरस्वर्गलोकशिरकटायचलदिये ॥३॥
अनेकवीररक्तकीनदीबहायचलदिये ॥
अनेकवीरछापनामकीलगायचलदिये ॥४॥
अनेकवीरसैनमेंबलीकहायचलदिये ॥
अनेकवीरदोनोदलमेंनामपायचलदिये ॥५॥
अनेकवीरवीरपनकिधजादिखायचलदिये ॥
अनेकवीरधनुषबानकोचढायचलदिये ॥६॥
अनेकवीरनिजकबन्धकोनचायचलदिये ॥
अनेकवीरनामवंशकोमिटायचलदिये ॥७॥
अनेकवीरशत्रुसैनकोसुवायचलदिये ॥
अनेकवीरभृत्यवर्गऋणचुकायचलदिये ॥८॥
अनेकवीरसिंहसेदहाडरहेयुद्धमें ॥
अनेकशूरशत्रुशीशझाडरहेयुद्धमें ॥९॥
अनेकशूरशत्रुपेटफाडरहेयुद्धमें ॥
अनेकशूरशत्रुकोलताडरहेयुद्धमें ॥१०॥
अनेकशूरशत्रुकोपछाडरहेयुद्धमें ॥
अनेकवीरशत्रुदलउजाडरहेयुद्धमें ॥११॥
अनेकवीरशत्रुशीशकाटकाटकटगये ॥
अनेकवीरयुद्धमांहिंक्रुद्धसहितउठगये ॥१२॥
अनेकवीरशत्रुशयनमारमूरहटगये ॥

अनेक वीर खूझते फिरंइ घर सुभट गये ॥१३॥
अनेक वीर शत्रु को मसान से लिपट गये ॥
अनेक वीर पैंतरे बदल बदल झपट गये ॥१४॥
अनेक वीर शत्रु सैन का संहार कर रहे ॥
अनेक वीर मार मार मार मार कर रहे ॥१५॥
अनेक वीर क्रुद्ध ह्वै गदा प्रहार कर रहे ॥
अनेक वीर शत्रु हनन का विचार कर रहे ॥१६॥
अनेक वीर शत्रु सैन घेर घार कर रहे ॥
अनेक वीर शीश कंठ पर कटार कर रहे ॥१७॥
अनेक वीर जीत पाय कर जुहार कर रहे ॥
अनेक वीर जयति जयति बार बार कर रहे ॥१८॥

दोहा

लरत धरणि पर धरणि हित नभ में अबल नहित
हमलें ह्व सलें कर मरत को अलित न देत ॥१॥
लरत मरत पुनि उठि लरत देखें को लै आज ॥
अबल न कारण युद्ध में करत स्वर्ग में साज ॥२॥

राग काफी

महावीर वधीर धरणि पर दुख निर्वारण
लरत मरत फिर भिरत समर सैन पैठ भरत सुरपुर में
बहुरि लरत लरत नाश कारण
लरत सकल शस्त्र धार कहत वीर बार बार मार
मार मार मार निकसत मुख मारण
देख एक शुभग नारि आपस में करत रारि है हमा
रि है हमारि झगरत जिमि वारण
लरत मरत नारि हित तरवेत माहिं प्राण देत जौन जौन

जन्मलेत सीखत संहारण

(राजा विक्रमके पास आकर)

दूत०–परमेश्वरकी कृपासे शत्रुसे विजय पाई माधोनलके हाथ जीतरही आपके प्रतापसे शत्रुकी सबसेना तितर बितर हो गई अरु कामसेनका पुत्र मदनादित्य माधवनलके हाथसे मारागया विजय भैरव कटक छोड़ भाग निकला दलमें जीत काडंका वजादिया अरु आपका सब परिश्रम परमेश्वरने सफल किया अब संध्यासमय जान सब बलवान मैदान छोड अपने अपने स्थानको जातेहैं (अरु यवनिका गिरतीहै).

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाम नाटक शालिग्राम वैश्यकृत षष्टमो अंक समाप्तम ॥ ६ ॥

सातवां अंक

स्थान रणभूमि

(कामसेनका पौत्र रणधीरसिंह अपने पिता मदनादि त्यकी लोथले स्थानपर आताहै अरु सबदलमें हाहाकार मचताहै).

काम०- हाय पुत्र आज तुम रणभूमि छोड वैकुंठवासी होगये हाय हम किसका नामले पुत्र पुत्र पुकारेंगे हाय मेरे नेत्रोंके सन्मुख तुम्हारी यह गति हो जो में यह जानता कि रणमें तुम्हारा मरण होगा तो तुमको में अकेला कभी नहीं भेजता हाय पुत्र मैंने तुमको बहु तेरा वर्जा परंतु तुमने मेरा एक कहा नहीं माना हाय मेरा सब परिश्रम परमेश्वरने निष्फल करदिया अरु मेराभी जीना व्यर्थ है हे पुत्र अबतो मेरे मरणका समय था मेरे बदले तुमने अपना प्राणदिया हाय पुत्र इस समय

ऐसा कठिन दुख दिखाया हे पुत्र मेरे ऊपर जराभी विप
त्ति पडतीथी तो तुम। वारंवार बुझ तेथे कि पिताजी क्यों
उदास हो रहेहो अव मेरा विलाप सुन क्यों नहीं उठके
धीर्य देते अव ऐसा मोनसा धा किसीकी भी नहीं सुनते
हाय अवमें नगरमें क्या मुंह दिखाऊंगा सवलोग
परिहास करेंगे कि पातरके पीछे पुत्रका विनाश करा
दिया इनवातोंके सहनेको मेरा हृदय वज्रका होग-
या जो नहीं फटता हाय तुम्हारा मृतक शरीरमें अपने
नेत्रोंसे देखूं अरु मेराहृदय विदीर्ण नहो धिक्कार हे
ऐसे जीतवको हे परमेश्वर मेरे प्राण क्यों नही लेता
यह कठिन कठोर कष्ट मुझसे सहा नहीं जाता.

मंत्री०- महाराज ईश्वरकी गति अपरम्पार हे उसकी महिमा
किसीसे जानी नहीं जाती इस समय सोच संकोच
करना वृथाहे चतुर मनुष्य हानिलाभको समान
मानतेहें विलाप करना मूर्खोंका काम हे दूसरे आप
के शिरपे शत्रु गाज रहाहे यह समय धीर्यका हे तु
म जो इस सोच सागरमें पडेहो तुमको राजके भंगहो
नेका कुछ भी भय नहीं अव आप धीर्य धारिये अरु
कुछ उपाय करिये अपने इष्टदेवको मनाइये क्यों
कि इसी समय कोई काम न आया तो फिर किस सम
य काम आवेगा-

राजा०- मेरी इष्टदेव तो दुर्गादेवी हें.

मंत्री०- महाराज आज युद्ध तो वंद रखिये अरु श्री भवा
नी महारानीका पूजन कीजे जो इस विपत्तिमें आय
सहाय करे वहतो अनेक कष्ट भंजनी दुष्टदल गंजनी

भक्त मन रंजनीहै जिसने उसकी चरण शरण लीपल मात्रमें उसका कष्ट निर्वारण हो गया.

राजा०- (स्तुति करताहै) हे देवी ०-

श्लोक

ब्रह्मावेदनिधिः कृष्णोलक्ष्म्यावासः पुरन्दरः।
त्रिलोकाधिपतिः पाशीयादसाम्पतिरुत्तमः १
कुवेरो निधिनाथो भूद्यमोजातः परेतराट ॥
नैऋतोरक्षसान्नासौ मोजातोह्यपोमयः २
त्रिलोक वन्धोलोकेशि महामांगल्यरूपिणी।
नमस्तेस्तु पुनर्भूयोजगन्मातर्नमो नमः ३

हे आम्बिके तूभी इस समय सोगई यह सब अवस्था तेरीही सेवामें व्यतीतकी परंतु तुझको कुछ भी ध्यान नहीं तेराही वडा भरोसाथा सोतैंने भी सुधि न हीली आजहीके दिनके कारण तेरी टहलकीथी जो तू सच्ची सुखदानीहै तो शीघ्र आन मेरे सुतको जीव दानदे (यह कह मूर्छित हो गिरपडा).

मंत्री०- महाराज उठिये बुद्धि शुद्धि रखिये आप घवराते किस कारण हैं वह देखो सिंहारूढ अस्त्र शस्त्र धारणकिये चोसठ योगिनि बावन भैरव वीर वैताल संगलिये मद का प्याला पिये एक हाथमें खप्पड एक हाथमें त्रिशूल शेष हाथोंमें अनेक अनेक शस्त्र लिये श्रीमती भगवती ललकारती वककारती मार मार पुकारती धूम धामसे चली आती है.

देवी०- किधरहैरे कामसैन किधरहै मेरे सन्मुख आ घवराना मतिमैं आन पहुंची वेगवती तुझे किसने स

ताया मैं अभी क्षणमात्रमें चंड मुंडकी भांति उसका मुंड काट तेरा चित्त संतुष्ट करूंगी.

कवित्त

केसे यह रुंड मुंड झुंड परे लोथिन के भूमिलाललाल है कि मैंहीं आज लालीहूं कवनेसतायो तेंहि अभी खंड खंड करों अवल अरक्षणकीरक्षप्रतिपालीहूं। फोरिडारों वसुधा मरोरिडारों सुमेरु गिरि कालचक्र तोरिडारों आजु मैं वहालीहूं । कालीकरों अरिकुं आज शत्रु विकराली करों जंग भूमि लाली करों तो मैं महाकालीहूं ॥

काम०-(चरणार्विन्दकी वन्दनाकर) धन्य है मात धन्य है जो मुझे इस विपत्तिकालमें दर्शन दिया अरु इस समय आय सहाय करी.

देवी०-हे पुत्र वतातानहीं तुझपर क्या विपत्ति पडी जो तैंने मेरा स्मरण किया.

काम०-हे भगवती इस माधवनल ब्राह्मण निलज्ज भिक्षुक दुराचारीने अति अनीतिकर मदनादित्यको मारडाला अरु सब सेनाको तितर वितर करदिया (यह कह मदनादित्यकी लोथ देवीके आगे धरदी).

देवी०-अरे मदनादित्य उठमें तेरे मुखमें अमृतकी वुन्द चुवातीहूं.

मद०दि०-(पढाहीपडा) कहां है माधवनल अरे निलज्ज मेरे सन्मुखसे भागगया (यह कहता हुवा उठकर बैठगया) देखेतो देवी सान्मे खडी है (देवीको देख चरणोंमें शिरनवाय यह कवित्त पढने लगा).

कवित्त

बैरीझुंड मुंडमुंडलुंडसे भरनकुंड प्रबलप्रचंड
मुंड सुंडसुंडखंडिका। स्वपक्षपक्षरक्षिणीविप
क्षपक्षयाक्षिणी जासंगलक्ष्यक्षिणी विपक्षप
ण्डदण्डिका। दासहितकारिकासुदासदुखदारि
का अदासगणमारिका प्रसादकीकरण्डिका।
हिमगिरिदारिका शिवाई अंगधारिका औदेव
परिचारिका शिवन्तुदातु चण्डिका ॥१॥
असुरबलदारिणीस्वबलभलभारिणी सक
लखलनारिणीहिमाचलकी बालिका। चु
गुलकुलमारिणीविपुलरिपुहारिणीवरसिंह
चारिणीअनाथनकीपालिका। कुटिलविदा
रिणीभवाम्बुपारतारिणी औभक्तमनसारि
णीहे रुष्टपुष्टघालिका। दिगम्बर बिहारिकीश
मनभयवारिणीस्वदासहितकारिणीपुनात
मातकालिका ॥२॥

यह कह गिरगिराकरचरणोंपर गिरपडा.

माधो०-देवीकादलदेख शिव शिव पुकारा हे शंकर हे शशि
शेखर हे त्रिशूलपाणि हे त्रिपुरारि हे मकरध्वज भंज
न हे गंगाधर हे पिता यह समय सहाय करनेका है आज
कामसेनके दलकालिका आगई है आप कृपाकर आ
य मेरी सहायकीजे ध्यानके करतेही भोलानाथका
आसनडोला अरु ध्यान छूटा.

शिव०- ध्यानके छूटतेही ध्यान किया हे पार्वती इस समय मेरे
पुत्र माधवनलपर कुछ भारी भीर पड़ीहै जो मेरा स्मरण

किया इस्से अव अपने आत्मजकी चिंतामेटनी चाहिये

पार्वती०-हे नाथ आपजायंगे वा वीरभद्रको भेजोगे.

शिव०-हे चंद्रानने मेरे जानेकी क्या अवश्यकताहै वीरभद्र ही सबकाममें चतुरहै.

पार्वती०-अच्छा महाराज जोइच्छा.

शिव०-वीरभद्र अभीवारहगण अरु वीस सहस्र सेना संगले वहुत शीघ्र कामावती नगरीमें जाय माधवनलकी सहायकर.

वीर०-जो आज्ञा मैं अभीजाकर कामसैनका विध्वंसकरे डालताहूं गया.

दूत०-उत्तर दिशाकी ओरदेख महाराज सोचनकी जो वहदेखो शिवसेना काली काली घटासी उमडी चली आती है वीरभद्र जटाजूट वांधे तनपर भस्म चढाये भांगधतूरा खाये कानोमें सर्पाकार कुंडल अरु वृश्चिकाकारमुद्रा ललाटपर लाल चंदनका त्रिपुण्ड लगाये शिरपर सर्पोंका मुकुट सजाये सेतपीतनागोंका उपवीत गलेमेंडाले वाघम्बर ओढे मुण्ड माल घाले काले काले व्यालोंका हारहिये त्रिशूल पिनाक खप्पड झोली लिये महिषपर सवारी किये लाललाल नेत्र करे भयंकर वेषधरे महाकाल विकरालरूप वनाये भूतप्रेत पिशाच गणादिकी वीस सहस्र सैना सजाये मानो महा प्रलय करनेको वारह गण अत्यन्त विपरीति भयानकरीतिसे इसभांति गाते वजाते भूत प्रेतोंको नचाते धूमधाम मचाते धूरि उडाते चले आतेहैं इस भयंकर सैनाको देख कौन ऐसा धीर्यवानहै जो भय भीत नहो वातकी वातमें वीरभद्रसे

ना समेत माधोनलके दलमें आपहुंचा देखातो सामने दे
वीकी सेना भी सजी खडीहै.

माधो०- शिव दल देख प्रसन्न हो हे भ्रातृगण इस समय वि
ना आपके कौन रक्षाकरने वालाहै आप आगये अब
मेरे मनको धीर्यबंधा एक देवी क्याअबसहस्र देवीभी
आ जाँयतो कुछ संशय नहीं.

दूत०- महाराज आज बडा घोर युद्ध होगा उधरतो कामसेनने
देवी बुलाई है अरु इधर माधवनलकी सहायको शिव
सेना आईहै दोनों ओर युद्धके बाजे बाज रहेहैं शूरवीर
रावत अस्त्र शस्त्र साज रहेहैं अधीर कायर खेतछो
ड छोड भाज रहेहैं भूत प्रेत पिशाच महाकाल समगा
ज रहेहैं सदा ऐसेही वैसोंसे काम पडाहै अबतक वीर
कोई नहीं मिला जो तुझको बलका बडा घमंडहै तो मेरे
सन्मुख आ अरु वीरोंके बलकायु नद देखा चाहेतो
धर्मयुद्ध कर एकसे एकका जोड मिलामदनादित्यनेभी
इसबातको स्वीकार कर लियाहै.

परमेश्वर आज कुशल करे महाराज आज दूसरा
महा भारत है। वह भारत तो कानोहीसे सुनाथा परंतु
यह भारत सदृष्टः-

इधर महाकालरूपवीरभद्र उधर महाविकरालरूप कालिका
इधर महाबलशाली माधवनल उधर महाराजकुमार मदनादित्य
इधर महावीर वज्रनाभ उधर रावत रणेंद्र.
इधर महामल्ल मेघडम्बर उधर बलवंन दलथम्भन.
इधर बलवान अरिमर्दन उधर बलीवज्रायुधा.
इधर योधा युधाजित उधर बलीष्ट दीर्घबाहु.

इधर सावंत शत्रुनाशक उधर महापुरुषार्थी दन्तवज्र

इस भांति योधाओंके जोड मिलाये गये हैं दोनोंद
ल तुले खडे हैं !

रा॰वि॰- फिर जाकर देख अब क्या होरहाहै गया

दूत॰- आकर पृथ्वीनाथ जब देवीने त्रिशूल सँवारा अरु
काल भैरव ललकारा अरु योगिनी खप्पर लेले मुंह फै
लाये खाऊं खाऊं करती शिवसैनके ऊपर दोडीं उस
समय प्रलय दिखाई देती थी.

इधर वीरभद्र महाकोपहोकर अग्निबाण छोडने ल
गा देवीके सबदलमें हाहाकार मच गया लगीं योगि
नीजलने जहां तहां अनलकीडीगें प्रज्वलित होगईं
जिधर देखो उधर ज्वालाहीज्वाला सब सेनामें हाला
चाला पडगया लगे भूत प्रेत योगिनियोंके पीछे तालीपी
टने पिशाचोंसे पीछा छुटाना भारी पडगया देवीने अप
ने दलकी यह दुर्दशा देख नेत्रोंसे जलधारा बहाय सब
हाय हाय मिटायदी अरु फिर त्रिशूल लेकर के वीर
भद्रका दल ऐसे काटडाला जैसे किसान खेतीको काट
काट तिरछाडालदेहै ऐसे सब सेनाका बिछौनासाबि
छादिया मानो प्रलय आगई.

वीरभद्रने जानाकि अब ठिकाना नहीं महाक्रोधितहो
भूत प्रेतोंको आज्ञादीकी योगिनियोंके खप्पर फोड फोड
गर्दन मरोड मरोड शिर तोड डालो एकको जीता मति
छोडो आज्ञा पातेही लगे वीर योगिनियोंको मार मार भ
गाने अरु खप्पड चटकाने अरु देवीके दलको ठिका
ने लगाने फिरतो ऐसी त्राहि त्राहि मचीकी उससमय

अपना धिराना कुछ नहीं दृष्टि आताथा कभी उधरहार कभी इधर हार योगिनी अरु भूत प्रेत परस्पर ऐसी मारामार कर रहेथे मानो होली खेल रहेहैं रुधिरने सबव स्त्रभरंग रहेहैं रंगके बदले रक्तके पिचकारे चल रहेहैं हाय हाय मार मार गानेका शब्द सुनाई देताहै सबकेमुखपर रुधिर गुलालसा दिखाई दे रहाहै गोले कुमकुमेसे उछल रहेहैं लडाई क्या है मानो रुधिरकी नदीपर बुढवा मंगल कामेला होरहा है

कवित्त

लोथिनसे लोहूके प्रवाह चले जहांतहां मानो
गिरन्हगेरूके झरनाझरतेहैं॥श्रोणितसहित
घोरकुंजरकरारे भारे कूलतेसमूलबाजिवि
टपपरतेहैं सुभटशरीरनीर चारीभारीतहां
शूरनउछाहक्रूरकादरडरतेहैं फेकारिफेकारि
फेरुफेरुफारिफारिपेटखात काककंकबाल
ककोलाहलकरतेहैं ॥१॥
ओझरीयझोरीकांधेआंतनकेसेलाबांधेमूं
डके कमंडलुखप्परकियेकोरिके।योगिनि
जमातजारिझुंडबनीतापसीसीतीरतीरबै
ठीसीसमरसरिखोरिके।श्रोणितसोंसानि
सानिगूदाखातसतुवासेप्रेतयकपियत ब
होरिघोरिघोरिके।रणमेंबेतालभूतसाथ
लियेभूतनाथहेरिहेरिहंसतहैंहाथजोरिजो
रिके ॥२॥

दक्षिण द्वारपर युद्धाजित अरु शत्रुनाशक दीर्घबाहु

अरु दंतवज्रसे संग्राम कर रहेहैं यह चारो वीर कैसे रण धीरहैं मानो भीमजरासंध पूर्वकी ओर मेघडम्बर वज्रनाभ रणेंद्र अरु दलथंभनसे समरकर रहेहैं यह चारो सावंत ऐसे वलवंत हैं जैसे मेघनाद हनुमंत अत्यंत वलवान थे उत्तर दिशामें अकेला अरिमर्दन वज्रायुधसे युद्ध कर रहाहै यह दोनों योधा महावल शाली हैं मानो सुकंठ अरु वाली पाली वद वद लडरहे हैं.

दोहा- गज कहूं केसन्मुरवलरैं रणजूझेंअनसोग
शूरवीरगणियेसोई अपसर व्याहनयोग

चौपाई

अगिनवाण छूटें चहुं ओरा। चौंकिपरें हाथीअरुघोरा
दुहुंदिशिराग दुंदभी वाजें। कायरडरें सुभटरणगाजें
चटकें धनुषवाण जब छोडें रवायँ वाण उरसुरवनहिंमोडें
लरहिंवीर ढूंढें गजदंता। अम्वारीचढिजाँय तुरंता
शत्रुशीशकाटहिंक्षण माहीं नेक शंकउरमानत नाहीं
लरहिंमरहिंउरशंकनमानें लिये फिरेंकर लालकमानें
चलें चक्र अरु छुरीकटारी लरहिं सुभटरणभूमिमझारी
क्षणयक धनुषवाणसे लरें पुनिउठिमार रवडगकीकरें
वरषे लोह उठे झनकारा। योधाकरहिंरवड्गकीमारा
रावतसे रावतजो लरहीं एकहिमार एक महिपरहीं
मारें रवडगउतारें मुंडा फरफराहिंधरणी परसंडा
शूर जूझजे महिपर परहीं तेहूमार मार उच्चरहीं.
लरहिं कवन्धदोऊ दलमाहीं निर्भय जुटतडरतजियनाहीं
अंगसेलनिकसेजोपारा दुहुंदिशिचलें रक्तकी धारा
शूर समरमें करनी करहीं घायल घूमघूममहिपरहीं

चांके शूरवीर जे भारी। ते गजकुंभ न हने कटारी
झरें खडग टूटें तरवारी। ते फिर कादहिँ छुरी कटारी
टूटहिं सुंड होहिं मुख भंगा। जनु पर्वत ते गिरहिँ भुजंगा
गज गयंद हय जहँ तहँ परे। जनु धरती पर पर्वत धरे
चंडे वडे राव तरण भारे। गजके दंत उखार नहारे
दुहुँ दिशि सबल अबल नहिं कोऊ। तजैं वीर समा समदोऊ
योधा शस्त्र घात जब करहीं। हीसैं हय हाथी चिंघरहीं
लरहिं एक ते एक नहारे। धनु ले तान तान शर मारे
वीर विषबुझे शर संहारें। रणमें तक्षकसे फुंकारें
शूर सिंह सिंहिनिके जाये। करें युद्ध न हिं हटहिं हटाये
शूर सुभट जे छुरियन लरहीं दोऊ जूझ धरणि पर परहीं
जूझें शूर परहिं भुइँ सेजा। लेहिँ योगिनी काढि कलेजा
भरे रक्तके कुंण्ड अपारा। मानो अहिरावतिकी धारा
तहां अन्हात भूत वैताला। डाल गले सुंडोंकी माला
भूत पिशाच नाचतहं करहीं हरहर हर मुखसे उच्चरहीं
भखें मांस अरु रुधिर पियाहीं योगिनि काढि करे जाखाहीं

दोहा

योगिनि फोरें खोपरी जंबुक भखें जु मांस
शूरनकी गति देख कर शूरो होहिँ उदास ॥१॥
शत्रु सैन भागन लगो देखि कठिन संग्राम
बाजा डंका कटकमें जीते शालिग्राम ॥२॥
आठ पहर बांधे रहत तीन तीन तरवार
तिन्ह पुरुषनकी खोपरी खात गिद्ध अरु स्यार
उदय अस्त लो बंध रहीं जिन पुरुषनकी धाक
तिन्हकी आँखें खात हैं काढि काढि कर काक ॥४॥

बडे बडे जे सूरमा धरे मुकुट मणि शीश
पदसे ठुकरावत नहीं तिन्हको तनक सहीश ॥५॥
जे योधा संग्राममें रहे सिंह सम गाज
पाँव पसारे ते परे समर भूमिमें आज ॥६॥
रणेंद्र वज्रायुध वली दीर्घ बाहु बलवान
तिन्हके उरकी अंतडी खैंचें गीदड स्वान ॥७॥
जो जो योधा युद्धमें नामी अरु विख्यात
कागा तिन्हके मांसको नोच नोच कर खात ॥८॥
वीरोंमें जे वीरवर गिने जात दिनरात
तिनकी आज मसानमें कोउ न बूझत बात ॥९॥
जिनके सन्मुख अपसरा करत नित नये नाच
तिन्हके शिरकी गेंद कर खेलत भूत पिशाच ॥१०॥
जिन सूरोंका समरमें नाम सुनत घवरांय
तिन्हके शिरको पांवसे ठुकराते घिनयांय ॥११॥
विजय आपके नामसे भई आज महाराज
जय जय जय योधा करत समर भूमिमें आज ॥१२॥
सेलधमाके जे सहैं करें खडगकी मार
सूरा तेई सराहिये सहैं लोहकी झार ॥१३॥

पश्चिमकी ओर महापराक्रमी माधवनल अकेला मदनादित्यके सन्मुख संग्राम कर रहाहै अरु दोनों ओरसे वर्षा हो रहीहै अरु वीरोंके शरीरोमें चलनी केसे छिद्र दृष्टि आतेहैं जब लडते लडते संध्याकाल होगया तब माधवनलने क्रोधमें आन एक बानतान कर ऐसा मारा कि मदनादित्यका शीश धडसे कटकर कटकसे बाहर अलग जा पडा झट वीरभद्रने उठायके लाशपर

महादेवजीके पास वगदायदिया देवी शीशके पीछेग ई माधवनलने कवन्ध छीन आपके दलमें भेजदिया कामसेनकी सेनामें भाजड पडगई उनके पांचोसेना पति मारेगये कामसेन रणभूमि छोड भागगया देवी की सेना वीरभद्रने भगादी आप केलाशको चला गया सबदलमें आपके प्रतापसे आनंदके बाजे बाज ने योधाअरु यूथप किलकारी मारमार पुकार पुकार आपकी जय बोल रहेहैं (अरु शस्त्र खोल खोल अप ने अपने डेरेपर धरतेहैं अरु यवनिका पतितहोतीहै

इतिश्रीमाधवनलकामकन्दला नाम नाटक शालि ग्राम वैश्यकृत सप्तमो अंक समाप्तम् ॥७॥

आठवां अंक

कामसैनके डेरे

कामसेन संग्राममें सब परिवार का मरण सुन विलाप करताहै। अरु मंत्री कामसेनको सैन विहीनमन मलीन देख समझाताहै।

मंत्री०- महाराज वीरविक्रमादित्य बडा बलवान दयानिधान राजाहै। उनसे सन्धिकरिके राज कुमारकी लोथले लीजे अरु कामकन्दलाको उनकी भेटकरदीजे वहवीरों से अमृत मँगाय अभी तुम्हारे पुत्रको जिवाय देंगे अरु कुंवर मदनादित्य नहीं जियातो आपके हृदयका दाह जीवन पर्यंत नजायगा सबसंकोचको त्याग क्रोधकी आग को शांतिकर दोनों हाथ बांध दांतोंमें तृणदवाय कामकन्दलाको आगेकर बेरवटके राजा विक्रमादित्यके क

टकमें चले जाओ वह पूर्ण प्रतापी सब भांति आपका आ
दर सन्मान करेंगे आप कुछ चिन्ता न करें उनका नाम
पर दुख हरण आनंद करणहै उनके चरणोंकी शरण
लेना तुमको परमानंद दायक है.

राजा०- मंत्री तुम्हारे कहनेसे मुझको अग्रह नहीं परंतु बडी
लज्जाकी बातहै इस शरणसे मरण उत्तमहै

मंत्री०-महाराज राजनीतिका धर्महै काजके समय लाजको
विसारदे.

राजा०- वह भीतो समयथा दूतको पठकार युद्धको तय्यारथा
अब उनके सन्मुख नेत्र कैसे होसक्तेहैं.

मंत्री०-महाराज वह समय वोहीथा यह समय येहीहै कभी
नाव गाडीमें कभी गाडीमें नाव सदा एकसे दिन नहीं र
हते.

राजा०-मुझको तुम्हारा कहना स्वीकार है.

मंत्री०-अरे बसीठ.

बसी०- हां महाराज क्या आज्ञाहै.

मंत्री०- जा अभी कामकन्दला को बुलाला.

बसी०- अच्छा महाराज अभी जाताहूं (गया).

मंत्री०-यह बात और कहदेना सहेलियोंको संगलेती आवैदू
तगया

बसीठ०- हे कामकन्दला सोलह सिंगार बत्ती सआभूषण
सज शीघ्र सिधारिये तुमको आज महाराजने बुला
याहै

काम०- महाराजकी आज्ञा शिर आंखोंपर मैं अभी चलतीहूं

बसी०-महाराज कामकन्दला आगई

काम०- स विनय हाथ जोरिकर हे अवनीश क्या आज्ञा है.

राजा०- कामकंदला हमारे संग चल हम राजा वीरविक्रमादित्यका दर्शन करने चलते हैं

काम०- मुझको चलनेसे क्या आन है में अपने धन्य भाग्य समझती हूं । आपहीके द्वारा राजा बीर विक्रमादित्यका दर्शन हो जायगा.

राजा कामसेन मंत्री अरु सेनापतिको संग लिये कामकंदलाको आगे किये राजा बीर विक्रमाजीतके पासको जाते हैं अरु यवनिका गिरती है

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक प्रथमो गर्भांक सम्पूर्णम् ॥

दूसरा गर्भांक

स्थान राजा बिक्रम का कटक

कामसैन राजा वीर विक्रमाजीतके कटकमें जाताहै अरु दूत महाराजसे जाकर कहताहै

दूत०- पृथ्वीनाथ राजा कामसैन प्रधान सेनापति संगलिये का मकंदलाको आगे किये आपसे मिलनेको आताहै

विक्र०- अच्छा बुलाओ

रा०का०- हे कृपासिंधु दीन बंधु

आपकी मैं शरणतकिके आया। तुमको ईश्वरने राजा बनाया॥ मुझको अभिमान था दिलमें भारी, है न मुझसा कोई तेजधारी ऐसा अभिमान दिलमें समाया। तुझको ईश्वरने राजा बनाया ॥१॥ जबकि सब दलकटा अरु मैं हारा

मेरे सुतको भी माधोने मारा। विधिने सब गर्व मेरा घटाया। तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ २ ॥
मेरा अपराध कीजे क्षमा अब। मैं शरण हूं शरण हूं शरण अब। मैंने जैसा किया वैसा पाया तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ३ ॥ कृपा हे जगतपति इतनी कीजे। मेरे बेटेको जीदान दीजे पहिले नलको भी तुमने जिलाया ॥ ४ ॥

विक्र०-मति करो शोच अरु फिक्र प्यारे। मैं जिला दूंगा सुतको तुम्हारे। अब न समझो तुम अपना पराया ॥ तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ५ ॥
मित्र तुमको न चहिये था ऐसा। विप्रके संग करा काम जैसा। उस्की प्यारीको तुमने छुटाया तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ६ ॥ जब कि माधोको तुमने निकाला। उस्का दुख देख दिल मेरा हाला ॥ मैं उसी वक्त दल ले सिधाया ७
जो न नलको तुम इतना सताते हम न हरगिज यहां चढिके आते। सारा झगडा तुम्हींने मचाया। तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ८ ॥
जो कुछ होनी थी वह सब हुई अब शीघ्र दोनोंकी शादी करो अब। जिस लिये रंज इतना उठाया। तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ ९ ॥
दोष इसमें नहीं कुछ तुम्हारा। होनीसे कुछ न चलता है चारा कौन जोने है ईश्वरकी माया। तुमको ईश्वरने राजा बनाया ॥ १० ॥

का०सै०-प्रभु धन धन है महिमा तुम्हारी सुत जियालाज

रवरवोहमारी॥मोहनिद्रासे मुझको जगाया
तुमको ईश्वरनेराजाबनाया ॥११॥

राजा वीर विक्रमाजीत कैलाशपर शिवजीके पास वीरों को भेज मदनादित्यका शीश मँगाताहै अरु कबंधसे जोड अमृत मुखमें टपकाताहै अरु मदनादित्य किधरहै रे माधवनल किधरहै यह कहता हुवा उठकर बैठजाताहै विक्रमको अरु अपने पिताको एक ओर बैठादेख मनमें लजियाताहै अरु दोनों हाथ जोड राजाको मस्तक झुकाताहै अरु राजा वीरविक्रमाजीत मदनादित्यकी पीठ ठोक धन्यवाददे उठाताहै अरु माधवनलको बुलाताहै अरु दोनोंका परस्पर मिलाप कराताहै अरु माधवनल कामकंदलाका दरशन पाताहै अरु वीणा बजाकर यहपद गाताहै.

राग भैरवी

आजसब भयोमेरो मनभायो
ज्योंचकोर आनंद चंदलख रंकमहाधनपायो।
मूरिसजीवन पायमृतकज्यों फूलो अंगनसमायो
नयनविहीनतीनपुरलखके आनंदउरअधिकायो
गूंगाज्यों मिष्ठान खाय करमनही मनमुसिकायो
रोगबिहायपायसुंदर तनज्योंमन हर्षबढायो
ऐसेही आजपाय सुखसम्पति मेरो मन हरषायो
जोजो आनंदहोत चित्तमें प्रगट नजात जतायो
आजविधाता भयोदाहिनो बानकसकलबनायो
धन धन धन नरनाथ आपको सुयश जक्तमें छायो
जानअनाथनाथ मोहिं तुमने भली भांतिअपनायो
मूरिसजीवनलाय लखनको ज्यों हनुमानजिवायो

त्योंतुमनेंमोहिंविप्रजानकै मेराप्राणबचायो
दीनदुरवहरणनामतुम्हारोसबकवियोंनेगायो
शालिग्रामआजमोहिंप्रभुनेसबऐश्वर्य्यदिरवायो

रा० का०- महाराज आपतो सर्व विद्यानिधान अरु बुद्धिवान निकले.

माधो०- पृथ्वीनाथ सब आपहीका प्रतापहै.

रा० का०- हे महाराज मैंने माधोको ऐसा गुणी नहीं जानाथा मेरे नेत्र इनके सन्मुख नहीं होते आपनेभी इनके कारण अत्यंत परीश्रम उठाया परंतु अब मेरे ऊपर कृपा करकेकिंचितमात्र परिश्रम ओरभी उठाना पडैगा.

रा० वि०- क्या.

रा० का०- हे नरनाह मेरे नगरमें चलकर मेराघर पवित्र कीजें अरु माधवनल कामकंदलाका विवाह करादीजे क्योंकि कामकंदला यह दोहा दिनरात पढे करेथी

दोहा

पियप्यारे जादिनमिलै तादिनमनआनंद
बाढेसुरवसबअंगमें कटेविरहदुरवदंद १

सो आज आपके संयोगसे इनदोनोंका मनोर्थपूर्ण होगया अब सब मंगला सुरवियोंको वुलाय नगरमें पान मिष्टान बटवायदीजे।

राजा वीरविक्रमादित्य कामावती नगरीको जातेहैं अरु यवनिका पतितहोतीहै.

इतिश्री माधवनल कामकन्दला नाम नाटक शालिग्राम वैश्यकृत् अष्टमोअंक समाप्तम्.

नवमा अंक

स्थान नगर कामावती

राजा बीर विक्रमादित्य सिंहासनपर बैठेहैं माधवनलका मकन्दलाके फेरे फिर रहेहैं आनंदके बाजे बाजरहेहैं घर घर मिष्ठान बट रहाहै मंगलाचारहो रहाहै कामसेन काम कन्दला माधवनलको समर्प्पण करताहै अरु दोनों रंगम हलमें जातेहैं.

म॰मो॰- हे प्यारी तुमने अपने प्यारेके कारण जो महा कठिन कठिन कष्ट उठायेथे सो आज अपने सब मनोर्थ पूर्ण कर लो अरु अपने हृदयकी तप्त बुझालो क्योंकि तुम्हारे भी तम शय्यापर तुम्हारे नेत्रोंके सन्मुख बैठेहैं नेत्रोंमें जल भरकर हे मनरंजन आपके दर्शनसे मैं कृतार्थ होगई आ ज परमेश्वरने सर्वानंद दिखाकर मुझको सर्वानंदी ब

ना दिया ! अब मुझको संसारमें किसी वातकी कांक्षा नहीं रही अब बारबार आपसे येही वर माँगती हूं मुझको अपने चरण शरणसे विलग नकरना अरु मेरे मनमें येही इच्छाहै जन्मभर आपके चरण धो धोकर चरणामृत पीती रहूं.

कामः-हे प्यारी हमारी भी यही इच्छाहै तुमको क्षण भरको अपने नेत्रोंसे न्यारी नकरूं अपने नेत्रोंके सन्मुख बैठाय दिनरात तुम्हारी बांकी झांकी निहारता रहूं.

दोनोंको एक जगह बैठा देख मदनमोहनी यह भैरवी गातीहै -

भयो मन आनँद लख शुभजोरी
एक ओर माधोनल राजत एक ओर मदनकिशोरी
मानहुँ रतिपति पतिदोउ सोहत लखजेहिचंदलजोरी
त्रिलोकीको रूप विधाता लायो चोरी चोरी
उसी रूपसे माधोनल अरु रची कंदला गोरी २
हे मनोज मंजरी सकल मिल कन्दलपास चलोरी
आज कभी है कोन वातकी आनँद सिन्धु भरोरी ३
कामकंदला नलकी जोरी युग युग सुबस बसोरी
शालिग्राम काम भयो पूरण पूरण योग मिलोरी ४

सबसखीः-हे प्यारी अबतो पांचों घीमेंहै अबतो सब मनोर्थ परिपूर्ण हो गये मन मानावर मिलगया लो अब पारतोषिक दिलाओ.

कामः-हे प्यारी यह सब तुम्हारेही चरणोंका मतापहै मेरी क्या सामर्थ थी जो अपना मनोर्थ सिद्ध करती अरु पारतोषिक क्या वस्तुहै यह तनमन धन सब आपहीकाहै. अब मेरी परमेश्वर से यह प्रार्थनाहै किजेसा मेरा मनोर्थ सिद्ध हुवा ऐसेही तुमको मन भावने सुहावने वर मिलें अरु

तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो अरु वह आनंदसें अपने ने-त्रोंसे देखूं अरु अपने हृदयको ठंडा करूं, यह वात सुन सब सखी हँसि पडती हैं अरु नैपथ्यमें बाजा बजने लगता हे अरु धीरे धीरे यवनिका गिरती है.

इतिश्री माधवनल कामकंदला नाटक शालिग्राम वैश्यकृत नवमो अंक समाप्तम्.

दशमा अंक.

स्थान नगर कामावती

राजा विक्रमादित्य सिंहासनपर विराजमानहैं सचिव सैनप समीप खडे हैं कामसेन अरु माधवनल निकट बैठे हैं

विक्रमा०- तुमको बडा क्लेश हुवा पुत्रका दुख देखना

पडा सहस्त्रों वीर तुम्हारे मारे गये जगत्में दुर्नामता हुई परंतु तुम किंचित् मात्रभी संदेह न करना मैं तुमसे अत्यंत प्रसन्न हूं जो आपकी इच्छा हो सो मांगो.

काम०-महाराजमैं क्या मांगू आपने मुझे ऐसा अमूल्य रत्न दिया जिसका कुछ वर्णन नहीं हो सक्ता पुत्रसे अधिक और क्या वस्तु है सो आपने मेरा दुसह दुःख देख अमृत मँगाय मदनादित्यको जिवाय मुझे कृतार्थ किया इस्से अधिक और क्या वस्तु है जो याचना करूं अब आप मेरे ऊपर सदा अनुग्रह रखना अरु मेरी अज्ञानता पर दृष्टि न करना.

विक्रम०-माधवनल तुमने कामकन्दलाके कारण बडा परिश्रम उठायाथा सो सब मनोर्थ ईश्वरने तुम्हारा परिपूर्ण किया अब जो कुछ कांक्षा आपके चित्तमें हो सो कहिये.

माधो०-हे अवनीपति आपके यहां किस वस्तुकी कमी है तुमको विधाताने ऐसा दाता बनाया है जैसे किसी समयमें दधीचि और दशरथ हुए हैं अरु मैंने जिस कामकन्दलाके कारण घर बार त्याग वैराग लियाथा सो कामकन्दला कामसेनसे आपने मुझको समर्पण करादी अब मेरा कोई मनोर्थ शेष न रहा परंतु एक अभिलाषा और रहगई सो कहते हुए मुझको संकोच लगता है.

विक्रम०- नहीं नहीं तुम निसन्देह कहो मैं सब भांति आपकी इच्छा पूर्ण करूंगा.

माधो०- दोहा.

प्रिया सहित सैनासहित आपसहित नृपराय
लख्योचहतपुष्पावती तातमात के पाय.॥१

विक्रम०-हे माधवनल हमको तुम्हारा कहना सब भांति स्वीकार है.

राजा विक्रम सैना समेत माधवनलके संग जाता है अरु पुष्पावती नगर नियरातांहे अरु यवनिका धीरे धीरे पतित होती हे.

इति श्री माधवनलकामकंदला नाटक प्रथमो गर्भांक समाप्त.

दूसरा गर्भांक

पुष्पावती नगरके चारों ओर राजा वीर विक्रमादित्यका कटक छा रहा हे तोपोंकी बाडै झड रहीं हैं.
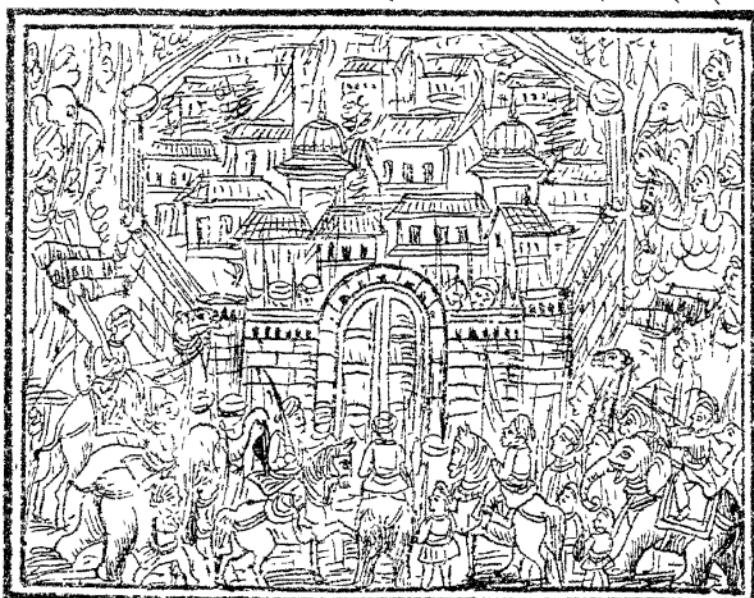
दूत०- महाराज कोई राजा नगरपर चढि आया हे अग-

णित सेना संग है.

गोविन्द॰- हे मंत्री हे शंकरदास पुरोहित जाकर देखो तो कौन नरेश नगरपर चढ आया.

मंत्री॰- पुरोहितजी भण्डारसे उत्तमोत्तम रत्न अरु सुंदर सुंदर हय हाथी सजाकर राजाकी भेट करो अरु जो न मानै तो युद्धका सामान करो.

पुरोहित जाता है.

राजा विक्रम दलमें विराजमान है माधवनल समीप वर्त्ती है साचिव सेनापति हाथ बांधे खडे हैं.

पुरोहित॰- हे महिपालमणि आशीर्बाद धन्य है हमारे राजाका भाग्य जो हमें आपने घर बैठे दर्शन दिया परन्तु अब आपका निमंत्रण है आज हमारे राजाके यहां भोजन करना होगा अरु यह आपकी भेट है.

विक्रम॰- प्रणाम आपने बडी कृपा करी भेटकी क्या अवश्यकता थी बिराजिये विराजिये कुछ संदेह न कीजे केवल हम आपके राजासे मिलनेको आयेहैं.

शंकरदास माधोनलको देख आंखोमें आंशू भर लाता है.

हे द्विजराज इस समय आपको क्या कष्ट हुवा जो नेत्रोंमें नीर भर लाये जो दुःख तुम्हारे चितके अंतर होसो वर्णन कीजै मैं अभी आपकी आशा पूर्ण करूंगा जो धनकी इच्छा हो तो कोशाधीश तुमको करदूं जो पृथ्वीकी कांक्षा हो तो पृथ्वीराज बनादूं जो किसीने क्रुद्ध होकर आपकी ओर देखा हो तो आधा भूमिमें गडवाकर बाणोंसे बिंधवादूं परंतु अपने मनका भेद प्रगट कीजै.

शंकर०-नेत्रोंमें नीरभर कर. **दोहा**

अतिदुरव दुर्लभ मोहिं नृप महापापकोफंद।
कहाकहों दुरवकी दशा भाग्यमोर अतिमंद १

सोरठा

मोरपुत्र सुकुमार उत्तमगुणनिर्दोषअति
ताको देशनिकार दियो चन्द्रमति मन्द नृप

जिस दिनसे मेरा पुत्र घरवार त्याग प्रवासी हुवा है उस दिनसे न नींद है न भूरव है न प्यास है चित्त अत्यंत उदास है परंतु किसी किसीके मुरवसे यह सुना है कामावती नगरीमें हमने अपने नेत्रोंसे देखाथा परंतु फिर सुधि नहीं कि अंतको क्या हुवा.

हे नृपेंद्र यह कठिन कष्ट मुझसे सहा नहीं जाता अरु पुत्र विन मुझे सब संसार अँधियारा दृष्ट आताहै ईश्वर मुझको मृत्युभी नहीं देता अरु इस समय नेत्रोंमें जल भरनेका कारण यह है। यह जो ब्राह्मणका लडका आपके निकट वर्ती है मेरा पुत्रभी इसीकी अनुहार है इसकारण इसके मुरवारविन्दको निहार मुझे अपने पुत्र माधवनलका स्मरण हुवा इसलिये आंरवोंसे आंशू टपकने लगे.

विक्रम०- ब्राह्मणकी यह दशा देरव मंत्री भण्डारीजो ब्राह्मण भेट लाया है पांच लक्ष रुपये अरु सुंदर सुंदर आभूषण मुक्तमाल सहित इस ब्राह्मणको देदो.

मंत्री०- जो आज्ञा महाराजकी.

विक्रम०- माधोनल येही हैं तुम्हारे पिता.

माधो०- हां पृथ्वीनाथ.

विक्रम०- पिताको प्रणाम क्यों नहीं किया.

माधो०- आपके भयसे.

विक्रम०- पिताके चरणोंको दंडवत करो.

माधो०- चरणोंमें शिर झुकाकर हे पिता-

दो० कृपादृष्टिकरदेखिये मैंहीनलअज्ञान
दुखसुखअपने भागको भोगमिलेउमें आन

मेरी जीवनमूल जननीतो आनंद है.

शंकर०- हृदयसे लगाकर हे पुत्र तुझको देख सर्वानंद है आज हमारे भाग्यका भास्कर उदय हुवा आज त्रिलोकीकी सम्पदा मुझको मिली आज मेरा जीवन सफल हुवा आज मेरे धर्मकी ध्वजा फहराने लगी आज मेरा दान पुण्य सन्ध्या तर्प्पण सब फलदायक हुवा आज मेरे वंशके अवतंशने संसारमें प्रकाश किया. **दोहा**

हवनपाठआगमनिगम आजसुफलममजान
प्राणसमानसुजानसुत मिलेउकुशलसोंआन

हे पुत्र इतने दिन कैसे व्यतीत किये.

माधो०- पिताजी मेरा क्या वृत्तांत बूझोहो जब मुझको राजा गोविंदचंद्रने अपने देशसे निकाल दिया तब मैं कामावती नगरमें पहुंचा अरु मनमें विचारा कि राजासे मिलूं

अत्योत्तम नगर निहार मार्गका सब श्रम बिसार राजद्वारपर गया तहां नृत्य हो रहाथा. मुझको भिखारी जान किसीने भीतर न जाने दिया प्रतिहारके कठोर वचन सुन हारकर वहीं बैठ गया. प-

रंतु मैंने कान लगा ध्यान जो किया तो द्वादश मृ-
दंग बज रहे हैं उसमें सात चारके मध्यमें जो मृ-
दंगी मृदंग बजा रहा है उसका अँगुठा मोमका है.
मैंने पोरियेसे कहा यह राजाभी मूर्ख है अरु इ-
सकी सभाभी मूर्ख है जिने ताल स्वर पर्यंतका
भी ज्ञान नहीं सातचार के बीचवाले मृदंगीका अ-
गुष्ठ मोमका है प्रतिहारने सब वृत्तांत राजासे
कहा. राजाने मृदंगीको बुलाकर जो देखा तो अं-
गुठा यथार्थ मोमहीका है फिरतो भूपने मुझको
बुलाकर बडा आदर सन्मान किया अरु उच्चासन
बैठनेको दिया अरु सुंदर सुंदर वसन आभूषण
पहनाय एक लक्ष रुपेयेका पारितोषिक मुझे दिया।
मेरी चतुराई देख कामकन्दलाने ऐसी अद्भुत काम-
कला दिखाई उसकी चतुराई वर्णन करनेको मैं
असमर्थ हूं. परंतु उसकी महिमा राजा अनारीनें
न विचारी.

मुझको जो कुछ राजाने पारितोषिक में दिया
था मैंने उसी समय उस चातुर पातुरको समर्पण
किया अभिमानी राजाने तामस करके मुझे नगरसे
निकाल दिया.

उसी समय मन कामकन्दलाकी भेटकर इसदेहने
बनकी राहली दोहा

निशिवासर बासर निशा चितविपरीति निदान
चलतबसततरोवतहँसत्त पुरउजेननिथरान ॥१॥
सो० जबकृशभयो शरीर तबशिवकेमंदिरगयो

भईविरहकीपीर तीर तुल्य दोहालिखो २॥

उस शिवालयमें राजा विक्रमादित्य नित्य दर्शनके लिये आतेथे दोहा देख मंत्रीसे कहा उस वियोगी को दोही घडीमें मेरे पास लाओ

दोहा

यहसुन मंत्रीदूतसब सैनप अरु कुतवाल
ठौरठौर ढूंढनलगे वृद्ध युवा अरु बाल ॥१॥

जब मुझको ज्ञानमती भानमती राजाके पास लाई राजाने मुझको नमस्कार कर अति आदर सन्मान से कुशल क्षेम बूझी अरु कहा तुमको किस बात- की इच्छा है अरु किसके विरहमें अपनी दुर्दशा कर रक्खी है आद्योपांत सब वृत्तांत सुनाइये पर- मेश्वर तुम्हारा सब मनोरथ पूर्ण करेगा.

जब मैंने अपनी सब व्यथा राजाको सुनाई तबरा- जाने चित्तमें अत्यंत खेदमान दूतको बुलाय उसी समय कामसेनके पास भेजा परंतु उस अभिमानीने एक न मानी निदान राजा विक्रमादित्य नव्वेलक्ष सैनाले कामसेन पर चढ गये जब भारी युद्ध मचा तब

दो० कामसेनसंग्राममें सबपरिवार जुझाय
राज्यछाडि तृणदन्तगहि परेउआयगहिपाय

सो० विक्रमदयानिधान कीन्हताहिसत्कारबहु
मोमनवांछितदान दियोबहुतसन्मानकरि

अब मुझको अपने संगले यहां पहुंचाने आये ऐसे महिपाल दीनद- यालु कहां प्रगट होते हैं जिनके प्रतापसे आपके चरणकमलका दर्शन पाया धन्य विक्रमादित्यसे दानी जिन्होने आप पुत्र दान

दिया है पिता यह सब कथा संक्षेप मात्र तुमको सुनादी.

विक्रम०- शंकरदास तुमने अपने पुत्र माधवानलको पाया.

शंकर०- मनमें आनंद मान यह सब आपहीका मनाव है.

विक्रम०- तुम्हारे राजाका क्या व्योहार है किस भांति देश-का विस्तार है कितनी सैना है मंत्री कौन वंशका है कैसा चतुर है प्रजापर कैसी प्रीति है कैसी राजनीति है सब रीती वर्णन कीजे.

दो० कहोसकलसमझायद्विज,जोकुछराजस-माज। धर्मपंथपरकार्यको कैसीनयननलाज १

शंकर० (मनही मन) देशको अरु सैनाको अरु मंत्रीके कु-लको राजाने क्यों बूझा (प्रगट) हे नरेंद्र देश सुभट कुल सब पूर्ण है सैना अरु सैनप ऐसे रणहैं आजलों उनकी पीठ किसी शत्रुने नहीं देखी मंत्री ऐसा चतुर अरु प्रवीन है राजकाजका सब भार अपने शिरपर धारणकर रक्खा है राजनीतिमें अत्यंत कुशल है परंतु मंत्रीके मंत्र विन राजाने माधवानलको देशसे निकाल दिया उस्का फल उपस्थित है.

दोहा

तुम प्रभुपूरणप्रणकरण हरणसकलदुखदंद ।
वकसोमोहिंनरेंद्रतुम जोकुछचूकसुचंद १

विक्रम०- हे शंकरदास मेरा नाम परदुःख दलन है मुझ-से किसीका दुःख देखा नहीं जाता तुम्हारे कहनेसे मैंने चंद्रका अपराध क्षमा किया अब तुमजा-कर सब वृत्तांत चंद्रको सुनादो अरु समझादो ऐ-सा काम फिर कभी भूलकर न करना माधवानलके

कारण हम यहां आये हैं अब चंदको अरु माधवा नलको मिलाना चाहते हैं माधवानलका हाथ चंदके हाथ दे हम अपने देशको जायंगे. अब आप विलंब न कीजे चंदको यह उपदेश दीजे

दो० मिलिये माधोविप्रसे कीजे पूरणप्रीति
बहुरि न ऐसी कीजिये द्विजके संग अनीति

शंकरदास जाता है अरु गोविंद चंदकी सभामें आता है अरु यवनिका धीरे धीरे पतित होती है.

श्री द्वितीय गर्भांक समाप्तम् ॥२॥

तीसरा गर्भांक

स्थान नगर पुष्पावती

राजा गोविंद चंदकी सभा लग रही है राजा और मंत्री शोचके समुद्रमें डूबे पडे हैं शंकरदास आताहै अरु स्वस्तिवचन पढकर सुनाता है.

मंत्री०—है तो कुशल.

शंकर०—आनंद! आनंद! परमानंद! कुछ भय नहीं सोच सं-
कोच दूर कीजे.

मंत्री०—कौन राजा है कैसे आना हुवा.

शंकर०—महाराज जब तुमने माधवानलको अपने दे-
शसे निकाल दिया तब माधवानल कामावतीमें
पहुँचा वहां माधोका नन कामकन्दलासे लग गया
कामसेननेभी उसे अपने नगरसे निकाल दिया मा-
धोने विक्रमादित्यको जा जाचा वीर विक्रमादित्यने
नव्वे लक्ष दलले कामावत्ती नगरीपर चढ गये अ-
रु दोनोकी कामना पूर्ण की यह वोही राजा वीर वि-
क्रमादित्य हैं माधवानलके पहुंचानेके लिये यहां
आये हैं इस विषयमें मंत्रीसे मंत्र लीजे अरु जो
जीमें आवैसो कीजे.

गोविन्द०—कहो मंत्री क्या करना उचित है.

मंत्री०—जो विक्रमादित्य माधोके उपकारी हैं तो अपना
परम हितकारी समझो जो माधो विरहरूपी समुद्र
में वहा जाताथा आपने उसे डुबोय कलंकका टी-
का अपने माथेसे लगायासो राजा विक्रमादित्य
आपका कलंक धोनेके लिये बिरहके समुद्रसे मा-
धोनलको निकालकर आपके पास लाये हैं इनसे
अधिक मित्र और कौन होगा.

सो अब आपको उचित है कि महाराज वीर वि-
क्रमादित्यका दर्शन कीजे अरु जगमें यश लीजे जि-
सने हमारे साथ ऐसी भलाई की उस्से हम बुराई

कैसे करें. दोहा

जोपरकारजकेलिये रहतसदालौलीन।
तासोंपलपलमिलनको विधिहरिहरआधीन॥

जो ऐसे पूर्ण प्रतापी घर बैठे मिलनेको आवें तो अपना धन्य भाग्य जानिये.

दो० मंत्रीसज्जनसुभटवर पुरोहितसाहसंयान
सबकोलेकरसंगमें मिलिये कृपानिधान॥

गोविन्द०- जो सबकी इच्छा. दोहा

जोसामग्रीचाहिये लीजे शीघ्र मँगाय
सैनसुभटसंयुतसकल मिलेंभूपसेजाय
सबदललेहुसजाय लालरतनकेथारभरि
दुंदभिशंखबजाय चलोभूपसेमिलनको

दूत०- महाराज गोविंदचंद आपसे मिलनेको आता है

विक्रम०- आनेदो कुछ सन्देह नहीं.

गोविन्द०- हाथ जोड कर मैं आपकी शरण हूं धन्य है मेरा भाग्य जो आपने दर्शन दिया अब मेरा अपराध क्षमा कर मुझको कृतार्थ कीजे.

विक्रम०- पीठपर हाथ धरकर हे भ्रातृ कुछ आप अपने मनमें संकोच न करना तुम मुझे छोटे भाईकी सम तुल्य हो परंतु परकार्य अरु नीति धर्ममें नित्य चित लगाना अरु माधोको मेरे समान जानना—

दोहा

थोरकहासमझोअधिक तुमजानतसबगाथ
माधोनलको गुरु समझ लेहुहाथमेंहाथ १

अब आप इसके ऊपर दयादृष्टि रखना अरु हमको

बिदा देना.

गोबिन्द०- महाराज मैं तो माधोंके भी चरणोंका दास हूं अरु आपके भी चरणोंका भी दास हूं दयाकी दृष्टि तो आपकी चाहिये.

नेत्रोंसे नीर वहाकर दोहा

लघु बाणी मम तुच्छ बुध तव यश अकथ अपार
शेषसहस्र मुखसे जपें तौहु न पावहिं पार

विक्रम०-हृदयसे लगाकर हे माधोनल नित्य प्रति तात मातकी सेवा करना गो ब्राह्मण साधु संतकी रक्षा रखना अपने धर्म कर्मसे सावधान रहना जो कोई नवीन वार्ता अरु हमारे योग्य कार्य हुवा करें सो लिखते रहना परंतु मायाके गर्वमें आन परमेश्वरको मति भूल जाना अब हम अपने नगरको जाते हैं फिरभी कभी दर्शन देना राजा वीर विक्रमादित्यका गमन.—

माताके निकट माधवानल अरु कामकंदलाका प्रवेश.

माधो०-चरणोंमें शिर झुकाकर हे जननी तेरे पदारविंदका दर्शन हमारे भाग्य में लिखाथा सो ईश्वरने करा दिया इस समय मेरा चित्त अत्यंत आनंद है अरु यह दासी तेरे चरण सरोज सेवनके निमित लाया हूं.

माता०-नेत्रोंसे अस्रुधारा वहाकर गद गद कण्ठहो अरे माधवानल मेरे जीवन प्राण तू मुझको अकेला छोड कहां चला गया था षोडश वर्षसे पुकारते पुकारते परमात्माने आज मेरी टेर सुनी.

कन्दला०- चरणोंमें शिर धरकर हे प्रिय जननी इस

हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ विक्रीको तयार हैं.

नाम	रु०	डा० म०
न्यायप्रकाश परमोत्तमापिठ्ठलानंद स्वामीकृत	८	१
योगवासिष्ठसार ६ प्रकर्ण	२॥	।;
योगवासिष्ठ छोटा गुटका उत्तम कागद और अक्षर बडा	१।	⌐
तुलसीदासकृत रामायण बडे अक्षरका अति उत्तम	५॥	१
तुलसीकृत रामायण क्षेपकसह टाईपका	३	॥।
व्रजविलास मोटा अक्षरसें छपता है	५	१
प्रेमसागर टाईपका बडा २ रु० बारीक	१।	⌐
अर्चावतार वैभवस्तोत्र भजन	।।	—
चाणक्य नीति भाषा टीकादोहा सहित जिल्द	॥=	⌐
तुलसीदासकृत दोहावली रामायण	।—	—
स्वरोदयसार	⌐	॥
शनिकथा राघवदासकृत	।।	॥
शनिकथा कायस्थकी	⌐	॥
भक्तमाल वा हरिभक्तिप्रकाशिका	४	॥।
विचारसागर सटीक	२	।।
सुंदरविलास मूल टैपका ॥— सटीक	२।	—
विदुर प्रजागर	॥।	—
आत्मपुराणभाषा	१२	१।
एकादशस्कंध भाषा	५।	।—
भक्तमाला बडी महाराज रघुराजसिंहकृत	५	॥।।
भक्तिप्रकाश भजन	।।	॥